राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत युवा जागरण का अग्रदूत RNI no. UPHIN45193/24/1/2014

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

जय विजय
मासिक

वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in

वर्ष-१, अंक-१२ लखनऊ सितम्बर २०१५ विक्रमी सं. २०७२ युगाब्द ५११७ पृष्ठ-२४ रु. १०

वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत ले सकता चीन की जगह : जेटली

नयी दिल्ली। वैश्विक शेयर और मुद्रा बाजार में हाल में हुई भारी गिरावट को भारत के लिए अवसर करार देते हुये वित्त मंत्री अरूण जेटली ने गुरूवार को कहा कि आठ से नौ फीसदी की विकास दर के साथ भारत चीन के स्थान पर वैश्विक अर्थव्यवस्था का वाहक बन सकता है।

जेटली ने बीबीसी को दिये साक्षात्कार में कहा कि भारत उन कारोबारियों के लिए पहले ही रेड कार्पेट बिछा चुका है जो यहां निवेश करना चाहते हैं।

उन्होंने कहा कि वैश्विक स्तर पर विकास को गति देने वाले दूसरे वाहकों की जरूरत है। आर्थिक मंदी के माहौल में भारत जैसी अर्थव्यवस्था ८ से ६ फीसदी की विकास दर हासिल कर सकता है और दुनिया भर की अर्थव्यवस्था का सहयोगी बन सकता है।

वित्त मंत्री ने कहा कि भारत निवेश के अनुकूल देश है और निवेशकों को किसी भी कानून के पूर्ववर्ती तिथि से लागू किये जाने से डरने की जरूरत नहीं है। उन्होंने कहा कि भारत में जो लोग कारोबार करना चाहते हैं उनके लिए रेड कार्पेट पहले की डाला जा चुका है। भारत को निवेश की जरूरत है और यह दुनिया का

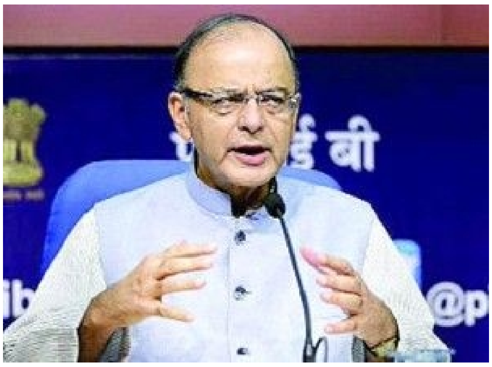

सबसे निवेश अनुकूल स्थान बनने जा रहा है। उन्होंने आश्वस्त किया कि मोदी सरकार कभी भी किसी कानून को पूर्ववर्ती तिथि से लागू नहीं करेगी।

जेटली ने कहा कि वैश्विक मंदी के माहौल में भी भारत बेहतर प्रदर्शन कर रहा है। पिछले वित्त वर्ष में विकास दर ७.३ फीसदी रही थी और चालू वित्त वर्ष में उससे भी बेहतर आंकड़े आने और अगले वित्त वर्ष में उससे भी अच्छी विकास दर की उम्मीद है।

जेटली ने कहा कि हाल का उतार-चढ़ाव भारत के लिए बहुत बड़ा अवसर हो सकता है। चीन की स्थिति में अब बदलाव आ रहा है और उसकी विकास दर ६, १० या ११ फीसदी वाली नहीं दिख रही है। जेटली के बयान के विपरीत रिजर्व बैंक के गवर्नर रघुराम राजन ने बुधवार को बीबीसी को दिये साक्षात्कार में कहा था कि भारत के तीव्र विकास दर हासिल करने के बावजूद वैश्विक अर्थव्यवस्था में चीन का स्थान हासिल करने में बहुत समय लगेगा। ■

भूमि अध्यादेश अब और नहीं

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ३१ अगस्त को रेडियो पर अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में कहा कि सरकार लैंड बिल पर अब और अध्यादेश नहीं लाएगी। लेकिन भूमि अधिग्रहण से जुड़े १३ अन्य कानूनों को २०१३ के भूमि अधिग्रहण कानून के दायरे में लाने का आदेश जारी किया गया है, ताकि विकास कार्यों में तेजी लायी जा सके। प्रधानमंत्री ने कहा कि सरकार किसानों और ग्रामीण इलाकों के विकास के लिए भूमि अधिग्रहण कानून में संशोधन करना चाहती थी, लेकिन ऐसा नहीं होने दिया गया। कई तरह के भ्रम फैलाये गये। किसानों को भयभीत कर दिया गया, पर भयभीत होने की कोई जरूरत नहीं है। पिछले अध्यादेश की अवधि ३० सितम्बर को समाप्त हो रही है।

उल्लेखनीय है कि इस कानून में संशोधन के लिए सरकार विधेयक लायी थी, लेकिन विपक्ष के भारी दबाव के कारण इसे संसद में पारित नहीं कराया जा सका। ■

भारतीय धरोहर को रक्षा कवच की जरूरत : तरुण विजय

लखनऊ। भारतीय धरोहर को रक्षा कवच की जरूरत है। आज वह रक्षा सूत्र मांग रही है। भारत की सीमाएं असुरक्षित हैं। हमारा देश दो परमाणु ताकतों से आक्रान्त है। दोनों भारत में किसी न किसी रूप में आतंक को बढ़ावा दे रहे हैं। विदेशी धन और विदेशी मन का नतीजा है कि आज नक्सलवाद बढ़ रहा है। रक्षाबंधन उत्सव इन सभी चीजों का रक्षा कवच है। यह बातें भारतीय जनता पार्टी के राज्यसभा सदस्य तरुण विजय ने कही। वह शुक्रवार को सरस्वती कुंज निरालानगर में रक्षाबंधन की पूर्व संध्या पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में कही।

उन्होंने कहा कि जब आज से दो हजार साल पहले दुनिया के अन्य देशों के लोग जंगलों में रहते थे उस समय तक्षशिला वि.वि. में ३० लाख हस्तलिखित पुस्तकें थी। यह हमारी ज्ञान साधना का प्रतीक है।

तरुण विजय ने कहा कि जाति के आधार पर हिन्दुओं का विभाजन कलंक है। जिनको आज अस्पृश्य कहा जा रहा है वह सामंत, सिसोदिया चौहान थे। मैला ढ़ोने की प्रथा भारत में कभी नहीं रही। युद्ध में जो हार गये उनसे कहा गया इस्लाम कबूल करो या मैला ढोने का काम करो। उन्होंने अधरों से राम को छोड़ा नहीं, हृदय से धर्म को छोड़ा नहीं।

तरुण विजय ने कहा कि जो समाज दुनिया को

वसुधैव कुटुम्बकम का संदेश देता है आज वह अपने ही समाज के लोगों को अस्पृश्य कह रहा है। अस्पृश्य करना है तो कुरीतियों को बाहर करो। समरसता की भावना पुष्ट करना ही रक्षाबंधन का संदेश है।

भाजपा नेता ने कहा कि आज भारतीय भूषा और चिति पर आक्रमण हो रहा है। घरों से हिन्दी गायब हो रही है। मणिपुर में हिन्दी प्रतिबंधित है। वहां कोई हिन्दी साहित्य नहीं रख सकता। यह भारत में हो रहा है। हिन्दी भाषा के अखबारों में क्लिष्टता के नाम पर अंगेजी रखी जा रही है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता न्यायमूर्ति कमलेश्वर नाथ ने की। इसमें प्रान्त संघचालक प्रभुनारायण श्रीवास्तव, विभाग संघचालक जय कृष्ण सिन्हा भी उपस्थित थे। ■

दूरदर्शन के कुछ कार्यक्रम कर रहे हैं बच्चों को गुमराह

किरण सिंह

आजकल टीवी चैनलों पर कई ऐसे कार्यक्रम परोसे जा रहे हैं जिसका यथार्थ से दूर दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं होता! चूंकि बच्चों का मन कोमल होता है इसलिए वे उसे सच मानकर उन्हीं का अनुकरण करने लगते हैं जिसका दुष्परिणाम कभी-कभी बहुत भयावह होता है! जैसे सुपर मैन को छत पर से छलांग लगाते हुए देखकर उनके अन्दर भी सुपर मैन बनने की चाह उत्पन्न हो जाती है और कभी-कभी वैसा ही करने की कोशिश में अपनी जान भी गंवानी पड़ी है!

इसके अतिरिक्त टेलीविजन सीरियल्स में रिश्तों को जिस प्रकार से खलनायक खलनायिका के रूप में रूपांतरित किया जाता है जिससे बच्चों का कोमल मन उसी रूप में रिश्तों को देखने लगता है और इस वजह से वो रिश्तों को यथोचित सम्मान नहीं दे पाता है यह हमारे भारतीय समाज एवं संस्कृति के लिए अशुभ संकेत है!

इतना ही नहीं इतिहास को भी तोड़ मरोड़कर चटपटा बनाकर दिखाया जा रहा है जहाँ भूत-प्रेत और टोना टोटका को बढ़ावा दिया जा रहा है! जिस पर बच्चे विश्वास कर लेते हैं और उन्हें अपने इतिहास की भी गलत जानकारी मिलती है क्योंकि मस्तिष्क पटल पर सचित्र फिल्मों का असर पाठ्यक्रमों से अधिक रहता है!

अन्त में बात आती है अंगप्रदर्शन और सेक्स की इसकी तो अति हो गई है जब फिल्म के नायक नायिकाएं अंगप्रदर्शन वाले कपड़े पहनते हैं। चूंकि आज के बच्चे तथा अल्पबुद्धि युवा वर्ग उन्हें ही अपना आदर्श मानकर उन्हीं का अनुकरण करते हैं जिसका दुष्परिणाम युवक और युवतियों को भुगतना पड़ता है!

इसलिए परिवार में आपसी सहमति से सबके लिए अपने अपने कार्यक्रमों को देखने के लिए समय निर्धारित करना होगा! तथा हिंसक और उत्तेजक कार्यक्रमों पर घर में प्रतिबंध लगाना होगा! ■

श्रीकृष्ण जन्मभूमि

बिपिन किशोर सिन्हा

पुण्य नगरी मथुरा में चार दिवसीय प्रवास के बाद मैं कल ही बनारस लौटा. प्रवास अत्यन्त आनन्दायक था. मेरी प्रबल इच्छा थी कि अपने नवीनतम पौराणिक उपन्यास 'यशोदानन्दन' की पाण्डुलिपि श्रीकृष्ण-जन्मभूमि में जाकर उनके श्रीचरणों में अर्पित करने के बाद ही प्रकाशक को भेजूं। मैं अपने अभियान में सफल रहा। मैं वहां अपने परम मित्र प्रो. दुर्ग सिंह चौहान जी, कुलपति जीएलए विश्वविद्यालय, मथुरा का अतिथि था। आदरणीया भाभीजी श्रीमती ज्योत्सना चौहान और अग्रज दुर्ग सिंह जी ने मेरे अभियान को सफल बनाने में अपना अमूल्य योगदान दिया। मैंने जो भी पुण्य अर्जित किया, उसके ५० प्रतिशत के वे स्वाभाविक अधिकारी हैं।

जन्मभूमि और श्रीकृष्ण-राधा के विग्रह के दर्शन से मन आनन्द से ओतप्रोत हो उठा, लेकिन उससे सटे मस्जिद को देखकर मन में एक टीस-सी उठी। मस्जिद या चर्च के प्रति मेरे मन में कभी भी असम्मान की भावना नहीं रही है, परन्तु श्रीकृष्ण जन्मभूमि पर निर्मित मस्जिद का इतिहास याद कर मन वितृष्णा से अनायास ही भर उठता है। करोड़ों दर्शनार्थी काशी, मथुरा और अयोध्या में अपने आराध्यों के दर्शनार्थ आते हैं और मेरे समान ही अनुभव लेकर वापस जाते हैं तथा अपने मित्रों, करीबियों तथा ग्रामवासियों को अपने हृदय की पीड़ा बताते हैं। निश्चय ही मुसलमानों ने इस देश के बड़े भूभाग पर लगभग ६०० वर्ष राज किया लेकिन वे हिन्दुओं के हृदय पर एक पल भी राज नहीं कर सके। जबतक काशी और मथुरा के पवित्र मन्दिरों के समीप पुराने मन्दिरों को तोड़कर बनाई गई मस्जिदें वे देखते रहेंगे, तबतक हर हिन्दू के हृदय में एक स्वाभाविक टीस बनी ही रहेगी। मुसलमानों को हिन्दुओं की इस भावना को समझना चाहिए और स्वेच्छा से सुधारात्मक प्रयास करना चाहिए। तभी वे हिन्दुओं का विश्वास जीत पायेंगे और देश में नए सिरे से स्थायी सांप्रदायिक सौहार्द की स्थापना हो पाएगी। ■

दोहे

छाया को देता नहीं, कण्टक वृक्ष खजूर।
जो हैं कुटिल स्वभाव के, रहना उनसे दूर।।
ज्यादा मीठे बोल में, होती झूठी प्रीत।
ऐसे लोगों से सदा, करो किनारा मीत।।
मिलते हैं संसार में, पग-पग पर आघात।
जाँच-परख कर कीजिए साझा मन की बात।।
छोटी-छोटी बात पर, होना नहीं अधीर।
हरदम रहना चाहिए, धीर और गम्भीर।।
चरैवेति सिद्धान्त का, रखना हरदम ख्याल।
जिनमें नहीं प्रवाह है, सड़ जाते वो ताल।।
दगाबाज-मक्कार का, रहता खाली हाथ।
श्रम से अर्जित द्रव्य ही, सदा निभाता साथ।।

-- डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

मुक्तक

काश मुझसे भी कोई ऐसा जतन हो जाये
कि मेरे प्यारे वतन का मन मगन हो जाये
सर झुका दूँ मैं भारत की पावन माटी पर
फिर देश की हर माँ को नमन हो जाये

-- नीरज पान्डेय

कुंडली

कृष्ण-सुदामा की तरह, मिलें नहीं अब मीत
झूठ-मूठ बस स्वार्थवश, करते दिखते प्रीत
करते दिखते प्रीत, जेब जो होती भारी
देख कहेंगे रिक्त, भाड़ में जाए यारी
कह 'पूतू' कविराय, करें मत ऐसा ड्रामा
तोड़ सभी दीवार, बनें हम कृष्ण-सुदामा

-- पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'

कार्टून

यहां सब कुछ संभव है...! -- मनोज कुरील

सुभाषित

आचारः कुलमाख्याति, देशमाख्याति भाषणम्।
सम्भ्रमः स्नेहमाख्याति, वपुराख्याति भोजनम्।। (चाणक्य नीति)

अर्थ- आचरण से कुल का पता चलता है, भाषा से देश का ज्ञान होता है, चाल-ढाल प्रेम को प्रदर्शित करता है और शरीर से भोजन का पता चल जाता है।

पद्यार्थ- मानव का आचार ही कुल को देत बताय।
आगत का स्वागत सदा, देता प्रीति जनाय।।
देता प्रीति जनाय, अन्न खाया बतलावै।
जैसा खावै अन्न, गात वैसा बन जावै।।
कौन देश का व्यक्ति ज्ञान होता उसका तब।
अपनी भाषा बोल पोल खोलै जब मानव।। (आचार्य स्वदेश)

सम्पादकीय

औरंगजेबी मानसिकता कब मिटेगी?

दिल्ली नगर निगम और सरकार ने नई दिल्ली की औरंगजेब रोड का नाम बदलकर अपने पूर्व राष्ट्रपति डॉ अब्दुल कलाम के नाम पर रखने का प्रशंसनीय निर्णय लिया। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने स्वयं ट्वीट करके इसकी सूचना दी। पूरे देश ने इस निर्णय का हार्दिक स्वागत किया।

देश में लेकिन हर मौके पर छींकने वाले कुछ लोग हैं, जिनको यह निर्णय पसंद नहीं आया। इनमें सबसे ऊपर नाम है हैदराबाद के सांसद ओवैसी का। आये दिन वे ऐसे बयान दागते रहते हैं जिनसे मुसलमानों में उत्तेजना फैले और उसकी प्रतिक्रिया में हिन्दू समाज में उनके प्रति घृणा फैले। वे पूरे देश के मुसलमानों के नेता बनना चाहते हैं और इसका सबसे सरल तरीका उनको यही लगता है कि वे मुसलमानों को हिन्दुओं के निकट न आने दें। इसी कारण वे बिहार में भी मुसलमानों में अलगाववाद का जहर घोल रहे हैं।

यह बात नहीं है कि उनको मुसलमानों से कुछ ज्यादा ही प्यार है। अगर ऐसा होता, तो वे भी डा. कलाम के नाम पर सड़क का नाम रखने का विरोध न करते, क्योंकि वे भी तो मुसलमान थे। लेकिन डा. कलाम की तुलना में औरंगजेब को पसंद करने का एक मात्र कारण यह है कि औरंगजेब हिन्दुओं से घृणा करता था, जबकि डॉ. कलाम सभी देशवासियों से प्रेम करते थे। इसलिए मुस्लिम प्रेम के बजाय हिन्दू विरोध ही उनका मुख्य प्रेरक सिद्धांत है। यही औरंगजेबी मानसिकता है।

खेद का विषय है कि यह मानसिकता केवल ओवैसी जैसे नेताओं की ही नहीं, बल्कि भारत के अधिकांश पढ़े लिखे मुसलमानों की है। सोशल मीडिया पर औरंगजेब रोड का नाम बदलने की आलोचना करते हुए अनेक मुसलमानों ने अपने विचार प्रकट किये हैं। इससे उनकी औरंगजेबी मानसिकता की पुष्टि होती है।

याद कीजिए कि जब इस्लामी तालिबानी आतंकवादियों ने पाकिस्तान के एक विद्यालय में घुसकर सैकड़ों बच्चों को गोलियों से भूनकर मार डाला था, तब भारत में प्रत्येक व्यक्ति को उनसे सहानुभूति हुई थी और दुःख प्रकट किया गया था। परन्तु पाकिस्तान में उन बच्चों के पिताओं ने टीवी चैनलों पर खुलेआम कहा था कि हमारे बच्चों को क्यों मारा? इनकी जगह हिन्दुओं के बच्चों को मारना चाहिए था।

इस उदाहरण से सिद्ध होता है कि मुसलमान चाहे पाकिस्तान का हो या हिन्दुस्तान का, उनकी औरंगजेबी मानसिकता में कोई अंतर नहीं है। यह मानसिकता ही देश में साम्प्रदायिकता की जड़ है। अब समय आ गया है कि इस मानसिकता को समाप्त करने के लिए कठोर प्रयास किये जायें। बाबर और औरंगजेब की इन अवांछनीय सन्तानों को या तो सुधरना होगा या फिर इस देश से अपना बोरिया बिस्तर बांध कर जाना होगा। इसके अलावा और कोई विकल्प नहीं है।

-- विजय कुमार सिंघल

आपके पत्र

विविध विधाओं व क्षेत्रों की उच्चस्तरीय सार्थक व सकारात्मक रचनाओं से सुसज्जित घर-परिवार, स्वास्थ्य और बच्चों को सहेजकर निरंतर निखरती हुई पत्रिका के लिए कोटिशः बधाइयां. **-- लीला तिवानी**

'जय विजय' का नया अंक प्राप्त हुआ। उत्कृष्ट पठनीय सामग्री से सुसज्जित अंक अनुपम है। आपको तथा सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई! **-- ज्योत्स्ना शर्मा**

पहली तारीख आते ही बार बार देखती रहती हूँ कि पत्रिका आई या नहीं, और आते ही मन खिल जाता है, सब कुछ हाशिये पर रखकर पढ़ने जुट जाती हूँ। आप कितना कुछ समेटते हैं एक पत्रिका में और सब व्यवस्थित! आनंद आ जाता है। साथ ही नियम से पत्रिका पाठकों तक पहुँचाना आपकी कर्मठता का अद्वितीय उदाहरण है। यह अंक तो अति सुंदर बन पड़ा है। आपको मन से बधाई व शुभकामनाएँ।

-- कल्पना रामानी

बहुत बढ़िया संयोजन... चाय पर लेख बढ़िया... कहानी कविता सब मजेदार! 'आईपीएस हो तो सरकार का काम करो भी बढ़िया'!! **-- सविता मिश्रा**

'जय विजय' का यह अंक भी अत्यन्त मनोहारी है। आपके मार्ग-दर्शन एवं अथक प्रयास से पत्रिका निरन्तर शिखर छूने को अग्रसर है। अनन्त बधाई!

-- उदय भान पाण्डेय

सदैव की तरह एक रोचक अंक. मेरी रचना को भी स्थान देने के लिए आभार।

-- कैलाश शर्मा

'जय विजय' पत्रिका का अगस्त अंक देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इसमें प्रकाशित आलेख, कविता, कहानी, गजल आदि सहृदय सराहनीय हैं। यदि इसी प्रकार आपका अथक प्रयास जारी रहा और रचनाकारों का सहयोग प्राप्त होता रहा, तो वह दिन दूर नहीं जब यह पत्रिका सम्पूर्ण देश में अपना वर्चस्व कायम ही नहीं करेगी, बल्कि बुलंदियों को भी छू सकेगी। **-- अरुण निषाद**

डा. कलाम जी को समर्पित मुखपृष्ठ और श्रेष्ठ रचनायें। बहुत सुंदर अंक। बधाई ! **-- डा. कमलेश द्विवेदी**

पिछले कुछ दिनों से मैं आपकी वेबसाइट का अवलोकन नहीं कर पा रहा, क्योंकि मेरा मोबाइल चोरी हो गया। मैं जानता हूं कि इस बार भी आपने उत्कृष्ट रचनाओं को स्थान दिया होगा। **-- सूर्य प्रजापति**

डा. कलाम पर आपकी श्रद्धांजलि का ढंग खूबसूरत है। सामग्री हमेशा की तरह संग्रहणीय है। बधाई ! **-- देवकी नन्दन 'शान्त'**

अति सुंदर। अत्यन्त आकर्षक छपाई। पठनीय सामग्रियां एक से बढ़कर एक। चाहे वह लेख हो या कविता या फिर गजल। गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा गया है। इसके लिए संपादक महोदय का आभार व्यक्त किया जाना चाहिए।

-- डा. डी एम मिश्र

(सभी कृपालु पत्र-लेखकों का हार्दिक आभार! - **सम्पादक**)

ग़ज़ल

ये दस्तंदाजियां ये करावतें हर लम्स पे जहन का पहरा है
सुरखुरु फिर भी मोहब्बत और जख्म भी बहुत गहरा है
ये कैसी गुरवतें ये चाहते हैं कजा या राज कोई गहरा है
वक्त बदला नहीं न शीशा ए दिल और सख्त पहरा है
ये फानूस से आदमी ये ख्वाओं की जमीं नहीं एक चेहरा है
है रूह जार जार अश्क हो गए आब और वक्त ठहरा है
ये रंगीन महफिलें ये मरहले और है एक गहरा सन्नाटा है
बेजुबान अल्फाज और गमे-जीस्त और सख्त चेहरा है
ये बोझिल सा सफर ये बातें बेअसर और जज्बातों का धुँआ
जला करते हो थोड़ा तुम, थोड़ा मैं और दिल भी बहरा है

-- अंशु प्रधान

पोर्न के लिए कोलाहल

डा. ओम निश्चल

मैया मोहिं यह सरकार न भावै।
जो आनंद स्रोत की बैरी पोर्न पे बैन लगावै।
मति मारी सब शिष्ट जनन की जो कछु भांप न पावै।

हम किसी के हर कदम के विरोधी क्यों हों। उसके पीछे किसी नागरिक स्वतंत्रता के दमन की मंशा है, ऐसा क्यों सोचें?

सामाजिक बुराइयों पर पाबंदी लगनी चाहिए, यह कौन नहीं चाहता। पर इसका ढिंढोरा पीटने की क्या जरूरत। यह सब सहज गति से हो। समाज को सड़ाने में हमारा योगदान नगण्य हो, इतनी कोशिश तो जरूर करनी चाहिए। सरकार चाहे तो वह तमाम सख्त कदम उठाकर नागरिकों के जीवन और विचारों में स्वच्छता ला सकती है। क्या यह सच नहीं है कि सारी पोर्न साइट्स स्त्री को पैसे और प्रलोभन के बदले उसकी देह से किए गए यांत्रिक स्वैराचार के जरिए स्त्रीदेह का उत्सव मनाने के ठीहे हैं, जिसमें विश्वव्यापी देह बाजार तंत्र शामिल है? इस तंत्र ने ही इंटरनेट को विंडोशापिंग में बदल दिया है। आज कुछ भी गोपनीय व वर्जित नहीं रहा।

ये साइटें इसके जरिए करोड़ों यूरो-डालर का कारोबार कर रही हैं। सरकार यदि ऐसे सकारात्मक कदम उठाती है तो उठाने दीजिए। वह कुछ गंदगी साफ तो कर रही है। हालांकि किसी चीज पर बैन लगने से उसके चोर-दरवाजे सक्रिय हो उठते हैं। पोर्न फिल्मों व वीडियो का बाजार पहले भी था आज भी है, रहेगा, जब तक सरकार हर मोर्चे पर बंदिश नहीं लगाती। हमारे यहां हर सरकारी कानून के लूपहोल्स निकाल लिये जाते हैं। हममें से बैन पर होने वाले प्रतिकूल कोलाहल में स्वर मिलाने वाले यह तो चाहते हैं उनके बच्चे भूल से भी इन साइटों पर न जाएं, नहीं तो वे बिगड़ जाएंगे। पर विज्ञापन का तंत्र इतना हावी है कि भूल से भी बटन टच हो जाए तो अनापशनाप सामग्री स्क्रीन पर आने लगती है। इसीलिए मेरा कहना है कि कुछ अच्छा हो तो हमें प्रसन्न भी होना चाहिए जैसे हम खराब स्थितियों में अवसन्न हो उठते हैं।

पर हैरानी की बात यह है कि हम ऐसे मामलों में इतने उतावले हो उठते हैं कि हम रौ में बहकर वही कहने लगते हैं जो अन्य लोग कह रहे होते हैं। हम अपने दिमाग से अपनी राय कायम क्यों नहीं करते। अपने विवेक से हम इस पूरे बाजार तंत्र को क्यों नही देखते? सारा कचरा स्वतंत्रता के नाम पर हमी ढोने के लिए हैं क्या? अभी तो ये साधु-संत ही बिगड़े हैं, यह सब जारी रहा तो हमारी पूरी नई पीढी बरबाद हो जाएगी। अभी ही वह मोबाइल और इंटरनेट में इतनी डूबी रहती है कि आपसे बात करने का किसी बच्चे के पास समय नही है। क्या आप समझते हैं कि वह किसी परम तत्व की खोज में इस कदर ध्यानमग्न है? नहीं भाई। वह तो ऐसे ही आनंद के स्रोतों संवादों में डूबा हुआ दुनिया भर से आंखें मूंदे हुए है। पड़ोस में क्या हो रहा है, उसे इस बात तक की खबर नहीं है। मुझे इस मामले में चकाचक बनारसी का एक शेर याद आता है-

हमें खतरे का अंदाजा है लेकिन
हमारे घर में दरवाजा नहीं है।
उनके घर में दरवाजा है लेकिन
उन्हें खतरे का अंदाजा नहीं है।

हममें से अनेक को इस खतरे का अंदाजा नहीं है। बैन के नाम पर हम अपना ही संयम खो चुके हैं। हम सोचते हैं, ऐसा क्यों हुआ, यह जरूर हमारी स्वतंत्रता पर आघात है। आज पोर्न साइटों पर, कल हमारी कला, साहित्य व सांस्कृतिक कार्यकलापों पर पाबंदी लगेगी। लोग बचाओ बचाओ की मुद्रा में आ गए है। ऐसे में कुछ लोग अवश्य हैं कि वे पोर्न बाजार से उत्पन्न खतरे को देख पा रहे हैं।

स्वतंत्रता के अभिलाषी इतने ही सतर्क रहे होते तो इस देश में राजनीतिक दबदबे और भयादोहन व प्रताड़ना के लिए इमरजेंसी न लगाई गयी होती। कुछ लोग उसे तब भी अनुशासन-पर्व बता रहे थे। उसके पक्ष में लेखकों का एक वर्ग भी था। संपादकीय व खबरों पर सेंसर लगे होते थे। ऐसे वक्त लेखकों की जिम्मेदारी बनती थी कि वे ऐसे राजनीतिक अहंकारियों के विरुद्ध एकजुट हों। पर लेखकों ने तब क्या किया। वह तो जेपी थे जिन्होंने अपने आंदोलन से बल्कि कहें कि अपनी जान की कीमत पर ऐसे अहंकारियों को परास्त किया।

आज किसी बुराई को प्रतिबंधित किया गया है तो कुछ तो सकारात्मक कदम है यह। जब कला के प्रतिरूपों पर हमला हो या प्रतिबंध हो, तब आप एकजुट होकर विरोध करें। यह नही कि बीडी पर, सिगरेट पर, शराब पर, बार पर, कोठों पर व अश्लील सेक्सी वीडियो तथा पोर्न पाठ्य सामग्री पर बैन लग जाए तो आंसू भरने लगें कि हाय स्वतंत्रता छिन रही है। आज यही हो रहा है। पोर्नाभिलाषियों का यह कोरस चिंताजनक है। ■

तनावग्रस्त या चिंतित होना

विजय कुमार सिंघल

यह एक आम शिकायत है। यह कोई शारीरिक नहीं, बल्कि मानसिक बीमारी है, जिसका सीधा असर शरीर पर भी पड़ता है और लम्बे समय तक तनावग्रस्त रहने पर व्यक्ति शारीरिक रूप से भी बीमार हो जाता है। जब मनुष्य तनावग्रस्त हो जाता है तो उसका दिमाग केवल उसी के बारे में सोचता रहता है। कहावत है कि चिता तो मुर्दे को जलाती है पर चिंता जीवित व्यक्ति को ही जला डालती है। यह पूरी तरह सत्य है। हमें तनाव या चिंता को दूर करने के लिए उसके कारण को दूर करना चाहिए। कारण समाप्त हो जाने पर चिंता भी अपने आप समाप्त हो जाती है।

चिंता कई कारणों से हो सकती है, जैसे भूतकाल में हुई कोई घटना, वर्तमान काल की कोई समस्या और भविष्य में किसी संकट के आने का डर। इनमें से भूतकाल में हुई किसी घटना के बारे में सोच-सोचकर चिंतित होना निरर्थक है। हम किसी भी तरह भूतकाल की किसी घटना को बदल नहीं सकते। परंतु इतना अवश्य कर सकते हैं कि उस घटना के कारण यदि कोई नकारात्मक प्रभाव हुआ हो, तो उसे न्यूनतम या समाप्त कर सकें। इसलिए भूतकाल की घटना पर सोचकर अपने जी को जलाने के बजाय हमें यह देखना चाहिए कि उसका इस समय हमारे ऊपर क्या प्रभाव हो रहा है। यदि ऐसा कोई प्रभाव न हो, तो उस घटना को इतिहास का अंग मानकर भूल जाना चाहिए। उसके लिए चिंतित होना बेकार है। यदि प्रभाव हो रहा हो, तो उसको समाप्त करने का प्रयास करना चाहिए। यदि उसको समाप्त करना संभव नहीं है, तो उसे नियति मानकर स्वीकार कर लेना चाहिए।

जहां तक भविष्य में कोई संकट आने की आशंका के कारण आप चिंताग्रस्त हैं, तो वह चिंता भी बेकार है। अगर संकट को आना होगा, तो वह आयेगा ही और अगर हम उसे रोक नहीं सकते तो उसकी चिंता करना सरासर मूर्खता है। हम केवल इतना कर सकते हैं कि ऐसे संकट से निपटने के लिए तैयारी रखें, यदि ऐसा करना संभव हो। वरना भविष्य के संकट को भविष्य के ऊपर ही छोड़ देना चाहिए कि जब वह आयेगा तो उससे निपट लेंगे।

अब आइए वर्तमान समस्याओं पर। समस्याएं हमारे जीवन का अंग हैं। हर किसी को कोई न कोई समस्या होती है। समस्याओं से जूझने में ही जीवन का आनंद है। जिस व्यक्ति के जीवन में कोई समस्या नहीं है वह इस आनंद से वंचित रहता है। इसलिए यदि आपके सामने कोई छोटी या बड़ी समस्या है तो उसके समाधान में जुट जाइए। यदि उसका कोई समाधान ही नहीं है तो उसे एक वास्तविकता मानकर स्वीकार कर लीजिए।

इस प्रकार समस्या चाहे कैसी भी हो, उसका समाधान करना ही उचित है। उसके बारे में चिंतित रहना कोई समाधान नहीं है, बल्कि यह स्वयं एक समस्या है और अनेक नयी समस्याओं को पैदा कर सकता है। लगातार तनावग्रस्त रहने से व्यक्ति अवसाद से घिर सकता है और निराशा में कोई गलत पग उठा सकता है। अतः तनाव और चिंता से बचना चाहिए। ■

मैं और मेरा धर्म

मनमोहन कुमार आर्य

मैं कौन हूं और मेरा धर्म क्या है? इस विषय पर विचार करने पर ज्ञात होता है कि मैं एक मुनष्य हूं और मनुष्यता ही मेरा धर्म है। मनुष्य और मनुष्यता पर विचार करें तो हम, मैं कौन हूं व मेरे धर्म मनुष्यता का परिचय जान सकते हैं। इसी पर आगे विचार करते हैं। मनुष्य मननशील होने व स्वात्मवत दूसरों के सुख-दुःख व हानि लाभ को समझने के कारण ही मनुष्य कहलाता है। यदि हम मनुष्य होकर मनन न करें तो हम मनुष्य नहीं अपितु पशु समान ही होंगे क्योंकि पशुओं के पास मनन करने वाली बुद्धि नहीं है। वह कुछ भी कर लें किन्तु मनन, विचार, चिन्तन, सत्य व असत्य का विश्लेषण आदि नहीं कर सकते।

अब प्रश्न उपस्थित होता है कि मनन किससे होता है और मनन की प्रेरणा कौन करता है? इसका उत्तर यह है कि हमारे शरीर में मस्तिष्कान्तर्गत बुद्धि तत्व, इन्द्रिय नहीं अपितु इनसे मिलता जुलता एक अलग उपकरण वा अवयव है, जो सत्य व असत्य, उचित व अनुचित का चिन्तन व विचार करता है, इसी को मनन करना कहते हैं। बुद्धि नामक यह उपकरण जड़ सूक्ष्म प्रकृति तत्व की विकृति है। यह मैं व हम से भिन्न सत्ता है। मैं व हम एक चेतन, सूक्ष्म, अल्पज्ञ, एकदेशी, ससीम, अल्प-परिणाम, अनादि, अजन्मा, अमर, नित्य, अजर, शस्त्रों से अकाट्य, अग्नि से जलता नहीं, जल से भीगता नहीं, वायु से सूखता नहीं, कर्म-फल चक्र में बन्धा हुआ, सुख-दुःखों का भोगता, जन्म-मरणधर्मा व वैदिक कर्मों को कर मोक्ष को प्राप्त करने वाली सत्ता हैं। मुझे यह जन्म इस संसार में व्यापक, जिसे सर्वव्यापक कहते हैं तथा जो सच्चिदानन्दस्वरूप है, उसके द्वारा मेरा जन्म अर्थात् मुझे इस मनुष्य शरीर की प्राप्ति हुई है। यह शरीर मुझसे भिन्न मेरा अपना है और मेरे नियन्त्रण में होता है। मुझे कर्म करने की स्वतन्त्रता है परन्तु उनके जो फल हैं, उन्हें भोगने में मैं परतन्त्र हूं। मेरे शरीर की सभी पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां, मन, बुद्धि आदि अवयव व तत्व मेरे अपने हैं व मेरे अधीन अथवा नियन्त्रण में है। मेरी अर्थात् आत्मा की प्रेरणा पर हमारी बुद्धि विचार, चिन्तन व मनन करती है।

यदि हम कोई भी निर्णय बिना सत्य व असत्य को विचार कर करते हैं और उसमें बुद्धि का प्रयोग नहीं करते तो यह कहा जाता है कि यह मनुष्य नहीं गधे के समान है। गधा भी विचार किये बिना अपनी प्रकृति व ईश्वर प्रदत्त बुद्धि जो चिन्तन मनन नहीं कर सकती, कार्य करता है। जब हम बुद्धि की सहायता से मनन करके कार्य करते हैं तो सफलता मिलने पर हमें प्रसन्नता होती है और यह हमारे लिए सुखद अनुभव होता है। इसी प्रकार से जब मनन करने पर भी हमारा अच्छा प्रयोजन सिद्ध न हो तो हमें अपने मनन में कहीं त्रुटि वा कमी अनुभव होती है। पश्चात और अधिक चिन्तन व मनन करके हम अपनी कमी का सुधार करते हैं और सफलता प्राप्त करते हैं। सफलता मिलने में हमारे प्रारब्ध की भी भूमिका होती है परन्तु इसका ज्ञान परमात्मा को ही होता है। हम तो केवल आचार्यों से अधिकाधिक ज्ञान प्राप्त कर अपनी बुद्धि की क्षमता को बढ़ा सकते हैं और उसका प्रयोग कर सत्यासत्य का विचार व सही निर्णय कर सकते हैं।

जन्म के बाद जब हम ५ से ८ वर्ष की अवस्था में होते हैं तो माता-पिता हमें आचार्यों के पास विद्या प्राप्ति के लिये भेजते हैं। आचार्य का कार्य हमारे बुरे संस्कारों को हटा कर श्रेष्ठ व उत्तम संस्कारों व गुणों का हमारी आत्मा में स्थापित करना होता है। आचार्य के साथ हमें स्वयं भी वेदाध्ययन व अन्य सत्साहित्य का अध्यन कर व अपने विचार मन्थन से श्रेष्ठ गुणों को जानकर उसे अपने जीवन का अंग बनाना होता है। श्रेष्ठ गुणों को जानना, उसे अपने जीवन में मन, वचन व कर्म सहित धारण करना और आचरण में केवल श्रेष्ठ गुणों का ही आचरण व व्यवहार करना धर्म कहलता है। धर्म को सरल शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि सत्य का आचरण ही धर्म है। सत्य का आचरण करने से पूर्व हमें सत्य की पहचान करने के साथ सत्य के महत्व को जानकर लोभ व काम-क्रोध को अपने वश में भी करना होता है। आजकल देखा जा रहा है कि उच्च शिक्षित लोग अपने हित, स्वार्थ व अविद्या के कारण लोभ व स्वार्थों के वशीभूत होकर भ्रष्टाचार, दुराचार, अनाचार, कदाचार, दुराचार, व्यभिचार, बलात्कार जैसे अनुचित व अधर्म के कार्य कर लेते हैं। यह श्रेष्ठ गुणों के विपरीत होने के कारण अधर्म की श्रेणी में आता है।

कोई किसी भी मत को मानता है परन्तु प्रायः सभी मतों के लोग इस लोभ के प्रति वशीभूत होकर, अनेक धर्माचार्य भी, अमानवीय व उत्तम गुणों के विपरीत कार्यों को कर अधर्मी व पापी बन जाते हैं। यह कार्य हमारा व किसी का भी धर्म नहीं हो सकता। मत और धर्म में अन्तर यही है कि संसार के सभी मनुष्यों का धर्म तो एक ही है और वह सदगुणों को धारण करना व उनका आचरण करना ही है। इसमें ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जानकर उसकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना करना, प्राण वायु-स्वात्मा की शुद्धि व परोपकार के लिए अग्निहोत्र यज्ञ नियमित करना, माता-पिता-आचार्यों व विद्वान अतिथियों का सेवा सत्कार तथा सभी पशु-पक्षियों व प्राणियों के प्रति अंहिसा व दया का भाव रखना ही श्रेष्ठ गुणों के अन्तर्गत आने से मननशील मनुष्य का धर्म सिद्ध होता है। यह सभी कार्य सभी मनुष्यों के लिए करणीय होने से धर्म हैं।

आजकल जो मत-मतान्तर चल रहे हैं वह धर्म नहीं है। उनमें धर्म का आभास मात्र होता है परन्तु वह मनुष्यता के लिए न्यूनाधिक हानिकर हैं। यह लोग अपने-अपने मत के स्वार्थ के लिए नाना प्रकार की अमानवीय योजनायें बनाते व उन्हें गुप्त रूप से क्रियान्वित करते हैं जिससे समाज में वैमनस्य उत्पन्न होता है। मनुष्य मत-मतान्तरों में बंट कर एक दूसरे के विरोघी बनते हैं जैसा कि आजकल देखने को मिलता है। इसके साथ सभी मतों के अनुयायी भी ईश्वर की सच्ची उपासना, वेद प्रवर्तित ज्ञानयुक्त कार्यों को न करने और श्रेष्ठ गुणों को धारण कर उनका आचरण न करने से जीवन के उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष से वंचित हो जाते हैं। महर्षि दयानन्द (१८२५-१८८३) ने मत-मतान्तरों में निहित अमानवीय व अधर्म विषयक प्रवृत्तियों का संकेत किया था परन्तु अज्ञान, स्वार्थ व अहंकारवश लोगों ने उनकी विश्व का कल्याण करने वाली मान्यताओं की उपेक्षा की जिसका परिणाम यह हुआ कि हम लोग श्रेष्ठ गुणों को धारण कर जीवन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लक्ष्य से दूर हैं और विश्व की लगभग ७ अरब की जनसंख्या में से शायद कोई एक भी उसे कोई पूरा करता होगा?

संक्षेप में हम यह कहना चाहते हैं कि हम सब मनुष्य व प्राणी एक जीवात्मा हैं और ईश्वर हमारे पूर्व कर्मानुसार हमारा अर्थात् हमारे शरीरों का जन्म दाता है। मनुष्य जन्म मिलने पर सभी को श्रेष्ठ व उत्तम सत्य गुणों को धारण करना चाहिये। इनका आचरण ही धर्म होता हैं। वेद ईश्वरीय ज्ञान है तथा सत्य मनुष्य धर्म व सभी विद्याओं का पुस्तक है। वेदाध्ययन करना और उसके अनुसार जीवन व्यतीत करना ही मनुष्य धर्म वा वैदिक धर्म है। वेद संस्ंत में हैं अतः संस्कृत न जानने वाले लोगों को सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि आदि ग्रन्थों सहित महर्षि दयानन्द व अन्य वैदिक विद्वानों के वेदभाष्यों व ऋषि मुनियों के अन्य ग्रन्थों शुद्ध मनुस्मृति, ज्योतिष, दर्शन व उपनिषदों का आत्मा की ज्ञानवृद्धि के लिए अध्ययन करना चाहिये। ऐसा करके हमें, मैं व स्व का परिचय प्राप्त होने के साथ अपने कर्तव्य व धर्म का निर्धारण करने में सहायता मिलेगी।

मत-मतान्तरों के ग्रन्थों को पढ़कर मनुष्य भ्रान्तियों से ग्रसित होता है अथवा ऐसा मनुष्य बनता है जिसमें आत्मा व बुद्धि होने पर भी वह सर्वथा इनसे अपरिचित होता हुंआ मत-मतान्तरों की सत्यासत्य मान्यताओं में फंसा रहता है। ऐसा मनुष्य लगता है कि केवल खाने-पीने व सुख सुविधायें भोगने के लिए ही जन्मा है। खाना पीना व सुविधायें भोगना मनुष्य जीवन नहीं अपितु इससे ऊपर उठकर सद्ज्ञान प्राप्त कर उससे अपना व दूसरे लोगों का कल्याण करना ही मानव धर्म है। हम आशा करते हैं कि इससे मैं व यथार्थ धर्म का कुछ परिचय पाठकों को प्राप्त होगा। ■

क्या मैं तुम्हारी कुछ हूँ ?
बस इसी कुछ को कोई नाम न देना
रिश्तों के दायरे बड़े सीमित से लगते हैं अब
डर है कहीं छोटे न पड़ जायें
क्योंकि यही कुछ बहुत कुछ है
कभी-कभी लगता है
जैसे यही कुछ सब कुछ है
सब कुछ ...

-- **अनिता अग्रवाल**

(कविता संग्रह '**अन्तर्मन के स्पन्दन**' से साभार)

सुनो, है मेरी ये ख्वाहिश
कि जला दी जाएं मेरी कवितायें/मेरी सारी डायरियाँ
नहीं चाहती कि मेरे जाने के बाद/कोई भी टुकड़ा
मेरी आवाज का/इन वादियों में भटकता फिरे,
गुमराह हो./चाहती हूँ/पूरी तरह/
अपनी खामोशी के आगोश में जाना
पूरे होश-ओ-हवास में
करती हूँ वसीयत कि
जहाँ कहीं भी मेरे लिखे अलफाज हैं
वो सिर्फ मेरी जिंदगी के हैं,
ना समझ बैठे कोई इसे हकीकत
इश्क नाम है/ एक गहरी खामोशी में डूबने का
रेजा रेजा बिखरने का/दर्द हैं/आह हैं
यादों की कोई कब्रगाह का

-- **रितु शर्मा**

कैसे रहूँ खुश ऐसे जीवन में
जिसने दिये हैं/हमे केवल जुदाई के क्षण
दर्द और आंसू का नाम है यह जीवन
न मैंने कुछ पाया/न तुमने कुछ पाया
अपने सामाजिक रिश्तों के लिए
बस मरते रहने का नाम है जीवन
सोचा था अब आयगा मजा जीने का
अपनी सच्ची जीवन साथी के साथ
पर एक दूसरे के लिए
तड़पने और तरसने का नाम है यह जीवन
कैसे खुश रहूँ/उन पलों को याद करके
जो एक इतिहास बन चुके/कैसे खुश रहूँ
उन होंठों की छुवन का अहसास करके
जो बीते पलों की/सिर्फ एक छाप बन चुके
सोचा था जीवन का एक छोटा सा हिस्सा
बिताया करूँगा अपनी जान के साथ
मगर उस पल को घुट घुट कर मरते हुए
देखने का नाम बन चुका यह जीवन
मेरी जान को पाना तो दूर
देखने को तरस जाती हैं ये आँखें
इसी तरह एक दिन/बंद हो जाएँगी ये आँखें
बस उस पल के/इंतजार का नाम है यह जीवन
पल पल जीते हुए भी/मरने का नाम है यह जीवन

-- **महेश कुमार माटा**

जानोगे पर समय चाहिए, समय को एक अंतरा
अन्तरा लिखी जा चुकी है लिखनी है बची कविता
समय की मांग पर लिखी जा रही कविता
भरी मांग पर पढ़ी जाएगी कविता
कविता कुछ शब्द चयन पुकार से नहीं बनती
भावों का समावेश कर एक नया भाव रचती
जीवन घटित घटनाओं रगो साज छिपाती
रूप रंग से रंगित कटाक्ष के वाण चलाती
दर्द के सागर में छिपे आंसुओं का गागर बनाती
गागर में मिली विभिन्न नदी
हर नदी की एक माला बनाती
बदलते सामाजिक परिवेश
भेष में छिपे द्वेष दर्शाती
कविता वही जो हर दिल
सरोवर में कमल खिलाती
है सिमटा संसार तुझमें तू बन बैठी कविता
लेख लिखा भरा विचार तू बन बैठी सरिता!

-- **संगीता कुमारी**

(कविता संग्रह '**हृदय के झरोखे**' से साभार)

मैं फौजी की पत्नी हूँ
नहीं इख्तियार मुझे मिलन के गीत गुनगुनाने का
प्रीत के झूले झूलने का/चूड़ी की खनक से
सजन को रिझाने का/रुठने का मनाने का
पायल की रुनझुन से घर आँगन चहकाने का
सिन्दूर की लाली पर इतराने का
क्योंकि सीमा पर कौनसी गोली पर
बिखर जाये मेरे जीवन की लड़ी
कब मैं फौजी की पत्नी से शहीद की पत्नी कहलाऊँ
है यही तो बस किस्मत हम फौजी की पत्नी की
हर पल बस थमी सहमी रुकी रुकी सी रहे सासें
ऐसे में क्या भाये कोई साज सिंगार
कोई दिन या कोई त्यौहार
फौजी की पत्नी हूँ मैं
कहते सभी कर गर्व इस बात पर
कौन देखे मेरे मन की पीड़ा
जिस का नसीब सिर्फ इंतजार
सूने दिन और रातों का

-- **मीनाक्षी सुकुमारन**

पहले मेरे गाँव तक/सिर्फ एक पगडंडी आती थी
इस पगडंडी से लोग पैदल आते जाते थे
लोगो के कंधे पर होते थे/छोटे छोटे थैले
जिनमें होती थीं छोटी छोटी इच्छायें
कुछ बहुत ही छोटे छोटे इरादे
तब सूरज भी पिछवाड़े के
पोखर से उगता था
वो एक पगडंडी कितने
दिलों को जोड़ती थी
काश दुनिया में फिर से पगडंडी हो जाये
कुछ तो यहाँ अपने हो जाए दिलों से जुड़ जाए !

-- **डॉली अग्रवाल**

जीवन की संवेदनाओं में चुभते शब्दवाण
कहां है शीतलता तुम्हारी छांव की/सब व्यर्थ है
मंदाकिनी की अविरल बहती धार
चट्टानों को संवारती-सजाती है
धोती है मलीनता पत्थरों की।
पर, कौन जानता है उसकी व्यथा
कि पत्थर पर गिरने से उसे भी लगता है आघात!
उसकी धवलता पर पवित्रता पर प्रश्नचिह्न लगाता
आज का मनुष्य/क्या यह सोचता है कभी
गंगा क्या ऐसी ही थी?
या उसे मलिन बनाया हमने?
और आज उस प्रेम के बदले में
दे रहे हैं केवल घृणा!
स्वर्ग की उस देवी को
भगीरथ ने अपनी तपस्या से उतारा था धरा पर
कौन सोचता है सहज नहीं था
गंगा का आना, गंगा को पाना!
सहज है तो उसे मलिन बनाना और
उसे खोना हमेशा-हमेशा के लिए...!

-- **डा. रचना शर्मा**

(कविता संग्रह '**अन्तर-पथ**' से साभार)

औरत है खानाबदोश
अपने सपनों को वक्त के पहिये पर लादे
पिता के घर से बेघर/पति के घर पड़ाव डालती
निरंतर घूमती है बेटी पत्नी माँ बन
काफिले जोड़ती रिश्तों के/फिर भी अकेली,
हिम्मत हारने का अधिकार नहीं
क्योंकि उसका दिल धड़कता है औरों के लिए,
अगर वह रूक जाए
तो रुक जाएगा जिन्दगी का काफिला
इसलिए बस चलती है
और चलती जाती है 'नाज'
खानाबदोश बन औरत !

-- **प्रीति दक्ष 'नाज'**

कभी इकरार करते हो कभी इनकार करते हो
मुहब्बत को छिपा दिल में नहीं इजहार करते हो
भुला भी तो नहीं पाते मुहब्बत यार करते हो
जुबां से कह नहीं पाते नयन तुम चार करते हो
फिजाएँ गुनगुनाती हैं, हवा बन साज गाते हैं
खिली जो देख के कलियाँ, भ्रमर भी गीत गाते हैं
तरन्नुम छेड़ कर जाती, हसीं वो शाम की बेला
जिया मचले पिया मेरा, लगा है श्रावणी मेला
जलाकर प्यार का दीया, बुझाओ तुम नहीं ऐसे
लगा के गैर को सीने, सताओ तुम नहीं ऐसे
छिपाकर था रखा दिल में,
तुम्हारा प्यार हमने वो
बयाँ कैसे करें इसको,
सजाये संग सपने जो

-- **गुंजन अग्रवाल**

(पहली किस्त)

विजयी सैनिक

कालीपद प्रसाद

हास्पिटल के कैंसर वार्ड के बिस्तर पर लेटे लेटे सुबीर थक चुका था। एक सप्ताह से वह हास्पिटल के इसी वार्ड में था। दिनभर वह इंतजार करता कि घर से कोई आये, उसका हालचाल पूछे। उससे कुछ बात करे, परन्तु हर दिन उसे निराशा ही हाथ लगती। रात १० बजे एक बेटा आता था और सो जाता था। दिन में यदि उसे कुछ चाहिए होता तो वह नर्स से ही कहता। एक गिलास पानी के लिए भी उसे नर्स पर निर्भर रहना पड़ता था। इसके विपरीत दूसरे मरीज के घरवाले दिनभर वहीं रहते, मरीज से बातचीत करते, उसकी आवश्यकता का ध्यान रखते, मरीज को ढाढ़स दिलाते, आत्मविश्वास जगाते। जीने की इच्छा और रोग से लड़ने की प्रेरणा देते। यह सब देखकर उसे लगता कि दुनिया में शायद किसी को उसकी जरूरत नहीं है, इसीलिए कोई अब उसका खोजखबर लेने नहीं आते, पत्नी भी नहीं। एक सप्ताह हो गया, न पत्नी आयी न कोई उसका फोन। बेटों ने भी फोन करके हालचाल नहीं पूछा। उसका मन निराशा से भर गया।

पंद्रह वर्ष से अधिक समय हो गया था सेना से सेवानिवृत हुए। सेना से सेवानिवृत होकर उसे रोजगार की तलाश करनी पड़ी थी क्योंकि जो पेंशन मिलती थी उससे बच्चों की पढ़ाई और परिवार का खर्चा पूरा नहीं होता था। उन्होंने एक प्राइवेट कम्पनी में नौकरी कर ली। हर माँ बाप की तरह वह भी चाहता था उसके बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करें और अच्छी नौकरी करें। गाँव में रहकर खुद अपनी पढाई पूरी नहीं कर पाए थे। इसीलिए बडे बेटे सुनील को ग्रेजुएशन के लिए उन्होंने शहर में हास्टल में भेज दिया। छोटा बेटा सुधीर स्कूल परीक्षा पास करने तक गाँव के स्कूल में पढ़ता रहा। कुछ कर्ज लेकर सुनील को एमबीए कराया तो पुणे में उसकी नौकरी लग गई। सुधीर ने जब स्कूल परीक्षा पास की तो उसे भी ग्रेजुएशन के लिए भाई के पास पुणे भेज दिया।

परिवार की गाड़ी सही पटरी पर चल रही थी। हँसी खुशी से जीवन बीत रहा था। तभी सुबीर की जिंदगी में एक उल्कापात हुआ। एक रात उसके सीने में असहनीय दर्द शुरू हो गया। घर में पत्नी सुरेखा के अलावा और कोई नहीं था। दोनों बेटे पुणे में थे। डरी हुई सुरेखा ने पड़ोसी के दरवाजे पर दस्तक दी। पड़ोसी राजन और उसकी पत्नी रीता तुरंत आ गये। स्थिति भांप कर राजन ने अपने पहचानवाले डाक्टर को फोन से बुला लिया। डाक्टर ने प्राथमिक जाँच करके कुछ गोलियां दी और कहा कि इन्हें तुरंत हास्पिटल में भर्ती करना पड़ेगा। डाक्टर ने ही एम्बुलेंस बुला लिया और एक निजी हास्पिटल में भर्ती करा दिया।

वहां उसकी पूरी जाँच की गई। जाँच के बाद डाक्टरों ने कहा कि उनकी बाई पास सर्जरी करनी पड़ेगी। यह सुनते ही सुरेखा रोने लगी किन्तु सुबीर ने धीरज नहीं खोया। उसने डाक्टरों से कहा, "डाक्टर साहब, बाई-पास का खर्चा बहुत होगा, मैं इसका खर्चा वहन नहीं कर पाउँगा। आप लोगों से बिनती है कि दवाई के द्वारा मुझे इतना स्वस्थ कर दीजिये कि मैं पुणे तक जा सकूँ। मैं एक सेवानिवृत सनिक हूँ। मेरा इलाज सैनिक हास्पिटल में मुफ्त हो सकता है।"

"वह तो कोलकाता में भी हो सकता है।" एक डाक्टर ने कहा।

"हाँ, यहां भी हो सकता है, परन्तु यहां मेरी देखभाल करने के लिए कोई नहीं होगा। पुणे में मेरे दो बेटे हैं। वे मेरा ख्याल रख सकते हैं, इसीलिए मैं पुणे जाना चाहता हूँ।" सुबीर ने कारण बताया।

डाक्टरों ने उसे दस दिन बाद पुणे जाने की अनुमति दे दी। खबर पाते ही दोनों बेटे भी पुणे से आ गए थे। वे अपने साथ माँ बाप को पुणे ले गए। पुणे मिलिट्री हास्पिटल में सुबीर को दाखिल कर लिया गया। कई दिन तक अलग-अलग परीक्षण होता रहा। पूरी जाँच के बाद उसका बाई-पास सर्जरी की गयी। मिलिट्री हास्पिटल में अनुशासन का कड़ाई से पालन किया जाता है। वहाँ मरीज से मिलनेवालों का समय निश्चित होता है। परिवार के लोग एवं दूसरे लोग उसी समय मरीज से मिल सकते हैं। सुरेखा और दोनों बेटे उसी निर्धारित समय पर आते, बातचीत करते, हालचाल पूछते, दिलासा देते। सुबीर को अच्छा लगता कि इस हालत में पत्नी एवं बेटे उसके साथ हैं। मिलिट्री हास्पिटल की सेवा और अपनों का अपनापन जल्दी स्वस्थ होने में मददगार साबित हुए। जल्दी स्वस्थ होकर वे कोलकाता चले गए।

जीवन की गाडी फिर पटरी पर दौड़ने लगी। लेकिन नियति को कुछ और मंजूर था। दो साल के बाद अस्त्राचार (ओपेरेशन) के स्थान पर एक फुंसी हो गयी। उसमें दर्द होने लगा तो सुबीर तुरंत मिलिट्री हास्पिटल जाकर डाक्टरों को दिखा दिया। डाक्टरों को कुछ संदेह हुआ तो उस स्थान से एक टुकड़ा निकालकर बायोप्सी के लिए भेज दिया। चार पांच दिन बाद रिपोर्ट आयी। रिपोर्ट में कुछ मेलैंड सेल पाए जाने की बात कही गयी थी। यह कैंसर भी हो सकता था और कैंसर का सर्जन हास्पिटल में उपलब्ध नहीं था। इसीलिए सुबीर को शहर के एक जाने माने निजी हास्पिटल में भेज दिया गया।

उस हास्पिटल में कैंसर के उपचार के लिए जरुरी सभी आधुनिक उपकरण उपलब्ध थे और निष्णात सर्जन भी थे। यहाँ भी एक बार फिर जाँच किया गया। उसके बाद डाक्टरों ने शल्य क्रिया द्वारा गांठ को निकाल दिया। उसके बाद सुबीर को कीमोथेरेपी लेने की सलाह दी गई परन्तु उसने कीमोथेरपी लेने से इनकार कर दिया। अंततः घाव सूखने बाद उसे हास्पिटल से छुट्टी दे दी गई। डाक्टर चाहते थे कि शल्यक्रिया के बाद यदि कोई मेलैंड सेल रह जाता है तो उसे कीमोथेरापी से मार दिया जाय जिससे भविष्य में दोबारा होने का कोई सम्भावना न रहे परन्तु सुबीर इस बात को समझ नहीं पाया और कीमोथेरपी नहीं ली।

डाक्टर की सलाह न मानकर सुबीर ने जो गलती की उसकी बहुत बड़ी कीमत उसे चुकानी पड़ी। कुछ ही महीनों बाद उसी स्थान पर फिर एक फोड़ा निकल आया और पहले से कहीं बड़ा। दर्द भी ज्यादा होने लगा और अधिक कष्टदायक। वह बिना समय नष्ट किये मिलिट्री हास्पिटल में जाकर रिपोर्ट किया। डाक्टरों ने उसके पुराने रिपोर्ट्स और नए रिपोर्ट्स का अध्ययन कर इस नतीजे पर पहुंचे कि हो सकता है कि यह पुराने रोग की पुनर्जागृति है। इसीलिए उसको उसी निजी हास्पिटल जहाँ उसका ओपेरेसन हुआ था, भेज दिया। इस हास्पिटल में पुराने डाक्टर के बदले नया डाक्टर आ चुका था। नया डाक्टर ने पहले सुबीर के पुराने रिपोर्ट्स का अध्ययन किया फिर और कुछ आवश्यक जाँच करवाई। इसमें एक सप्ताह का समय लग गया था।

यही वह समय था, जब घर का कोई भी व्यक्ति उसे देखने नहीं आया। दिनभर वह अकेला पडा रहता था। दूसरे मरीजों के रिश्तेदारों को आते जाते देखते थे। मरीजों की पसंद की चीजें लाकर देते थे, प्यार से बात करते थे, दिलासा देते थे। चौबीस घंटे घर का कोई न कोई व्यक्ति मरीज के पास बैठा रहता था। केवल उसके घर से कोई नहीं आया। यहाँ तक कि उसकी पत्नी भी नहीं। कभी फोन पर भी हालचाल नहीं पूछा।

अपनों की उदासीनता से सुबीर को कैंसर के घाव से ज्यादा कष्ट हुआ। वह डिप्रेसन का शिकार हो गया, जीवन से मोह टूटने लगा। मन में आया कि 'जीवन को समाप्त कर दे। किसी को यहाँ मेरी जरुरत नहीं है तो जीने से क्या फायदा?' परन्तु दूसरे ही क्षण मन में आया, "मैं एक सैनिक हूँ, लड़ना मेरा काम है, चाहे वह युद्ध भूमि हो, जीवन-रण हो, कोई बीमारी या स्वार्थी लोग हों, सबसे लड़ना मेरा काम है। आत्म हत्या का अर्थ होगा बिना लड़े हथियार डाल देना। नहीं, मैं आत्म हत्या नहीं कर सकता। मैं कैंसर से और स्वार्थी लोगों से अंतिम सांस तक लडूंगा और जीतूँगा भी।"

(शेष अगले अंक में)

क्षणिका

खून से सींच उगाया है दरख्त
उसकी कोई भी शाख हिला दो
फूल नहीं केवल लम्हे झड़ते हैं
लम्हों से निकाल कर इतिहास
तोड़-मरोड़कर हर अहसास
मेरे वतन के लोग लड़ते हैं !

-- अनिता मण्डा

औरों के वास्ते जो हलाहल पिया किये
हम भी उन्हीं के नक्शे कदम पर चला किये
जिनके दिलों में नफरतों का एक हुजूम था
हमसे मिले तो सबसे मुहब्बत किया किये
खुशियों को मोल लेने की खातिर तमाम उम्र
आंखों से अपनी कीमती गौहर गिरा किये
जब से है कुफ्र छोड़ा मुहब्बत के वास्ते
काफिर ही देखिये हमें
काफिर कहा किये
वो जा रहे हैं छोड़के
मां-बाप को विदेश
बैठे हैं दिल के टुकड़ों
को नासिर जुदा किये

-- डा. मिर्ज़ा हसन नासिर

(ग़ज़ल संग्रह 'ग़ज़ल गुलज़ार' से साभार)

कहर प्राकृतिक क्या बरपा है, टूट चुका लो गरीब किसान
बेमौसम बरसात से उजड़े, हरे भरे खेत और खलिहान
आपदा घोषित ही करना, केवल सरकार को आता है
भरपाई उस क्षति की कैसे होगी जिसके छूटे प्राण
ब्लाक स्तरों पर संगोष्ठी का आयोजन क्या करेगा तय?
कैसे कर्ज को माफ किया जाये कैसे होगा ब्याज निदान
पच्चीस प्रतिशत कृषि बीमा की राशि भी वितरित की जाये
इस निर्णय के हो जाने से राहत फूंक सकेगी प्राण
रिजर्व बैंक भी अपना मानक कम कर दे तो बात बने
तैंतीस प्रतिशत हो जाने से
कुछ तो कम होगा नुकसान
'शान्त' दुआ है राजनीति
इस पर ना हो जाये फिर
अन्न को उपजाने वाले की
भीड़ से हटकर हो पहचान

-- देवकी नन्दन 'शान्त'

गाँवों का उत्थान देखकर आया हूँ
मुखिया की दालान देखकर आया हूँ
मनरेगा की कहाँ मजूरी चली गई
सुखिया को हैरान देखकर आया हूँ
कागज पर पूरा पानी है नहरों में
सूख गया जो धान देखकर आया हूँ
कल तक टूटी छान न थी अब पक्का है
नया-नया प्रधान देखकर आया हूँ
लछमिनिया थी चुनी गयी परधान मगर
उसका 'पती-प्रधान' देखकर आया हूँ
बंगले के अन्दर में जाने क्या होगा
अभी तो केवल लॉन देखकर आया हूँ
रोज सदन में गाँव पे चर्चा होती है
'मेरा देश महान' देखकर आया हूँ

-- डॉ डी.एम. मिश्र

इन्सानियत दम तोड़ती है हर गली चौराहे पर
ईंट गारे के सिवा इस शहर में रक्खा क्या है
इक नकली मुस्कान ही साबित है हर चेहरे पर
दोस्ती प्रेम जज्बात की शहर में कीमत ही क्या है
मुकद्दर है सिकंदर तो सहारे बहुत हैं इस शहर में
शहर में जो गिर चुका उसको बचाने में बचा क्या है
शहर में हर तरफ भीड़ है बदहवासी है अजीब सी
घर में अब सिर्फ दीवारों
के सिवा रक्खा क्या है
मौसम से बदलते हैं रिश्ते
आजकल इस शहर में
इस शहर में अपने और
गैरों में अलहदा क्या है

-- मदन मोहन सक्सेना

जख्मी जब भी ईमान होता है, सब्र का इम्तिहान होता है
सच का साथी नहीं यहां कोई, मुखालिफ ये जहान होता है
जब भी आहट जरा सी होती है, मुझको तेरा गुमान होता है
अलग दुनिया बसाएगा अपनी, अब ये बच्चा जवान होता है
जज्बा-ए-सरफरोशी गर हो तो, हर कतरा तूफान होता है
वो समझते हैं बगावत उसको, गर कोई हमजुबान होता है
यहां हर आदमी के सीने पर
चोट का इक निशान होता है
खून इंसानियत का हो जब-जब
लाल ये आसमान होता है
आँधियों में चिराग जलते हैं
खुदा जब निगहबान होता है

-- भरत मल्होत्रा

चाह में जिसकी चले थे उस खुशी को खो चुके
दिल शहर को सौंपकर जिंदादिली को खो चुके
अब सुबह होती नहीं मुस्कान अभिवादन भरी
जड़ हुए जज्बात तन की ताजगी को खो चुके
घर के घेरे तोड़ आए चुन लिए हमने मकान
चार दीवारों में घिर कुदरत परी को खो चुके
दे रहे खुद को तसल्ली देख नित नकली गुलाब
खिड़कियों को खोलती गुलदाउदी को खो चुके
कल की चिंता ओढ़ सोते करवटों की सेज पर
चैन की चादर उढ़ाती यामिनी को खो चुके
चाँद हमको ढूँढ़ता है अब छतों पर रात भर
हम अमां में डूब छत
की चाँदनी को खो चुके
गाँव को यदि हम बनाते
एक प्यारा सा शहर
साथ रहती वो सदा हम
जिस गली को खो चुके

-- कल्पना रामानी

जिंदगी जब से सधी होने
जाने क्यूँ उनकी कमी होने लगी
डूब कर हमने जिया हर काम को
काम से ही अब अली होने लगी
हारना सीखा नहीं हमने यदा
दुश्मनो में खलबली होने लगी
नेक दिल की बात करते है चतुर
हर कहे अक से बदी होने लगी
चाँद पूनम का खिला जब यूँ लगा
यादें दिल की फिर कली होने लगी

-- शशि पुरवार

माँ गीता के श्लोक सरीखी मानस की चौपाई है
माँ की ममता की समता में पर्वत लगता राई है
घर की कितनी जिम्मेदारी थी बेटी के कंधों पर
आज विदा की बेटी तब यह बात समझ में आई है
लक्ष्मण जैसा दिखने वाला भाई विभीषण हो जाये
फिर दिल को कैसे समझायें-भाई आखिर भाई है
क्या होती है बहना कोई ऐसे भाई से पूछे
त्यौहारों पर सूना जिसका माथा और कलाई है
तन्हाई थी शादी की फिर इक प्यारा परिवार बना
फिर बच्चों की शादी कर दी फिर वो ही तन्हाई है
आज मिली है पेन्शन में बस यादों की मोटी अलबम
यों तो पिता ने जीवन भर
की लाखों-लाख कमाई है
आप भले ही माने मैंने
कह दी गजल ये रिश्तों पर
पर न गजल ही है ये
केवल जीवन की सच्चाई है

-- डॉ कमलेश द्विवेदी

धीरे-धीरे वो दिल में समाने लगे
दूर थे अब तलक पास आने लगे
अपनी कातिल अदा से लुभाने लगे
ख्वाब में रात-भर वो सताने लगे
देखकर उनका रुखसारे-जल्वा-ए-नूर
चाँद-तारे भी अब मुँह छुपाने लगे
सुर्ख-लब के फड़कते ही बेसाख्ता
पर तितलियों के भी थरथराने लगे
खुलते ही उनके गेसू, घटा छा गई
मेघ खुशियों की बूंदें गिराने लगे
मैकदे की मुझे अब जरूरत नहीं
शरबती-चश्म से मय पिलाने लगे
ऐ खुदा उनसे फौरन मिला दे मुझे
'भान' इक पल भी, जैसे जमाने लगे

-- उदय भान पांडेय 'भान'

शब्द का मंथन न कोई, प्रेम का बंधन न कोई
व्यक्त कर दे भावना को, राह में अड़चन न कोई
राह पर अपनी चला चल, व्यर्थ कर चिंतन न कोई
आज अपने कल न होंगे,
श्राद्ध ना तर्पण न कोई
नाम को मन में बसा ले
ओम सा चंदन न कोई
तृषित मन को शांति दे जो
कृष्ण सा नन्दन न कोई

-- लता यादव

उत्सव

'जय-जय गंगे।' शहर के सबसे रईस व्यवसायी साधुराम अपने भगत झोले में मोबाइल फोन रखते हुए अपने खास आदमी को इशारे से बुलाते है।

'दिवाकर कैसी तैयारी चल रही है।'

'आपके कहे अनुसार पूरी पुख्ता तैयारी हो रही है- देखिएगा इस बार कुम्भ मेले का ये सबसे आकर्षक और भव्य पंडाल होगा।'

साधूराम मुस्कराते है और चारों ओर एक तेज नजर दौड़ाते है। चारों ओर इसी उत्सव की तैयारियां जोरों पर थी, हरी नाम, राम नाम के साथ इस महा उत्सव की तैयारी प्रारम्भ हुई। एक तो वर्ष का बड़ा मेला, फिर पवित्र संगम किनारे और उस पर देश भर से आने वाले साधुओं का जमघट। 'देखो धन की परवाह मत करना और ध्यान रखना कि जब तक उत्सव चल रहा है तब तक किसी साधू को भूखा न जाने देना।'

'जी बिल्कुल रखूँगा आखिर अतिथि-देवो भवः।'

'देखो मैंने हिमालय में साधनारत एक महात्मा को बुलाया है और तुम्हारा काम होगा कि पंडाल में ज्यादा से ज्यादा साधुओं की भीड़ जुटाना और मैं दिखा दूंगा कि मैं जितना अच्छा व्यवसायी हूँ उतना भक्त भी हूँ।'

'जी वो तो है बिल्कुल-साँच को आँच नहीं।' पूर्ण निष्ठा से वह सर झुका कर कहता है।

'मैंने अब तक धन कमाया है और अब मैं धन धान्य से ही भक्ति कमाऊँगा और इस काम में मैं कोई कमी नहीं देखना चाहता।' फिर साधूराम व्यवसायी अपनी नजर पंडाल की सजावट में लगे मजदूरों की ओर डालता है।

'वो देखो-वो मजदूर वहाँ बैठा क्या कर रहा है ?' दोनों उस ओर बढ़ जाते है।

'ऐ, ये क्या हो रहा है? यहाँ काम चोरी नहीं चलेगी।'

वह वृद्ध मजदूर जल्दी से अपनी हँफनी संभाल लड़खड़ाता फिर से ढेला उठा लेता है। इस तरह दिवाकर आगे बढ़ता जाता है।

'ये क्या इन पत्थरों के ढ़ेर पर ये किसका बच्चा है- ये पत्थर क्या इसके खेलने की जगह है? इसे जल्दी यहाँ से हटाओ, इन पत्थरों से श्री श्री महादेव का सिंहासन बनेगा। कमबख्तों ने पत्थर दूषित कर दिए।'

दिवाकर की तेज आवाज सुन कर एक मजदूर औरत जल्दी से दौड़ कर आती है और अपने दूधमुहें बच्चे को उठाकर मिट्टी में बैठा देती है।

फिर दिवाकर पंडाल के दूसरे कोने में देखता है। जहाँ एक आठ नौ साल की एक मजदूर लड़की अपने खाने की पोटली खोल रही थी।

'अरे! ओ! ये क्या करती है, यहाँ अपना गंदा पोटला मत खोल और अभी तो दोपहर भी ठीक से नहीं ढली अभी से खाने लगी, चल काम कर, नहीं तो दिहाड़ी में से सिर्फ दो रुपया दूंगा।'

सभी मजदूर आवाज को निर्देश और नियति समझ काम में तत्पर हो जाते हैं। दिवाकर वहाँ खड़ा कहता है- 'ऐसे बीच बीच में काम छोड़ खाने या घर जाने की बात की तो याद रखना सीधे घर ही भेज दूंगा, कामचोर कहीं के।'

इस तरह मजदूरों को हड़काकर दिवाकर बड़े गर्व से मुस्कराता हुआ साधुराम की तरफ देखता है। उनके चेहरे पर भी मुस्कान देखता है, जो उसके लिए पुरस्कार की तरह थी। फिर साधुराम अपने भगत चोले की आस्तीन उठा कर अपनी महंगी सी घड़ी में समय देखकर अपनी कार की तरफ बढ़ जाता है।

-- अर्चना ठाकुर

खुशबू चंदन की

'अरे ये किताब! ये मेरी कहानी संग्रह आपके हाथ! आज कैसे मुझे पढ़ने की इच्छा हुई!'

'तुम्हें तो कब से पढ़ रहा हूँ पर जान ही न पाया कि तुम छुपी रुस्तम भी हो। क्या लिखती हो! आज पता चला। एक कहानी पढ़कर तो हंसी ही नहीं रुक रही।'

'कौन-सी कहानी पढ़ आप खिलखिला पड़े जनाब?'

'अरे ये वाली 'जाहिल पिया'! कहीं इस कहानी के जरिये मुझ पर तो गुबार नहीं निकाली?'

'हहहह... तुम भी न। सब मर्द एक जैसे होते हो, शंकालु। सब इमेजिनेशन हैं। सच्चाई तो एकाध पर्सेंट होगी, समझे बुढ़ऊ।' दोनों ही उन्मुक्त हंसी हंसने लगे।

'एक बात पुछूं?'

'हां हां पूछो, आपको कब से इजाजत लेने की जरूरत पड़ने लगी! '

'मेरी हर आवाज पर तुम सामने होती थी। बच्चों को भी कभी भी अकेले एक पल नहीं रहने दी। फिर ये कहानी के लिए समय कब निकाल लेती थी तुम?'

'काम तो हाथ करते थे न, दिमाग तो कहानी संग्रह करता था। '

'तुम्हारी कहानियों की तरह तुम्हारे जबाब भी लाजबाब हैं।'

'हुँह!!' चलो अब खाना खा लो बहुत तारीफ हो गयी।'

'हा चलो खा ही लूं, नहीं तो 'भूखा पति' कहानी लिख दोगी।' फिर से ठहाका गूंज उठा कमरे में।

-- सविता मिश्रा

नियम

रूल बना दिया था उसने। आज से कुछ भी हो सब एक साथ डाइनिंग टेबल पर डिनर करेंगे। दिन रात फोन में आँखें गढ़ाए रहने वाले उसके बच्चे परस्पर संवाद भी लिखकर करते ।

रसोई से डोंगे लाते हुए उसने पति से बिटिया को आवाज लगाने को कहा। तीन बार आवाज लगाने पर भी जब उसका जवाब न आया तो पति और बेटे ने फेमिली ग्रुप में लिखा 'हे बार्बी जल्दी डाइनिंग टेबल पर आओ, ज्वालामुखी फट गया तो खुद जिम्मेदार रहोगी।' अगले ही पल बार्बी टेबल के पास कानों में हेड फोन लगाए खड़ी थी ।

आज उलटे हाथ की तरफ पानी की जगह सबके मोबाइल थे। उसकी बातो को अनमने हो सुनते हुए पति बच्चे उसके किचेन की तरफ मुड़ते ही मोबाइल देखने लगते ।उसने भी रसोई में अपने सेल फोन में झाँका तो बिटिया लिख रही थी- 'पा, आज आपकी हिटलर नए नियम कानून क्यों बना रही?'

'बेटा २५ साल बाद भी मुझे नियम से छूट नहीं मिलती, नित नए नियम बनते।'

'पा मेरी दोस्त मेरे साथ चैटिंग कर रही थी।' अजीब एमोट बनाते बेटे ने लिखा।

मुस्कराहट के साथ उसने भी लिखना शुरू किया- 'शुक्रिया अपने-अपने कमरे से खाने के मेज तक आने का। कल का नियम होगा अपने-अपने फोन को अपने-अपने कमरे में आराम करने दें। उनका भोजन चार्जिंग से उनको मिलता रहेगा। आप अपने हाथों का इस्तेमाल यहाँ सिर्फ खाने के लिए करे।'

उसने फोन रखकर आम की प्लेट उठायी और टेबल पर सबके हैरान परेशान चेहरे देखने लगी जो उस से दया की उम्मीद लगाए थे। लेकिन उसको दृढ़ता से अपने नियमों का प्लान बनाना था। इस मुए व्हाट्सअप फेसबुक से दूर घर को कुछ पल जीवंत पल देने के लिए।

-- नीलिमा शर्मा 'निविया'

कविता

मौत तुम भी क्या खूब खेल खेलती हो?
जब हमारे दिल में जीने की चाह होती है
तुम आ टपकती हो, तमाशा करती, मजा लेती हो।
जब हम मरना चाहते हैं
तुम ऊबा देने वाली प्रतीक्षा करवाती हो!
मानो सदियों तक आओगी ही नहीं।
आज भी तुम गलत समय में आई हो
जब मैं ख्याति के शिखर से थोडा-सा दूर हूँ।
पता है तुम बेवक्त नहीं आती/वक्त की पाबन्द हो
आगाज के दिन ही हमारा अंजाम भी तय हो चुका है
मगर क्या आज मेरे वास्ते
तुम्हारी वो घड़ी थोडा
आगे नहीं खिसक सकती
मै जानता हूँ तुम्हारी गोद में
असीम सुख है, महाशांति है
कभी न टूटने वाली निंद्रा है
और है...कभी न खत्म होने वाली खामोशी!

-- महावीर उत्तरांचली

स्वतंत्र हुऐ हो गये हमें आज अड़सठ साल
मगर देखो आज भी मेरा भारत बेहाल
भले भगाया अंग्रेजों को इस सीमा के पार
मगर आज भी बसता है उन फिरंगियों का अधिकार
भाषा को अपनी खा गये हम स्वयं बनकर अंग्रेज
पहनावा और रहन सहन से खुद का किया परहेज
भूल रहे वो शिष्टाचार जो काम किसी के आते
फूट डाल राजनिति को ही बस हम अपनाते
कहीं भी बहन बेटियां आज नहीं सुरक्षित हैं
वहशीपन की हरदम यहां पर जीत है
भूल गये बड़ों का आदर छोटों से स्नेह करना
बस दिखता है हर तरफ आज
भाई भाई का लड्ना
कैसे मानू हमने आजादी है पाली
स्वतन्त्र कराया देश को मगर
विचारों से है खाली

-- एकता सारदा

नहीं दिखा तुम्हें मेरा दर्द/मेरी पीड़ा और मेरा डर
मेरे घुटते शब्दों के साथ/मेरा मरता वजूद
करते गए तुम अनदेखा
दिखे तुम्हें सिर्फ मेरे दो उभार
जो सींचते हैं सृष्टि का आधार
पर तुम्हारे लिए तो वो थे
गुलाब के फूल मखमल में लपेटे
रौंदते गए जिसे तुम
और दिखा तुम्हें/अपनी मर्दानगी साबित करने का द्वार
वो द्वार जो नयी संरचना को जन्म देती है
उसमें तुम रचते गए- कलंक, घृणा, मद !
तिस पर भी जी नहीं भरा/तो नोच-खसोट दिया मेरा जिस्म
रक्त रंजीत मेरा शरीर, आत्मा और अस्तित्व
पड़े रहे निढाल/और अट्टहास करता शब्द 'बलात्कार'

-- स्वाति कुमारी

मैंने देखा मोची/चौराहे के एक छोर पर
अपने छोटे-छोटे औजारों के बीच,
चेहरे पर शान्तिः का भाव लिये,
एकटक लोगों को देख रहा है/लोग आते हैं
उसके सामने उठा के पैर रख देते हैं
वह व्यक्ति बिना कुछ सोचे,
पैर से जूते को उतारता है/अपने कार्य में जुट जाता है
अपने पथ से नहीं होता विचलित
बहुत ही प्रेम से देखता है उन दो जोड़ी जूतों को।
उसे अपार खुशियाँ मिलती है
क्योंकि गंदेले जगहों से/वह जूता आया है उसके पास
नव जीवन पाने के लिए
वह मोची लगन से देता है
उसे चलने की एक नयी जिन्दगी।
उसे उसकी कीमत मिलती है
कुछ मुद्रा के रूप में,
उसका परिवार जिस पर टिका हुआ है

-- रमेश कुमार सिंह

पल-पल में बदले जिंदगानी/पल में मिले खुशियां अपार
पल में बिखर जाता संसार/पलों का अद्भुत खेल देखा
पलों पर टिका जिंदगी का मेला
पल में तोला पल में माशा/है अजब जीवन का तमाशा
बिखरते सपने भी एक पल में
सवंरते अरमान भी मन तन तल में
है पलों का मेल ये सारा
कभी साहिल को मिलता किनारा
कभी पल जीवन ज्यों सारा
कभी भटके पल ज्यों बंजारा
दो नैना पल पल बतियाते पल में मन का भेद बताते
पल पल की हैं ये कहानी/पल पल में बदले जिंदगानी

-- मधुर परिहार

मेरे आस-पास बड़े सभ्य लोग रहते हैं
जो-देश के उत्थान-जंग में कभी नहीं कूदते,
जो किसी के चिरे पर कभी नहीं
कर्तव्य के लिए जागरूक ना सही, लेकिन
भाई का हिस्सा हड़पने से नहीं चूकते
भाई की छोडिये साहब,
माँ-बाप की भावनाओं को
ठेस लगाने से ही नहीं,
किसी का गला रेंतने से नहीं चूकते
संस्कार की बात उन्हें सुहाती नहीं
कुत्सित-विचार, पाश्चात्य-सभ्यता पर नहीं थूकते
झूठ के आवरण से सजे-धजे
मेरे आस-पास बड़े ही सभ्य लोग रहते हैं...!

-- पूर्णिमा शर्मा

कैसे बताऊ जज्बात/प्यार की मीठी बात
ख्वाबों में मुलाकात/हर पल सिर्फ याद
बेकली बेकरारी बढ़ाकर/बन गए हो दिल के महताब
थाम के हाथ मेरा जब तुम चले थे
राह के कांटे भी फूलो जस मिले थे
जिंदगी नाम कर दी तुम्हारे
तेरी ही आहटें हैं आस पास
छूट भी जाए जहाँ सारा
मुझसे बिछड़े कभी ना
मेरी आँखों का तारा
तुम्हारे नाम से चलती है मेरी साँस
साथ दोगे सदा है अटूट विश्वास...!

-- सुनीता रातवानी

पैकेज से नाखुश दिखे लालू और नितीश
पर बिहार का आमजन झुका रहा है शीश
झुका रहा है शीश प्रगति होगी प्रदेश में
बन जाएगा स्वतः अग्रणी सकल देश में
राहुल बाबा सोच रहे हैं वो क्या बोलें
जा करके कश्मीर वहाँ की नब्ज टटोलें
कोई मौका मिले निशाना अपना साधें
या फिर विश्वभ्रमण को अपना बिस्तर बाँधें

-- मनोज श्रीवास्तव

भोली-भाली सी मासूम कली
लाड-प्यार और नाजों से पली
दुनियादारी की न थी उसे समझ
बेखौफ उड़ने की ख्वाहिश में
देखने दुनिया वो घर से निकली
देख हर चौराहे पर चकाचौंध
निरंतर आगे ही आगे बढ़ चली
सहसा एक मोड़ पर ठिठक गई
कुछ वहसी आँखे घूर रही थी
दौड़ना चाहती थी मुड़के वापस
पर तब तक बहुत देर हो चली थी
नोच नोच के बेदर्दी से काट खाया
हैवानियत का शिकार हो चली थी
तड़प रही थी उसकी मासुमियत
चीखी चिल्लाई बहुत गिड़गिड़ायी
क्रुरता की सारी हद पार हो चली थी
सुंदर दिखने वाली ये रंगीन दुनिया
बेरहम और संवेदनहीन हो चुकी थी
न सुन पाया कोई मासुम की पुकार
ये दुनिया अंधी और बहरी हो चुकी थी
कट चुके थे पर उसी नन्ही चिरैया के
आखिर क्यूँ वो अकेली उड़ चली थी
दरिंदों के इस संगमरमरी शहर में
बेटी होने की सजा जो उसे मिली थी!

-- प्रवीन मलिक

पार्क में अकेला बैठा हूँ/स्मृतियाँ हिचकोले खा रही हैं
याद है हम-तुम बैठे थे यहीं/पार्क के किसी कोने में
अचानक बरसने लगा था बदरा/कड़कने लगी थी बिजली
तुम चिपक गयी थी मुझसे/बहुत देर तक
शायद ! डर गयी थी/बिजली की कड़कती आवाज से!
आज भी कड़क रही बिजली/हो रही बरसात
सब कुछ तो है लेकिन तुम नहीं हो
काश ! तुम होती अच्छा लगता
बिजली का कड़कना
और बरसात में भीगना
झूमता दादुर जैसा
नाच उठता मयूर सा...!

-- मुकेश कुमार सिन्हा, गया

एक अहसास किसी के साथ का
किसी के प्यार का, अपनेपन का
एक अनकहा विश्वास/जो कराता है अहसास
तुम्हारे साथ का/हर पल, हर क्षण
इस क्षणिक जीवन की क्षणभंगुरता को झुठलाता
ये अहसास शब्दों से परे
भावनाओं के आगोश में
प्रतिपल लाता है तुम्हें नजदीक मेरे
लौकिकता की सीमा से परे
अलौकिक है अहसास तुम्हारा !!

-- आकांक्षा यादव

देशभक्ति

पिछले दिनों नेताओं को आजादी दिवस के उपलक्ष पर देशभक्ति का भूत सवार हो गया. पर नेताओं को भाषण से ज्यादा कुछ आता भी तो नहीं है, तो माननीय नेताजी भाषण से ही अपनी और अपने परिवार की देशभक्ति की झूठी लीलाएँ बघारने लगे.

जब कुछ ज्यादा ही नेताजी उत्तेजित हो गए तो बेनाम कवि से रहा नहीं गया और बोल पड़ा, 'नेताजी आपने क्या किया है देश के लिए?'

नेताजी कुछ सकपकाए। अपने भाषण के बीच ऐसा अवरोध। अवरोधक को पार करते हुए बोल पड़े नेताजी, 'अरे! मैं भी अगर उस जमाने में पैदा हुआ होता तो अपनी जान की बाजी लगा देता, अपने खून का एक-एक कतरा बहा देता देश की खातिर और आज मेरा नाम और तस्वीर दोनों स्वर्णाक्षरों में छपी होतीं!' और नेताजी के समर्थकों की तालियां शुरू हो गईं।

बेनाम कवि देशभक्त ने फिर तालियों की आवाज को काटा और बोला, 'लेकिन नेताजी! आपकी फोटू तो काले अक्षरों में सार्वजनिक शौचालय में लगी है!'

इस बार इंसान नहीं बल्कि वहां पसरा सन्नाटा तालियां बजा रहा था!

-- सूर्यनारायण प्रजापति

अंकुर

आज अचानक अखबार में आई.ए.एस. में टॉप सोलह में जिस लड़की का फोटो छपा 'भावना पंडित' परिचित सा लगा। ध्यान से देखा तो सब कुछ याद आ गया, ये तो मेरे पड़ोसी मोहन पंडित की बेटी है। इनका परिवार बहुत ही साधारण था।

दादाजी सोहन पंडित पंडिताई से जीवनयापन करते थे, सादा जीवन उच्च विचार के प्रतीक। वे यदि इस समय होते तो निश्चय ही १०० वर्ष के होते। पर बचपन में घर में घटी कुछ घटनाओं से उनकी विचार धारा में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। ११ साल की उम्र में पिता का साया उठ गया, घर में तीन विधवा औरतें जिनमें बहन बाल विधवा, भुआ जो दहेज ने लील ली, बेटी की जिंदगी, तो गम में पगलाई सी। ये ३ महिलाये अनपढ़ होने और बाल विवाह के दुष्परिणाम से अभिशप्त सी जिंदगी जी रही थी।

ये सब देख कर उनके मन में उस जमाने नव चेतना का अंकुर फूटा और उन्होंने संकल्प लिया कि अब इस घर में ऐसी परिस्थितियों की पुनरावृत्ति नही होने देंगे। कन्या भ्रूण बचाएंगे-पढ़ाएंगे, उनको सम्मानित जिंदगी देंगे। दहेज न लेंगे, न देंगे। और आज ये भावना की प्रगति उनके नव चेतना के अंकुर का ही परिणाम है जो पेड़ के रूप में उभर कर आया है।

-- गीता पुरोहित

कहानी

घरेलू हिंसा

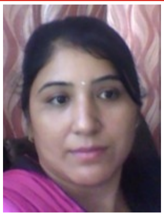

कामनी गुप्ता

रीना बहुत ही सुन्दर, सुशील और एक अच्छे परिवार से ताल्लुक रखने वाली साधारण सी लड़की थी। यूं तो संयुक्त परिवार में रहने के कारण उसने भी अपने घर में छोटे-छोटे झगड़े और जिन्दगी के कईं अच्छे बुरे उतार-चढ़ाव देखे थे पर अपने चचेरे भाई बहनों के संग खेलना और प्यार से रहना उसे बहुत अच्छा लगता था। एक दूसरे से निःस्वार्थ प्यार एक दूसरे की फिक्र और एक दूसरे के लिए कैसे जीया जाता है यह उसने संयुक्त परिवार मे रहकर ही सीखा था। कहीं ना कहीं यह कहावत भी उसे अच्छी लगती थी कि एक और एक गयारह होते हैं क्योंकि जब भी घर पर कोई मुसिबत आती थी तो सभी भाई-बहन और बड़े एकजुट होकर मुकाबला करते थे। रीना की शादी भी एक संयुक्त परिवार में हुई ससुर जी शादी के कुछ दिन बाद ही गुजर गए। देवर की शादी भी कुछ देर बाद हो गई।

शुरू में तो सब ठीक चलता रहा। फिर रीना की देवरानी प्रियंका रीना को बात-बात पर नीचा दिखाने लगी क्योंकि प्रियंका एक अमीर घर की इकलौती बेटी थी। ससुर जी की अचानक मौत के बाद रीना के पति योगेश और देवर ने नया काम संभाला था उनकी फैक्ट्री थी जिसमे दोनो भाई मिलकर काम करते थे। प्रियंका की छोटी-छोटी बातों को रीना नजरअंदाज करती रही। सबके साथ मिलकर रहना तो रीना बखूबी जानती थी। जैसे दिन बीतते गए प्रियंका के नखरे और अपने माईके वालों की अमीरी की धौंस ससुराल वालों पर और रीना पर ह वी होने लगी अब तो देवर भी योगेश को बात बात पर जबाव देने लगा था और मनमानी करने लगा था। सास तो चुप ही रहती थी रीना ने कईं बार सास से कहने की भी कोशिश की प्रियंका के व्यवहार के बारे में पर रिश्तेदारों और दुनियादारी के लिहाज से वो चुपचाप प्रियंका की बदतमिजियां बरदाशत करते रहे। रीना भी समझौते करती रही और किसी से शिकायत नहीं की। किसी ने इतनी गंभीरता से इस बात को नहीं लिया सोचा कि आज नहीं तो कल प्रियंका समझ जाएगी।

अब तो रीना के पति और देवर में भी झगड़े बढ़ने लगे थे। प्रियंका जैसे कहती उसका देवर वैसा ही (शेष पृष्ठ १७ पर)

अंतर्ध्यान

वह गरीब किन्तु ईमानदार था. ईश्वर में उसकी पूरी आस्था थी. परिवार में उसके अतिरिक्त माँ, पत्नी एवं दो बच्चे थे. उसका घर बहुत छोटा था, अतः वे सभी बड़ी असुविधापूर्वक घर में रहते थे. ईश्वर को उन पर दया आई, अतः ईश्वर ने प्रकट होकर कहा- 'मैं तुम्हारी आस्था से प्रसन्न हूँ, इसलिए तुम लोगों के साथ रहना चाहता हूँ ताकि तुम्हारे सारे अभाव मिट सकें.'

परिवार में खुशी की लहर छा गई. क्योंकि घर में जगह कम थी, अतः उसने अर्थपूर्ण ष्टि से माँ की ओर देखा. माँ ने पुत्र का आशय समझा एवं खुशी-खुशी घर छोड़कर चल दी ताकि उसका पुत्र अपने परिवार के साथ सुखपूर्वक रह सके.

'जहां माँ का सम्मान नहीं हो, वहां ईश्वर का वास कैसे हो सकता है.' ईश्वर ने कहा और अंतर्ध्यान हो गया.

-- त्रिलोक सिंह ठकुरेला

देशपाल

अगले दिन देशपाल को पुलिस पकड़ कर ले गई। वी. आई. पी. कालोनी का एक भी व्यक्ति यह समझने में सक्षम नहीं था, कि एस.पी. साहब के चौकीदार को पुलिस ने क्यों पकड़ा? सुबह अखबार की खबर ने देशपाल को करोड़ों की चोरी का आरोपी सिद्ध कर दिया। देशपाल के बूढ़े माँ-बाप और अनपढ़ बीवी महीनों एस.पी. साहब के फाटक पर सिर पटकते रहे, गुहार लगाते रहे, फिर भी कुछ न हुआ।

एक जनहित याचिका को सुनकर कोर्ट ने मामले की जाँच हेतु 'विशेष दल' की नियुक्ति कर दी। जाँच के बाद न्यायालय द्वारा देशपाल का बयान सार्वजनिक किया गया- 'मंत्री जी का बेटा रेप-केस में आरोपी था और मंत्री जी का नाम रेलवे घोटाला में छापने वाले पत्रकार की हत्या। दोनों मामलों की जाँच एस.पी. साहब के हाथों में थी। उस दिन फोन पर एस.पी. साहब कह रहे थे- 'आपने दौलत-शोहरत सब दिया है, तो आपका नाम कहीं भी नहीं आ सकता। रेप-केस और घोटाला सब हवा हो जाएगा।' बस मैंने इतना ही सुना था।'

-- राम दीक्षित 'आभास'

(पृष्ठ १६ का शेष) **कहानी : अंधविश्वास**

बेटा ठीक हुआ था तो स्ट्राबरी जाम ना मिलने की वजह से ठीक हुआ था।

इस शख्स की बात सुन कर हम सब हैरान हो गए। अब ऐलसी भी आ गई थी और हमें टेबल खाली करने के लिए कह दिया क्योंकि लाइब्रेरी बंद होने का वक्त हो रहा था। हम ने ऐलसी को रिटायरमेंट की फिर मुबारकवाद दी और लाएब्रेरी से बाहर आ गए। ■

बड़ी होती लड़की बिन्दास थी/उफान थी/तूफान थी
घूरती निगाहों ने/बना दिया उसे/घबरा घबरा
कर हकलाते हुये/चलने वाली लड़की
माता-पिता की नसीहतें
उसके लिये कभी खत्म ही नहीं हो पाई
तुम लड़की हो..../बस ये ही रटाती थी माँ
बड़ी होती लड़की हरफनमौला थी
उड़ती तितली थी/फूलों की खुशबू थी
अश्लील तानों ने बाँध दिये पंख उसके
छूने की अनधिंत/कोशिश मनचलों की
लील गये खुशबू उसकी/बड़ी होती लड़की
मासूम थी, बेखौफ थी, जीवंत थी
सारी सरहदें उसी के लिए
हँसी को कैद कर/मासूमियत को खो बैठी
बड़ी होती लड़की
पीढी दर पीढी चली आ रही
रोक टोक ने छींटाकशी ने
बदल दी वो बड़ी होती लड़की
माय चॉइस का नारा देती
वो बड़ी होती बदलती लड़की

-- अंजलि शर्मा 'अंजुमन'

बदलते रुत की हवायें/हल्का सर्द एहसास लिये
मेरे कमरे में आई हैं! साथ ही कुछ भूले बिसरे
पलों की यादें कैद कर लाई हैं
जिन्होनें मेरे अंतर्मन में/हलचल सी मचा दी है!
एक चिर-परिचित खुशबू हवाओं को महका गई है!
जब तुम पास होते/तो अकसर में तुम्हें
कहती कि ये खुशबू/मुझे बहुत पसन्द है
और तुम ढेर सारा/इत्र मुझ पर छिड़क दिया करते
और एक दिन
अचानक तुम मेरी
जिंदगी से दूर चले
गये आखिर क्यों??
इसका जबाब में
आज भी ढूँढ रही हूँ...

-- राधा श्रोत्रिय 'आशा'

राखी के कच्चे धागों से लिपटे/स्नेह के मजबूती से बंधे
महीन तारों के छोरों पर बंधी गांठ को
जाने किसने खोल दिया
जो स्नेह उन कच्चे धागों में/मजबूती से बंधा होता था
इनकी डोर से छूट ना जाने कहाँ बिखर गया
और छूटकर बिखरकर पवन के संग-संग
जाने किस ओर उड गया
कहाँ छूट गया है वो स्नेह
जो अब ढूंढे से भी नही मिलता
धागों के इन सूत्रों में बाकी रह गया है
तो सिर्फ बनावटीपन, खोखलापन
और झूठा दिखावा

-- शशि शर्मा 'खुशी'

गीत-गंगा

जग से क्यूँ है मोह बढ़ाता, कौन हुआ किसका बंजारा
मिले काफिले उन्हें भुला दे, कौन साथ चलता बंजारा
कौन रुका है यहाँ सदा को, कौन ठांव होता अपना है
सभी मुसाफिर हैं सराय में, एक एक सबको चलना है
पल भर हाथ थाम ले काफी, सदा साथ सपना बंजारा
अच्छा बुरा कौन है जग में, जो भी मिलता साथ उठाले
कौन है अपना कौन पराया, जो भी मिलता गले लगाले
छोड़ यहीं जब सब जाना है, क्यूँ है फिर चुनता बंजारा
आज नहीं, न कल था तेरा,
आने वाला कल क्या होगा
मेंहदी रचा हाथ में कोई,
इंतजार कब करता होगा
थके कदम पर नहीं है रुकना,
नियति तेरी चलना बंजारा

-- कैलाश शर्मा

भारत की नव पीढ़ी तुम इस देश का संबल बनो
माहौल कीचड़ का है तो क्या तुम इसमें कमल बनो
जो जलना चाहता है उसके लिए अंगार बनो
चैन-सुकूं जो चाहे उसके लिए जलधार बनो
चंड-प्रचंड ज्वाला कहीं, कहीं गंगाजल बनो
वतन की खुशहाली तेरी आँखों का सपन हो
दिल में हो वतन परस्ती, सर पर कफन हो
हर कदम हो ढ़ता भरा, कभी न विचल बनो
तोड़ दो उन हाथों को जो छीनते गरीब का निवाला
वतन से जो करते गद्दारी, कर दो उनका मुंह काला
अमां की रात परास्त कर, तुम चांदनी धवल बनो
जाति-धर्म की मानसिकता से तुम्हें उबरना होगा
मन में सिर्फ एकता-अखंडता का भाव भरना होगा
आजादी के खेत में प्रेम भाईचारे की फसल बनो
अधिकारों के मद में अपने
कर्तव्यों को मत भूलो
उड़ान हौसलों की ऐसी हो
कि हर बार गगन छूलो
सारी सृष्टि नत-मस्तक हो
तुम इतने मुकम्मल बनो

-- आशा पाण्डेय ओझा

आज जो ये आज है/कल नहीं रह जाएगा
वारिश के बादलों सा/कुछ बरसेगा कुछ रह जाएगा
हर बात हर हस्ती हर बस्ती खाक में मिल जाएगी
फितरत आदमी की कहां कहां ले जाएगी
भाषा परिभाषा और नियमों का क्या
कुछ नहीं रह जाएगा/बाकी अगर रहा कहीं तो
मिथक बस कहलाएगा
ना तुम होंगे ना रहूंगा मैं
प्रेम अमर बस रह जाएगा
ये आज जो आज है
कल अतीत बन जाएगा

-- राजीव उपाध्याय

जश्न मनाओ, ताली पीटो और वतन पर नाज करो
संसद चाहे ठप्प पड़ी हो पर ऊंची आवाज करो
दो जवान के बलिदानों पर एक दरिंदा पकड़ा है
कोई तीर नही मारा जो कासिम जिंदा पकड़ा है
सीने आज तुम्हारे बेशक फख्र समझ कर फूले हैं
लेकिन शायद सब मेमन की खातिरदारी भूले हैं
भूल गए अफजल की फाँसी पर तुम रोने वालों को
भूल गए बटला हाउस पर कांटे बोने वालों को
भूलगए क्या भटकल का मजहब दिखलाने वालो को
और वही अजमल कसाबमासूम बताने वालों को
हमदर्दों का देश यहाँ पर चाहत बाँटी जाती है
यहाँ करें इफ्तार वहां पर गर्दन काटी जाती है
जो पहले से जेलों में हैं बन्दरहे खुशहाली में
दहशतगर्दी मौज मनाती बिरियानी की थाली में
कासिम जाए जेल वहां पर हांडी बड़ी चढ़ा देंगे
बकरे मुर्गे की थोड़ी सप्लाई और बढ़ा देंगे
कृपा रहेगी इस कासिम पर भूषण और शकीलों की
आधी रात लगी देखोगे लाइन कई वकीलों की
और मिडिया वाले कुछ ऐसी कवरेज दिखाएंगे
केवल कासिम के ही अब्बू अम्मी को दिखलायेंगे
इधर शहीदों के आँगन के सपने टूटे लगते है
दहशत से लड़ने के ये अंदाज अनूठे लगते हैं
ये गौरव चौहान कहे सारे रस्ते मुड़ जाएंगे
कासिम क्या लखवी हाफिज
के परखच्चे उड़ जाएंगे
पाकिस्तान तभी रगड़ेगा
नाक रहम की आशा में
जिस दिन भारत बोल उठेगा
इजराइल की भाषा में

-- गौरव चौहान

आजादी की धुन में हमने कितने साल गुजारे हैं
अंग्रेजों से टक्कर ली है हम हिम्मत कब हारे हैं
गोरों के उस राज में हमने ऐसे भी दिन काटे थे
गर कोई आहट कान में आती सोते से उठ जाते थे
दिल ही दिल में गीत हमेशा आजादी के गाते थे
और जरा भी लब खोले तो हमको हंटर मारे हैं
हिन्दू मुस्लिम प्यार से रहते भारत के ऐवानो में
फर्क कोई महसूस न होता अपनों में बेगानो में
जिक्र मुहब्बत का होता है गजलों में अफसानों में
दुश्मन के भी काम आते हैं ये किरदार हमारे हैं
वीर दिलावर इस भारत में साधू पीर पैगम्बर हैं
इसमें गंगा जमुना बहती
झरने और समंदर हैं
नस्लो-रंग का फर्क नहीं
सब इक मिट्टी के गागर हैं
इक दूजे से प्यार है हमको
ये अंदाज हमारे हैं

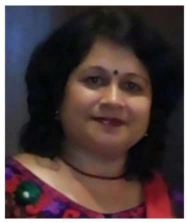

-- नमिता राकेश

(तीसरी और अंतिम किस्त)

लव जिहाद और आईने का सच

सुधीर मौर्य

'लड़की सवालो के घेरे में थी। घर का हर मुंह उससे बीती रात और उस लड़के के बारे में दरयाफ्त कर रहा था। तमाम मारपीट के बाद लड़की ने तड़पकर कहा वो सज्जाद से प्यार करती है।'

'लड़की को कमरे में बंद करके समझाया गया। नहीं मानने पे उसे दूसरे शहर में किसी रिश्तेदार के यहाँ भेज दिया गया। लड़की बड़े घर की थी पर उसके घर वाले उससे भी बड़े। लड़की कसमसाकर रह गई।'

'आज सज्जाद का कुछ पता नहीं है उसकी बूढ़ी माँ रात दिन अश्क बहाती है और सारिका को किसी नारंगी के अधेड़ के साथ बांध दिया गया है। जबरन। जिसकी टांगों के बीच वो दबी रहती है। कोई नवयुवक भला नारंगी बिरादर में घर से बाहर रात बिताई लड़की से शादी कहाँ करता है। अब वो कमसिन लड़की सारिका अधेड़ के बच्चे पैदा कर रही है।'

ये दूसरी कहानी अब्दुल ने खत्म की। विजय के चेहरे को देखा जहाँ उसे हरे रंग से अब कोई खौफ नजर नहीं आया। सिगरेट के कश लिए गए। जाते वक्त अब्दुल ने कहा- 'तो मियां जो तुम्हारी लड़की हरा रंग पसंद करती है तो उसमें कोई बुराई नहीं है। बल्कि ये तो शबाब का काम है।'

विजय भी लगभग अब्दुल की बात से अघोषित रूप से सहमत होकर वहां से अपने घर को आ गया। जहाँ उसकी लड़की हंस हंसकर किसी से बात कर रही थी। विजय ने सोचा जरूर दूसरी ओर अफरोज होगा। पर अब इस बात ने उसे डराया नहीं था।

अब्दुल की कहानी सच थी या मनगढंत। अब ये कौन जाने किसे पता। पर अब्दुल की सुनाई कहानियो का असर विजय पर कुछ यूँ हुआ कि उसने अपनी अल्पव्यस्क नासमझ लड़की को हरे रंग में रंगने की मूक सहमति दे दी।

आरती अब घर देर-सवेर पहुँचती। घंटों मोबाईल में उलझी रहती। कभी-कभी अपने घर के सामने अफरोज कीबाइक के पीछे से उतरकर हाय-बाय करती। विजय के सामने ही गुनगुनाती हुई अपने कमरे में जाती- 'मोहे अंग लगा ले रे, मोहे रंग लगा दे रे।' विजय अपनी लड़की पे रंग चढ़ते देख रहा था। और खामोश था। आखिर अब्दुल ने कहा था 'प्यार-मुहब्बत को रोकना पाप होता है।' और उसकी लड़की प्यार ही तो कर रही थी। अब उसका प्रेमी नारंगी रंग वाला था या हरे रंग वाला उससे क्या फर्क पड़ता था। वैसे भी अब्दुल के कहे अनुसार दोषी गेरुए रंग वाले होते है हरे रंग वाले नहीं।

एक दिन नारंगी लड़की घर न आई। शाम ढली। रात हुई। सुबह हो गई। लड़की नदारद। विजय ने इधर-उधर ढूंढा। नाते-रिश्तेदार, लड़की की सहेलियों के घर। लड़की नहीं मिली।

लड़की का पता चला कुछ दिनों बाद। अफरोज के घर पे। अब्दुल ने सलाह दी, शांत बैठो। पुलिस और गेरुए संगठन वालों के पास मत जाना। नहीं तो डॉली और सारिका जैसा हाल आरती का भी कर देंगे ये गेरुए रंग वाले गुंडे। विजय ने सोचा समझा और अपनी लड़की के सुखद भविष्य की कामना करते हुए उसे अफरोज की बीवी कबूल कर लिया। उसने ज्यादा जानकारी भी नहीं ली बस इतना ही जाना कि अब उसकी लड़की का नाम आरती नहीं रहा और वो काले बुर्के में लिपटी रहती है। अफरोज की फैमली ने उसे ज्यादा जानकारी लेने भी नहीं दी।

कुछ समय बाद उड़ती खबर विजय के कानों में पड़ी कि उसकी लड़की माँ बनने वाली है। सोलह साल की उम्र में लड़की का माँ बनना हरे रंग की रवायत में जायज है। लड़की अब हरे रंग में पूरी तरह रंग चुकी थी। पर उसका हरा रंग उसके जिस्म पे लिपटे काले रंग के बुर्के ने ढक लिया था। काले बुर्के ने नारंगी लड़की की जिन्दगी से रंगों को विदा कर दिया। उसकी आँखों से ख्वाब रुखसत हो गए थे।

अब उसकी आँखें रात-दिन रोती रहती थीं। लड़की दिन-रात गाली सुनती और बात-बात पर पिटती थी। उसकी देह पर अफरोज लात-घूंसों से नील डालता। जो कुछ समय बाद हरे हो जाते। यूँ इस तरह लड़की की देह खुरच-खुरच कर नारंगी रंग उतार कर हरा रंग चढ़ा दिया गया था। उसे काफिर की औलाद कहकर हरे रंग के मर्द और औरतों की सेवा करने का हुक्म दिया गया था। अब लड़की हरे रंग के मकान में कैद रहती। और वो किसी से मिल नहीं सकती थी। अपनी लड़की के माँ बनने की खुशी जताने विजय हरे रंग के घर में गया। साथ में ढेरों फल और मेवा। पर उसे बाहर के कमरे से टरका दिया गया। लड़की से बिना मिले ही।

विजय एक-दो बार और गया। मुलाकात न हुई। हाँ एक दिन राह में उसे कोई एक पर्ची पकड़ा के भाग गया। अफरोज के घर का शायद कोई नौकर। नारंगी रंग का होगा तभी उसे आरती पर दया आ गई और वो उसकी चिट्ठी उसके बाप को दे गया।

विजय ने चिट्ठी पढ़ी। सन्नाटे में बैठा रहा। रोता रहा। किस बेरहमी से उसकी लड़की पे हरा रंग चढ़ाया गया था। मारपीट, गाली-गलौज रोज के काम थे। नारंगी रंग की लड़की, हरे मकान में कैद थी नरक भोगने को। लवजिहाद का असली रूप विजय के सामने था। वो अब अब्दुल को कोस रहा था। वो जान चुका था अब्दुल की कहानी मनगढंत थी, सच नहीं।

कुछ देर सोचते रहने के बाद विजय उठा और चल दिया। उसे जाना था अब पुलिस स्टेशन और गेरुए रंग के संगठन के पास। उसे अपनी मासूम और अबोध लड़की को हरे रंग के जुल्म से आजाद करके दुनिया को लव जिहाद का असली रूप दिखाना था। (समाप्त)

समाज सेवा

मीनू झा

'देख उतना भी डिफिकल्ट नहीं है जितना तू सोच और बना रही है। बस थोड़ा सा समय निकालना पड़ेगा यार, घर-गृहस्थी, पति-बच्चे कहीं नही जा रहे। कुछ अपने लिए भी तो सोच। थोड़ी सी समाजसेवा बैठे बिठाए पुण्य ही नहीं ढेर सारी शोहरत भी देती है, बस एक दो बार मीडिया को तू नजर आ जाएगी तो शहर की एक जानी-पहचानी हस्ती बनते देर नहीं लगेगी तुझे। मुझ पर यकीन कर !' सहेली वंदना जो खुद एक समाजसेविका थी, मुझे इसके गुर बता रही थी।

पर मैं हर बार उसके साम-दाम-दंड-भेद के जाल में फंसते-फंसते रह जाती, हालांकि उसके साथ एक-दो बार मैं गई अवश्य थी, पर वो बनावटी चोंचले, सौ रुपयों की चीज देते हुए सौ फोटो मुझे कभी भाए नहीं। आज भी ऐसे ही कार्यक्रम में ले गई थी मुझे, जहां लिपे-पुते चेहरों की खोखली सहानभूतियों और आगे आने की ललक में मची मारा-मारी के बीच जब मेरा दम घुटने लगा, तो मैं वहां से निकलकर बाहर खड़ी हो गई, जहां पीछे से आई वंदना मेरी घुटन को घर जाने की हड़बड़ाहट समझकर मुझे समझा रही थी।

जैसे तैसे उससे विदा लेकर घर पहुंची तो एक पुरानी परिचिता इंतजार करती मिली, जो पहले मेरे घर सहायिका हुआ करती थी, असमय की बुजुर्गियत और बीमारी अब उन्हें कामकाज करने की इजाजत तो नहीं देती, पर वो गैरतमंद स्त्री लोगों के घर पर्व-त्योहारों पर पैर रंगकर होने वाली आमदनी से अपना गुजर बसर करती है। मैंने पूछा- 'तबियत तो ठीक है ना अब आपकी.' बोलीं 'ना दीदी, पर दुखियों के रोग बिछावन सटने से नहीं, कमाने खाने से जाते हैं. पैर रंगवाकर दो सौ रुपये पकड़ाए तो पलभर वो ठिठकी पैसे पकड़ते हुए, उसके अंदर की ग्लानि चेहरे को सर्द बना गई. 'अरे ठीक होने पर वापस कर देना' कहने पर वो थोड़ी सहज हुई.

अगले दिन फिर वंदना का फोन आया- 'क्या सोचा तूने प्रिया, देख इस संडे को शहर के छोर पर जो दलित बस्ती है ना, वहां बिस्किट, दवाईयां और कंबल बांटने का प्रोग्राम है, एक-दो घंटे लगेंगे, और सुन सभी

(शेष पृष्ठ २३ पर)

फिर तिरंगे में सुनामी, कुछ तो है
देश में पलता हरामी, कुछ तो है
तुम हुए आजाद बस कहते रहो
तेरी फितरत में गुलामी, कुछ तो है
फिर धुआं दिखने लगा है संसद में
उसकी आदत में निजामी, कुछ तो है
मजहबी साये में वो हुस्न बेपर्दा हुआ
हो गयी वह भी किमामी, कुछ तो है
जिसकी सत्ता थी नहीं उसको कबूल
दे रहा है वो सलामी, कुछ तो है
पुख्ता सबूतों पर मिली फाँसी उसे
क्यों हुई ये ऐहतरामी, कुछ तो है
बापू-माँ की शक्ल दागी हो गयी है
मैली चादर रामनामी, कुछ तो है
है खबर शायद इलेक्शन हारने की
देखिये बद इंतजामी, कुछ तो है

-- नवीन मणि त्रिपाठी

दिखाई दे रहे थे साथ मेरे मुफलिसी में भी
तेरा बस साथ है तो जिंदगी ये मुस्कुराती है
मुहब्बत की गली में पाँव रखते हैं भरोसे से
भरोसा तोड़ के क्यों तू मेरे नजदीक आती है
वफा की राह में तो हर कदम कांटे ही कांटे हैं
तभी तो पाँव तू भी सोचकर आगे बढ़ाती है
पराया क्यों हुआ अपने वतन से दूर जाकर तू
बिलखते हैं तेरे माँ बाप
जब यादें सताती हैं
दुआ हो साथ गर माँ की,
मुसीबत आ नहीं सकती
मुझे जन्नत लगे दुनिया,
गले जब माँ लगाती है

-- धर्म पाण्डेय

सावन में हर बार सखी, मन जाता है हार सखी
आँखों से आंसू बहते हैं, रहता कब अधिकार सखी
यादें उनकी ले आती हैं, कष्टों का अम्बार सखी
जीवन जिसके नाम जिया
कब दे पाया प्यार सखी
पीडाओं की महफिल है
सपनों का उपहार सखी
दर्द सभी लेकर नाचे हैं,
डमरू और सितार सखी

-- शुभदा बाजपेयी

पतझड़ में बसन्त से मचलते हो कैसे
तुम मौसम की तरह रंग बदलते हो कैसे
प ंव जमीन पे रख आसमां पाने के लिए
दौलत कामयाबी की बिखेरते हो कैसे
ताउम्र अपने जख्मों को दिल में छिपा के
जग के तानों को होंठ पे सिलते हो कैसे
द्रौपदी अब हर घर-चौराहे पर लुट रही
न्याय को आँख मूंद 'मंजु' पलटते हो कैसे

-- मंजु गुप्ता

मुकाबिल आंधियों के दीप जलना भी जरूरी था
मुसीबत लाख आये ख्वाब पलना भी जरूरी था
अदब के साथ राहों पर चले थे हम सदा साथी
वही देने लगे बाधा बदलना भी जरूरी था
लगी ठोकर जमाने से कदम भी लड़खड़ाए थे
हँसी में हौसलों को तब मचलना भी जरूरी था
समंदर में लहर उठना रवानी का तकाजा है
गुहर लेकर बिना डूबे
निकलना भी जरूरी था
सुगंधों से भरी देखो
गुलाबों की कली न्यारी
बिखरने को हवाओं में
टहलना भी जरूरी था

-- ऋता शेखर 'मधु'

सब बीजों में पेड़ों के आसार लिखो
झरनों पर भी सागर सा विस्तार लिखो
सारी खुशहाली है दौलतमंदों की
मुफलिस के घर भी कोई त्योहार लिखो
बेकारी की चक्की ने है यों पीसा
कितने जिंदादिल हो गए बीमार, लिखो
पार समंदर जब उतरे तो हैरां थे
साहिल पर है कैसी ये मझधार, लिखो
मत चलने दो तूफानों की मनमानी
अब मौजों पर फौलादी पतवार लिखो
छुट्टी के दिन भी क्या आपाधापी है
मशरूफी से खाली इक इतवार लिखो

-- पूनम पाण्डेय

खुद को मैं खुद से मिलाना चाहता हूं
जिन्दगी तेरा साथ पाना चाहता हूं
ढूंढकर खुशियों के ये दो चार पल
खुद को खुशकिस्मत बनाना चाहता हूं
हौसलों के पंख देकर हसरतों को
आसमां को छू के आना चाहता हूं
पत्थरों पर चलके जो छाले पड़े हैं
वो सभी तुझको दिखाना चाहता हूं
तुझसे जो वादे किये थे चाहतों के
वो सभी वादे निभाना चाहता हूं
तू मनाने को मुझे रोती रही है
आज मैं तुझको मनाना चाहता हूं

-- सतीश बंसल

दिले जज्बात का हरदम मचलना भी जरूरी था
गमों की आँधियों का तब बदलना भी जरूरी था
बहुत ही दर्द देती है यहाँ पर तन्हाई मुझको
दिले जज्बात का मसलन पिघलना भी जरूरी था
नजर में यूं नहीं आते यहाँ अहले वफा कोई
खुदाई के लिये तन्हा पिघलना भी जरूरी था
सनम की याद में मुझको है जलना हर बखत यारों
बसर यादें लिये शबनम संभलना भी जरूरी था

-- सरिता सिंघई

साँस अटकी है, कसक बाकी है, और जीने की ललक बाकी है
गो नवाबी चली गई कब की, चाल में उनकी ठसक बाकी है
राहगीरों ने कुचल डाला भल, फूल में फिर भी महक बाकी है
बेटे तो कब का साथ छोड़ गए, बूढ़ी आँखों में चमक बाकी है
कितना समझाया बुजुर्गों ने उसे
नजरें नीची हैं सनक बाकी है
नोच डाला हो भले शिकारी ने
पंख टूटे हैं, चहक बाकी है
कितने ही पोथे पढ़े हों 'चन्द्रेश'
लगता है एक सबक बाकी है

-- चंद्रकांता सिवाल 'चन्द्रेश'

तेरे नजदीक आ रहा हूँ मैं, तुझको अपना सा पा रहा हूँ मैं
अपनी दुनिया उजाड़कर जानम, दिल की दुनिया बसा रहा हूँ मैं
हसरतों के हँसीन फुलों से, दिल की बस्ती सजा रहा हूँ मैं
टूट जाये कहीं न साजे दिल, गीत उल्फत के गा रहा हूँ मैं
हो न पायेगी तू जुदा मुझसे, इतने नजदीक आ रहा हूँ मैं
हाथ में दिल तेरे थमा कर के, अपनी मुश्किल बढ़ा रहा हूँ मैं
फूँक डालेगा जो मेरे घर को, ऐसा दीपक जला रहा हूँ मैं
रात की रात करवटें लेकर, जैसे तैसे बिता रहा हूँ मैं

-- वाई. शिव

मन के सूने कोने में एक याद अभी बाकी है
जख्म सारे भर गये पर दाग अभी बाकी है
समेट ली है शमाओं ने बिखरी रौशनी अपनी
दिल में उम्मीद का जलता चिराग अभी बाकी है
मिटा दिये सबूत उसने अपनी बेवफाई के
टूटा दिल बनकर मेरा सुराग अभी बाकी है
गुजर गयी उम्र सारी इक खुशी की तमन्ना में
लगता है गमों का इक सैलाब अभी बाकी है
यूं तो बिखरते रहे सपने ताउम्र मेरे, लेकिन
टिमटिमाता हुआ एक
ख्वाब अभी बाकी है
सिखाती रही जिन्दगी
हर पल नया सबक हमें
मांगी हुई दुआओं का
हिसाब अभी बाकी है

-- प्रिया वच्छानी

गिरे जो लड़खड़ा के गर संभलना भी जरूरी था
वजह ठोकर की कदमों से मसलना भी जरूरी था
सुबह तो रात में ढलती रही और आँख न खोली
पर चिरागों का अंधेरों में जलना भी जरूरी था
किस्मत को लगा इल्जाम छाया में क्यूँ जा बैठे
ठण्डी थी रेत कदमों का चलना भी जरूरी था
बना के दिल को पत्थर क्या हासिल कर सका कोई
सख्त तो बर्फ भी होती पिघलना भी जरूरी था
बदलते रहे नकाब ताउम्र पर सीरत नहीं बदली
तो ऐसी रूह का फिर
जिस्म बदलना भी जरूरी था
मिट जाते फासले 'वैभव'
मंजिल दौड़कर आती
हिम्मत की लाश का दिल में
मचलना भी जरूरी था

-- वैभव दुबे 'विशेष'

क्योंकि वह माँ थी!

उपासना सियाग

अँधेरा गहरा होता जा रहा था। वह अब भी डरती-कांपती सी झाड़ियों के पीछे छुपी बैठी थी। तूफान तो आना ही था। चला गया आकर! वह अभी भी छुपी थी। गर्दन घुटनों में दबा रखी थी। कानों में जीप की घरघराहट और पुलिस के खटखटाते बूटों की आवाजें अब भी गूंज रही थी। हिम्मत नहीं थी कि उठ कर अपने घर जाये और देखे।

'रेशम!! ओ रेशम!!'

अपने नाम की पुकार सुनी तो कुछ हौसला सा हुआ। नीलम चाची उसे ही पुकार रही थी।

'रेशम! तू कहाँ है? कितनी देर से तलाश रही हूँ!' चाची का गला भर्रा रहा था।

'चाची, मैं यहाँ हूँ! 'लड़खड़ाते हुए रेशम चाची की तरफ बढ़ रही थी।

दोनों एक दूसरे के गले लग गई। दोनों ही जोर से रो पड़ी। करुण क्रंदन सारे माहौल को कारुणिक बना रहा था। एक मजमा सा लग गया पास-पड़ोस के लोगों का। चाची रेशम को घर तक लाई। दरवाजे पर पहुँच कर रेशम ने चाची से कहा, 'चाची तुम घर जाओ। मैं रह लूंगी।'

'अरे ना बिटिया! अकेली कैसे छोडूँ तुम्हें?'

'जब ऊपर वाले को दया नहीं आई मुझे अकेला छोड़ते हुए तो फिर किसी सहारे की क्या जरूरत है!'

'ना, ना, ऐसा नहीं कहते! ऊपर वाले की मर्जी को हम नहीं जानते!'

'लेकिन फिर भी चाची तुम जाओ, जरूरत होगी तो मैं बुला लूंगी। '

'ठीक है बिटिया, तुम जैसा कहती हो!' रेशम अपने घर के खुले दरवाजे की तरफ बढ़ी। दहलीज पर ठिठक गई। सारा सामान बिखरा था। पुलिस ने हर कमरे की तलाश ली थी। उसे जब ले ही गए तो अब क्या सबूत ढूंढ रहे हैं? रो पड़ी रेशम!

आज सुबह ही चाची ने कहा कि टीवी में बताया कि उसे आतंकी संघठन का सदस्य मानकर गिरफ्तार कर लिया गया है। ना जाने कितनी बार गिरफ्तार हुआ और छूटा है वह। उदास, खामोश सी साँस ली उसने।

'आतंकी!! नहीं मेरा लाल आतंकी कैसे हो सकता है! वह तो बहुत मासूम, शर्मीला, खामोश तबियत का बच्चा था। बातें भी सिर्फ मुझसे ही करता था। मन की भी कहाँ करता था, जितना पूछा जाता, उतना ही जवाब देता था। इतना शांत बच्चा और ऐसे आरोप!!' रेशम जोर से रो पड़ी।

कोई सुनने वाला, चुप करवाने वाला भी नहीं था। जब वह पहली बार गिरफ्तार हुआ था तो पिता दिल थाम के जो बैठे फिर उठ ही ना सके। चले गए ऊपर वाले के पास। और रेशम? वह गम दिल में दबाकर जीती रही क्यूंकि वह माँ थी! धरती की तरह सब कुछ झेलने को तैयार! बार-बार की पुलिस की पूछ-ताछ और खोजबीन से परेशान छोटे भाई और बहन को मामा के पास भेज दिया।

वह उस के कमरे के बेड पर औंधी पड़ी देर तक रोती रही। बेटा पुलिस हिरासत में था। माँ भी तो बंधन में जकड़ी थी। ना मरती, ना जीती। सामने की दीवार पर उसके लाल की हँसते हुए तस्वीर थी। उसे याद ही नहीं वह आखिरी बार कब हंसा था, शायद इसी तस्वीर में ही हंसा था।

कमरे का सामान बिखरा पड़ा था। अलमारी में सामान रखने के लिए उठी तो पैर की ठोकर में कुछ लगा। देखा तो पुराना एल्बम था। जन्म से लेकर कालेज जाने तक की तस्वीरें सहेजी थी उसमे। पलटती रही एक-एक तस्वीर, छूती रही जैसे अपने लाल को दुलार रही हो। सीने में भींच कर एल्बम लेट गई, जाने जब आँख लग गई।

सुबह चिड़िया की चहचहाअट से आँख खुली। खिड़की पर बैठी थी चिड़िया, जैसे वह भी उसे ढूंढ रही हो। क्यों ना ढूंढती! बचपन की दोस्त जो थी। सामने एल्बम में खिड़की में झूलता वह और खिड़की पर बैठी चिड़िया की तस्वीर थी। मुस्कुरा पड़ी रेशम।

उसे याद आ गई एक सुबह जब 'ची-ची' की आवाज से घर चहक रहा था, रेशम सुनते हुए ठिठक गई थी क्यूंकि चिड़िया के साथ-साथ एक मासूम आवाज भी चहक रही थी। कमरे में पहुँच कर देखा तो वह चिड़िया के सुर में सुर मिला रहा था। रेशम ने हंसी रोकते हुए धीरे से तस्वीर ले ली और खिलखिला कर हँसते हुए बहुत सारा लाड उंडेल दिया बेटे पर।

मायूस सी कुछ देर तस्वीर ताकती रही। हलके से सहला कर जैसे अपने बच्चे के सर को सहलाया हो, तस्वीर पलट दी। अगली तस्वीर में उसने लकड़ी के टुकड़े को बन्दूक की भांति पकड़ रखा था। तब कितना गर्व हुआ था यह तस्वीर लेते हुए और सबको दिखाते हुए कि एक दिन उसका लाल सेना में भर्ती होगा, देश की रक्षा करेगा। लेकिन वह तो! देश के दुश्मनों के साथ मिला हुआ है! और यह सच भी था!

कलेजे में हूक सी उठी! खिड़की में आ खड़ी हुई। दिन होले-होले चढ़ रहा था। समय था! निकलना ही था। रेशम को कोई उत्साह नहीं था। बिखरे घर को समेटने का भी नहीं। यह तो सामान था जो उठा कर रख देती, उसका तो परिवार ही बिखर गया था।

तन्द्रा भंग हुई उसकी फोन की घंटी से। दिल घबराया कि किसका फोन होगा? आशंकित सी फोन पर धीरे से बोली। दूसरी तरफ कोई बोल रहा था लेकिन वह पहचान नहीं पा रही थी। शायद कोई परिचित या पड़ोसी होगा! लेकिन आवाज में प्यार और संकोच सा था।

'रेशम बिटिया! टीवी चला कर देख! उसकी खबर आ रही है! सजा पर विचार होगा!'

'सजा!!' वह आगे सुन नहीं पाई। वह कैसे यह खबर देख-सुन सकती थी। बहुत सारे अवगुण थे उसमें, अपराधी था! हाँ, वह सजा का अधिकारी भी था, कितने ही मासूमों का हत्यारा था। लेकिन माँ तो थी वह, उसे यकीन नहीं होता था कि वह एक आतंकी की माँ है। लेकिन सच तो था यह!!

बैठ गई वहीं सुन्न सी। सजा तो वह भी भुगत रही है, उसकी माँ होने की। घर से बाहर जाती है तो कितनी घूरती,नफरत भरी आँखे उस पर तीर बरसाती है। कितने नफरत से भरे शब्द बाण छोड़े जाते हैं उस पर।

मन होता है कि वह चीख कर बोले, 'हाँ! मैं हूँ एक आतंकी की माँ! दोष है मेरा जो मैंने उसे जन्म दिया! मैं, उसकी अच्छी परवरिश ना कर सकी!' लेकिन खुद को समेटती हुए घर आकर घंटो रोती रहती। जबकि सच तो यह भी था कि उसका होनहार बेटा ही कमजोर मनोवृत्ति का था। नहीं तो वह ऐसे किसी के बहकावे में आता ही क्यों। फिर भी दोष तो हमेशा जन्म और परवरिश को ही जाता है।

कंधे पर हल्का सा स्पर्श पा कर देखा तो चाची थी। 'चल उठ बिटिया, मुहँ धो। मैं चाय लाई हूँ, साथ में कुछ खा भी ले। तुझे अभी जिन्दा रहना है। दो बच्चे और भी हैं तेरे!'

'जिन्दा रहना है!! हैं चाची!! क्या हुआ? क्या?' सहम गई रेशम। कुछ समझी और कुछ समझना नहीं चाहती थी। चाची के चेहरे पर मौत का साया था। आगे बढ़ कर रेशम को गले लगा लिया। रेशम जोर से रोना चाहती थी पर रो ना पाई। गले में कुछ घुटा-सा रह गया। जमीन पर बैठी उँगलियों से कुछ उकेरती सोच रही थी कि अच्छा है वह मुक्त हो जायेगा। लेकिन वह तो मुक्त नहीं हो सकती थी। उसे तो सहन करना था जिन्दा रहते हुए क्यूंकि वह उसकी माँ थी! ■

क्षणिका

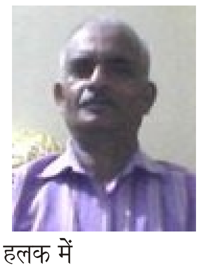

कुदरती कहर ने
किसान की किस्मत को
कब्रिस्तान पहुँचा दिया
प्रशासनिक पाश्चाताप से
पाट दिये पत्रकारों ने
अखबारों के पन्ने
हाय तौबा मचाते रहे हर किसान हलक में
हलाहल पीकर हालात ऐसे हुए कि
हाथ की लकीर हार गयी और सरकारी हुंकार
हँसा हँसा कर कृषक को मार गयी

-- कन्हैया प्रसाद तिवारी

संस्मरण

अन्धविश्वास

गुरमेल सिंह भमरा, लंदन

बहुत वर्षों की बात है हम रोजाना विटमोरीन्ज लाइब्रेरी में अखबार मैगजीन बगैरा पढ़ने आते थे। दो घंटे हम पढ़ते रहते औए बातें भी करते रहते। बहुत दफा ऊंची-ऊंची बोलने लगते और लाइब्रेरियन गोरी ऐलसी कभी-कभी हमारे टेबल पर आ जाती और हमें चुप कर जाने का संकेत देती। हम चुप कर जाते लेकिन कुछ देर बाद फिर बोलने लगते। यह गोरी विचारी बहुत अच्छी थी और रिटायर होने वाली थी। रिटायरमेंट के आखरी दिन वोह हमारे टेबल पर आई और बोली 'मिस्टर सिंह आज मेरा आखरी दिन है, जी भर कर बोल लो।' हम सभी हंस पड़े और ऐलसी को रिटायरमेंट की शुभकामनाएं दीं। एलसी ने हमें एक एक चाकलेट दिया। फिर हम अखबार पढ़ने लगे और आदत के मुताबक फिर बातें करने लगे।

उस दिन एक नया शख्स भी आया हुआ था। अक्सर हम किसी खबर को ले कर चर्चा किया करते थे और इस दौरान कभी-कभी बहस भी हो जाती थी, बस यही था हमारा ऊंची-ऊंची बोलने का कारण। बात चलते-चलते बाबा, पीरों, फकीरों की इश्तिहारबाजी पर आ गई क्योंकि सभी अखबार इन लोगों की ऐड से भरे हुए थे। कहीं कश्मीर का मशहूर ज्योतिषी, कहीं पीर दरबार, कहीं बाबा जी ठीकरी वाले, कहीं साईं महाराज का चमत्कार, कहीं चौबीस घंटे आपका कष्ट दूर करने वाले बाबा, और भी बहुत सा बकवास। इन लोगों की बातों पर चर्चा होने लगी। सोहन सिंह बोला, 'यार! आदमी तो बहुत कम इन लोगों पर विशवास करते हैं लेकिन यह औरतें ही हैं जिनका बेड़ा बैठा हुआ है। पता नहीं किस मट्टी की बनी हुई हैं, पति को रोटी मिले न मिले बस बाबा जी को खीर खिलाती हैं.' सभी हंस पड़े। मैंने भी तलहन वाले बाबे की बात खूब मिर्च मसाला लगाकर सुनाई और सभी हँसते रहे। ऐलसी भी हमारी तरफ देख कर मुस्कराती रही। फिर मैंने एक ऋषि जी महाराज की बात सुनाई जिस के पाखंड मैंने बहुत नजदीक से देखे थे और क्योंकि वोह ऋषि हमारे एक ऐसे रिश्तेदार के घर आया हुआ था जिसके अंधविश्वास के खिलाफ हम एक शब्द भी बोल नहीं सकते थे। यह ऋषि अब बूढ़ा हो गया है लेकिन अभी भी इस का विज्ञापन अखबारों में होता है और यह पाखंडी मल्टी मिलियनेअर होगा लेकिन लोग जाते हैं।

जब मैं बोल चुका तो वोह नया शख्स बोलने लगा, 'भाई साहब, आपने तो बातें ही की हैं लेकिन मैं इन पाखण्डियों से बहुत नुकसान करा चुका हूँ और मेरा घर भी बड़ी मुश्किल से टूटने से बचा है। मेरी पत्नी बहुत वहमी हुआ करती थी। बात-बात पर वहम करती और इन लोगों पर धन बर्बाद करती। मुझसे कहती तुम नास्तिक हो, धर्म कर्म पर विश्वास नहीं करते। मेरी सख्त ओवरटाइम की कमाई इन लोगों पर बर्बाद करती। घर में रोज झगड़ा होता। एक दफा मेरे दस साल के बेटे की एक आँख बंद होने लगी, बार-बार उसे उँगली से खोलनी पड़ती और कुछ देर बाद फिर बंद हो जाती। डाक्टरों की दवाई से कोई फायदा नहीं हो रहा था।

मेरी पत्नी एक दिन एक महात्मा को मिलने चली गई जो इंडिया से आया हुआ था और एक मंदिर में डेरा जमाया हुआ था। उसको मिलने के लिए लोगों की बहुत भीड़ थी। महात्मा ने भरोसा दिया और कहा , "इंडिया में एक मंदिर बन रहा है, आप बेटे को लेकर इंडिया जाइए और अपने हाथों से दान कीजिये, उन लोगों को बता देना कि मैंने भेजा है, भगवान की कृपा से सब ठीक हो जाएगा। घर में बहुत लड़ाई झगडे के बाद हम बेटे को ले कर इंडिया जा पुहंचे। वहां हमारा दस हजार पाउंड खर्च हो गिया। हमारी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा जब बेटे की आँख बिलकुल ठीक हो गई। मुझे अपने आप पर अफसोस होने लगा कि मेरी वाइफ सही थी,मैं ही गलत था।

खुशी खुशी यात्रा करके जब हम इंग्लैण्ड वापिस पुहंचे तो कुछ दिनों बाद बेटे की आँख फिर बंद हो गई और हमारी पति-पत्नी की इतनी लड़ाई हुई कि हमारी बोल-चाल बंद हो गई। एक दिन मैं टीवी पर फूड एलर्जी के बारे में डाक्यूमेंट्री देख रहा था तो मैंने अपनी बेटी से पुछा, 'बेटा! तेरा भैया कौन सी चीज ज्यादा खाता है' तो वोह बोली- 'डैडी यह रोज स्ट्राबरी जाम खाता है।' मैंने बेटी को कहा कि इस का स्ट्राबरी जाम बंद कर दो। जब स्ट्राबरी जाम बंद किया, तो एक हफ्ते बाद बेटे की आँख बिलकुल ठीक हो गई। पत्नी ने अपनी भूल स्वीकार कर ली और हमेशा के लिए इन बाबा लोगों को अलविदा कह दिया। हमें याद आया कि जब इंडिया में

(शेष पृष्ठ ११ पर)

वो पेड़ों की छांव/ठंडी मस्त हवा
वो नंगे पांव दौड़ना
न भूख लगना न प्यास
सरपट भागना
वो चोरी से आम तोड़ना
पकड़े जाने पर खूब पिटना
अगले दिन से फिर वो ही

-- रमा शर्मा, जापान

तुम्हारी रचनायें
मैं आज भी बड़ी लगन से पढ़ता हूँ
और पागल हो जाता हूँ/उस हर एक रचना में
जिसमें तुम किसी के लिए/प्रेम का इजहार करती हो
मैं अपनी कल्पना में/वो पात्र बन जाता हूँ
फिर बह जाता हूँ/अपने मनभावन भावनाओं में
एक बार फिर ऐसा लगता है/जैसे पतझड़ के बाद
एक ठूंठ से हुए पेड़ पर/नयी कोपलें फूटने लगी हैं
फिर एक बार इन्तहा हो जाता है
फूलों और बेशुमार हरी पत्तिओं का
और मैं जी लेता हूँ वो मिलन के पल
जो हमने एक साथ कभी गुजारे थे
एक बार फिर जीवित हो उठता हूँ
मैं अपने शव आसन से
हे प्रिये तुम लिखती रहो
करती रहो अपने प्रेम का इजहार
और मैं जी लूँगा
हर वो पल जो अब मेरा नहीं है

-- मोहन सेठी 'इंतजार', ऑस्ट्रेलिया

दर है न मकाँ है न मकानों का मकीं है
इस दश्त में लगता है कोई अपना नहीं है
हैं और भी कौनेन में सय्यारे हजारों
लेकिन यह जमीं सिर्फ मुहब्बत की जमीं है
इस इश्क ने शाही भी फकीरी में बदल दी
जूता भी जो पाओं में नहीं है तो नहीं है
खुद मौजों से टकरा के किनारे पे लगेंगे
गर दाब-ए-बला में कोई इल्यास नहीं है
हम लज्जत-ए-गिरियाँ का मजा कैसे बतायें
अश्कों में तबस्सुम है मसर्रत में जबीं है
सुन ले मेरे नगमात का पैगाम खुदारा
हर शे'र का हर लफ्ज तसव्वुर के करीं है
हर हाल में बस शुक्र खुदा का है लबों पर
मैं दुखतर-ए-साबिर हूँ
मेरा सब्र हसीं है
क्यों 'प्रेम' को इक जुर्म
समझती है यह दुनिया
जब जेर-ए-कदम प्रेम के
हर ताज-ओ-नगीं है

-- प्रेम लता शर्मा, अमेरिका

अपनों से भरी दुनिया, मगर अपना यहाँ कौन
सपनों में सभी फिरते, समझ हर किसी को गौण
कितने रहे हैं कोण, हरेक मन के दृष्टिकोण
ना पा सका है चौन, तके सृष्टि प्रलोभन
अधरों पे धरा मौन, कभी निरख कर नयन
आया समझ में कोई कभी, जब थे सुने बैन
वेणु हरेक प्यारी लगी, प्रणव ध्वनि सुने
ओंकार व्याप्त पृथ्वी
रही, प्रमा रस पगे
धुन आए सभी उसकी
रहे, देखते त्रिगुण
'मधु' झाँक रहे गया
कहाँ, किलकता सगुण

-- गोपाल बघेल 'मधु', कनाडा

लघुकथा

मुक्ति का फैसला

मनजीत कौर, लंदन

विनोद टीवी पर कीटाहारी पौधो पर डाक्यूमेंट्री देख रहा था जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के पौधे दिखाए जा रहे थे जैसे एक था 'सुन्दरी का पिंजड़ा' यानि 'वीनस फ्लाई ट्रैप प्लांट'। मधु की तलाश में भटकता हुआ कीड़ा जैसे ही उस पर बैठता है, ये पौधा उसे अपनी गिरफ्त में ले लेता है. ग्रंथियों से निकला पाचक रस इस कीड़े को चूस लेता है और कीड़ा खत्म होने पर ही यह पौधा खुलता है। दूसरा घटपर्णी पौधा यानि पिच्चर प्लांट यह पौधा सुराही के आकार का था। सुराही की परिधि से एक तरल पदार्थ निकलता रहता है जो कीड़ों को आकर्षित करता है। जैसे ही कीड़ा सुराही पर आकर बैठता है वो सुराही में फिसल कर मर जाता है। दूर से दिखनेवाली मधु की सुराही वास्तव में कीड़े और जन्तुओं के लिए मौत की सुराही बनी रहती है।

और भी ऐसे बहुत सारे पौधे दिखाए जा रहे थे विनोद ये प्रोग्राम बहुत ध्यान से देख रहा था। नजदीक मेज पर ऐशट्रे में बहुत सी सिगरेटों की राख पड़ी थी, कमरे में धुआं फैला हुआ था। तभी विनोद जोर-जोर से खांसने लगा। थोड़ी देर बाद जब खांसी कम हुई, तो उसने एक और सिगरेट सुलगाई और फिर से प्रोग्राम देखने लगा। उसकी इस आदत से सभी परिवारवाले बहुत परेशान और चिंतित रहते, वे हर समय सिगरेट छोड़ने के लिए उसकी मिन्नतें करते रहते, क्योंकि उसकी सेहत दिन-पर-दिन खराब होती जा रही थी पर वह इस दलदल में इतना धंस चुका था इसको छोड़ न पाता।

तभी सिगरेट का कश छोड़ते हुए विनोद ने अपनी बेटी को आवाज दी और बोला, 'मीनू बेटी देख तो कितने खतरनाक प्लांट है, बेचारे कीटों और जन्तुओ को अपनी गिरफ्त में लेकर मार देते है, उन्हें कितनी दर्दनाक मौत देते हैं। मीनू ने आते ही कमरे में फैले हुए धुंए को बाहर निकालने के लिए खिड़की खोली और पिता के पास बैठकर कार्यक्रम देखने लगी, फिर कुछ सोचते हुए अपने पिता से बोली, 'पापा मुझे तो ये प्लांट भी सिगरेट, शराब, ड्रग जैसे नशों के जैसा ही लगता है। ये नशे भी इंसान को ऐसे ही अपनी गिरफ्त में लेकर उसका विनाश कर देते हैं। आपके प्यारे दोस्त राहुल अंकल को भी शराब ने, मौत के आगोश में भेज दिया। दुनिया में बहुत से लोग इन नशों के कारण अपना जीवन गंवा बैठते हैं। हम आप को बहुत प्यार करते है पापा, आप को खोना नहीं चाहते, ये नशा आपकी सेहत के लिए बहुत हानिकारक है। प्लीज हमारी खातिर इसे छोड़ दीजिए।'

विनोद काफी देर तक उन जानलेवा पौधों में तड़प-तड़प कर मर रहे जंतुओं और सिगरेट के धुएं को देखता रहा। बेटी की बातें उसके दिमाग में घूमती रहीं। अचानक उसने सुलगाई हुई सिगरेट को ऐशट्रे में मसलकर बुझा दिया और सिगरेट का पैकेट और ऐशट्रे खिड़की से बाहर फेंक दिए। मन-ही-मन वह सिगरेट से मुक्ति का फैसला ले चुका था। ■

कविता

बरसों बाद मेरे मन आँगन महका प्यार
झूम उठा आसमाँ/खिला संसार।
मन की कलियाँ भी खिलने लगी
चेहरे पे रंगत दिखने लगी
कोयल की आवाज/वर्षा की धुन
भौंरे की गुन-गुन
हवा के गीत/झरनों का संगीत
चाँद का आना, सूरज का छिपना
नदी का शोर, खिलखिलाती भोर
अँधेरी रात, तारों के संग बात
जुगनुओं का ऐसे टिमटिमाना
तितली संग दूर देश में जाना
गाई धुन को फिर गुनगुनाना
लिखी डायरी बार-बार छिपाना
उठती पींगें सावन के भी गीत
खुशबुओं का मदहोश करना सब भाने लगा है!

-- डा. भावना कुँअर, आस्ट्रेलिया

कहानी : घरेलू हिंसा

(पृष्ठ ११ का शेष)

करता था। योगेश ने बहुत बार समझाने की कोशिश की कि नया काम संभाला है थोड़ा सब्र रखो सब ठीक हो जाएगा। पहले तो घर को लेकर झगड़ा होता था अब पैसों और फैक्ट्री को लेकर भी होने लगा। रीना तो जैसे तैसे झगड़ा बन्द कराती और योगेश को चुप रहने को कह देती कि तमाशा बन जाएगा मौहल्ले मे घर की इजज्त का वास्ता देती। सास भी कोई ठोस कदम नहीं उठाती थी कि बराबर का हिस्सा कर के इस झगड़े को खत्म करे क्योंकि प्रियंका बहुत ही तेज और चतुर थी वो रीना को दबाकर और डराकर अपनी बाते मनवाना चाहती थी मगर वहीं रीना इन सब बातों से अंजान थी कि प्रियंका इस हद तक पहुंच जाएगी। एक दिन तो रीना के पैरों तले जमीन ही निकल गई जब उसने घर पर पुलिस को देखा। पुलिस सबको थाने लेकर गई रीना बहुत डर गई थी कि यह सब क्या हो रहा है एक भाई अपने भाई पर झूठे इल्जाम लगा सकता है पैसों के लिए।

प्रियंका ने अपने पापा और पति के साथ मिलकर योगेश और रीना पर झूठा केस दायर कर दिया था कि यह प्रियंका को दहेज के लिए परेशान करते हैं और मारते हैं पैसे भी नहीं खर्च करने देते रीना ने जैसे तैसे खुद को संभाला सास भी हैरान थी कि बात इतनी बिगड़ जाएगी उसने सोचा भी नहीं था। झूठी इज्जत बचाने आज घरवालों को पुलिस स्टेशन आना पड़ा। रीना और योगेश तो हौरान और हक्के बक्के रह गए थे कि कैसे चंद पैसे और जमीन के लिए अपना भाई ऐसा कर रहा है। झूठे इल्जाम लगाकर प्रियंका रीना और योगेश को कड़ी सजा दिलाना चाहती थी मगर सांच को कोई आंच नहीं होती, रीना तो अपने भगवान से इंसाफ मांगने लगी। जाने इंस्पेकटर को भी प्रियंका का केस झूठा लग रहा था उसने ऐसे ही जांचने के लिए गुस्से से कहा- 'दोनो भाईयों को अन्दर कर दो और खूब मारो.'

यह सुनते ही प्रियंका और उसके पापा डर गए और समझौता करने को तैयार हो गए। वो तो इतना घबरा गए कि केस वापिस लेना चाहते हैं। इंस्पेकटर को तो आगे ही शक हो रहा था उनके केस पर उन्होने तो रीना और योगेश को डांटा कि आपने इस घरेलू हिंसा के लिए शिकायत क्यों नहीं की और कहीं ना कहीं सास को भी अपनी गल्ती का ऐहसास हो रहा था जिसने बात को इतना बिगड़ने दिया था। रीना और योगेश घर आए और सास ने बिना वक्त गवांए वो फैसला किया जो उनको स्थिति को भांपते हुए पहले लेना चाहिए था। ■

लघुकथा

बुनियादी संस्कार

'पासपोर्ट की जाँच करवाने गया है. थोड़ी देर में अमेरिका रवाना हो जाएंगे. मगर यूं तक नहीं कहा है कि मैंने अपने हिस्से का मकान बेच दिया है.' पत्नी ने देवर पर चिढ़ते हुए कहा.

'अरे तू जाने दे. उसके हिस्से का मकान ही तो बचा था. हमारे हिस्से का मकान तो हम पहले ही बेच चुके हैं.'

'वह मकान पिता के केंसर के इलाज के लिए बेचा था. वे उसके भी पिता है.'

'तो क्या हुआ ?'

'लोग सही कहते है, विदेशों में जा कर लोग अपने मातापिता और अपने कर्तव्य को भूल जाते हैं .'

'हो सकता है. तेरी बात सही हो. या उस की कोई मजबूरी रही हो. देख. वो आ रहा है. चुप हो जा.'

उसने आते ही दोनों के चरण स्पर्श किए और कागज का टुकड़ा पकड़ाते हुए कहा-.

'मैं जा रहा हूँ. आप मुझे याद करते रहिएगा और मैं आपको. और हाँ. आप यहाँ आनंद से रहिएगा और मैं वहां. ये दलाल का नाम पता और नम्बर है, उसका फोन आयेगा तो दस्तखत के लिए चल दीजियेगा. फिर वो मकान की रजिस्ट्री खुद पहुँचा देगा.'

उसे जाते हुए देखकर पत्नी ने पति से कहा- 'मकान दिखाते समय इसने दलाल से कहा था कि मकान की रजिस्ट्री करके मकान मालिक को देना।'

-- ओम प्रकाश क्षत्रिय

असरदार और ताकतवर ढंग से जवाब चाहता है पाकिस्तान

शिवदेव आर्य

भारत एक शान्तिप्रिय व सद्व्यवहार को बढ़ावा देने वाला देश है, जो प्रति क्षण प्रत्येक की उन्नति में स्वयं की उन्नति को स्वीकार करता है। शायद इसी कारण से भारत की ओर से पाकिस्तान के साथ दोनों देशों में शान्ति बनाये रखने के लिए वार्ता करने की कोशिश की जाती रही है। लिखित रूप से भी कई बार वार्तायें हो चुकी हैं किन्तु कोई ठोस हल नहीं निकल पा रहा है। पाकिस्तान अपना छद्म भरा चेहरा कुछ काल के लिए तो छुपा लेता है किन्तु अत्यल्प काल में ही अपने असली विषैले रूप में आ जाता है।

जैसे अभी पाकिस्तान के वजीर-ए-आजम नवाज शरीफ ने कुछ दिनों पहले हमारे प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी के साथ रूस में बैठ कर कुछ खास ऐलानों पर हस्ताक्षर किये। जिस ऐलान में कहा गया था कि दहशदगर्दी को खत्म करने के लिए दोनों मुल्क उद्यत हैं और इसका कोई रंग नहीं होता, किन्तु नवाज शरीफ ने अपने देश पहुँचते ही अपना बयान बदल कर खूनी कलम चला दी। ऐसे अविश्वनीय देश के लिखे या कहे वादों पर जो यकीन या विश्वास करता है तो वह खुद ही एक तमाशा बनने लग जाता है। क्या जनवरी २००४ में अटल बिहारी वाजपेयी को पकड़ाये गये उस कागज का कोई वजूद नहीं है, जिसमें परवेज मुशर्रफ ने लिखा था कि पाकिस्तान के जेरे साया वाली जमीन का प्रयोग भारत के खिलाफ दहशदगर्दी के लिए किसी कीमत पर नहीं होगा? क्या सन् १९७२ में शिमला समझौते में लिखे गये वो वाक्यांश जिनमें जुल्फिकार अली भुट्टो ने इंदिरा गांधी को लिख कर दिया था कि कश्मीर मसले के हल के लिए दोनों देश के नीति-नियन्ता सही वक्त पर बातचीत की मेज पर बैठेंगे? और तो और २००६ में डॉ. मनमोहन सिंह को परवेश मुशर्रफ ने यहाँ तक लिख कर दे दिया था कि दोनों मुल्क दहशदगर्दी के खात्मे के लिए मिलकर साथ देंगे और इसके लिए एक नया नेटवर्क तैयार करेंगे? किन्तु प्रत्येक बार भारत को धोखेबाजी के सिवाए और मिला ही क्या है?

अब हमारे प्रधानमन्त्री पर दबाव बनाया जा रहा है कि पाकिस्तान से बात करें। अरे कोई समझता क्यों नहीं? अब भी कोई कसर शेष रह गयी है? जिस देश ने अपना इमान बेच दिया हो, उससे किस मुख से बात की जाए। हमेशा की तरह वह अपनी बात से मुकर जाता है। जिस देश को बात ही करनी नहीं आती उससे बात करके क्या लाभ? जैसे जुलाई मास मेंकहा गया था कि पाकिस्तान की ओर से कोई संघर्ष विराम का उल्लंघन नहीं किया जायेगा। किन्तु पाकिस्तानी सेना ईद जैसे सुख-समृध्दि के पर्व पर भी खूनी जंग करने और शान्ति के माहौल को और बिगाड़ने से बाज नहीं आता।

इसका जीता जागता उदाहरण हमें जम्मू-कश्मीर के राजौरी और पुंछ सैक्टर में मिला, जहॉं पाकिस्तानी सेना और रेंजरों ने छोटे-छोटे आग्नेयास्त्रों के जरिये कई भारतीय चौकियों को निशाना बना कर १८ जुलाई शनिवार को फिर से संघर्ष विराम का उल्लंघन किया गया। अमृतसर के पास वाघा-अटारी सीमा पर त्यौहारों के दौरान एक-दूसरे को मिठाई देने की परम्परा का पाकिस्तानी रेंजरों ने निर्वाह करने से मना कर दिया अर्थात् उन्होंने सीमा सुरक्षा बल द्वारा भेंट की गई मिठाई लेने से मना कर दिया। इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि पाकिस्तान शान्ति के वातावरण की इच्छा नहीं रखता, अब 'शठे शाठ्यं समाचरेत्' इस सूक्ति को साकार करने का अवसर आ गया है।

पाकिस्तान ने भारत को अस्थिर व कमजोर करने के लिए एक और कदम शुरू किया है, जो आतंकवाद है। आतंकवाद की भारत में फैली विष बेल का जन्मदाता और कोई नहीं बल्कि यही पाकिस्तान है। अब यह बात तो निश्चित हो चुकी है कि पाकिस्तान के अस्तित्व को खतरा है। पाक के नापाक दिन शुरू हो गये हैं। उसे सबक सिखाने के लिए ५६ इंच के सीने वाला अनोखा व्यक्तित्व आ चुका है। जब पाप की अति हो जाती है तब पापों के विध्वंस करने के लिए कोई भगवान् थोड़े ही आते हैं बल्कि हममें से ही किसी एक को सामना करना पडता है।

शायद पाकिस्तान भारत को भूल गया है, जिस दिन पाकिस्तान के छक्के छुडा दिये थे। सन् १९७१ में हमारे भारतीय नौजवान फौजी भाईयों ने कमाल ही कर दिया था। बांग्लादेश विभाजन के दौरान उनके ९० हजार फौजियों को बंधक बना लिया था, यह देख उस देश के होश उड़ गये थे, और वह हमारे पैरों में गिड़गिड़ा कर नाक रगड़ रहा था। हम भी बड़े दयावान् हैं, हमें उनकी दशा को देखकर दया आ गयी और उन सब बन्दी बनाये गये सैनिकों को मुक्त कर दिया। यह देख सम्पूर्ण विश्व आश्चर्यचकित रह गया।

सीमा पर बढ़े तनाव और उसके चलते दोनों ओर के कुछ लोगों के मारे जाने के बीच भारत की ओर से केन्दीय गृह मन्त्री श्री राजनाथ सिंह ने पाकिस्तान को कड़ी चेतावनी दी कि बिना उकसावे के फायरिंग और सीमा पार आतंकवाद का 'असरदार और ताकतवर ढंग से' जवाब दिया जाएगा।

दहशदगर्दी को अपना हथियार बनाने वाली पाकिस्तानी फौजों को उनकी सही औकात बताने की जरूरत पड़ सकती है। इन फौजों को हम किसी मुल्क की फौज कैसे कह सकते हैं, जो सिर्फ मजहब पर ईमान लाकर लड़ाईयां लडती हो? हमें ध्यान रखना होगा कि सीरिया की इस्लामी स्टेट (आईएस) के दहशदगर्दों और पाकिस्तान की फौजों में ज्यादा अन्तर नहीं है। इसलिए बातचीत के नतीजे कुछ भी हो नहीं सकते। कितनी बार हम पाक के नापाक इरादों से भरे कागजी पन्नों को पढ़ चुके हैं, काजगों में तो कुछ भी लिख देते हैं, किन्तु आज भारत को सावधान होना पड़ेगा, पाकिस्तान को करारा वाचिक जवाब न देकर सीधा कार्यान्वयन हो तो ज्यादा उचित रहेगा। एक ऐसे ही क्षण की प्रतिक्षा प्रत्येक देशवासी काफी लम्बे समय से कर रहा है। ■

क्या शिक्षा अंधभक्ति से मुक्त करती है?

केशव

कुछ दिन पूर्व टीवी पर एक खबर दिखाई गई थी कि जयपुर के कोर्ट में एक ऐसे केस पर सुनवाई हुई जिसमें एक बच्चे को एक धर्म गुरु से छुड़वाकर उसके माँ बाप को सौंप दिया गया। गौरतलब है की केस करने वाले बच्चे के दादा दादी हैं। उनके अनुसार उनके बहू बेटे ने अपने ५ महीने के बच्चे को एक हफ्ते पहले एक गुरु को सौप दिया था। इस पर दादा-दादी को ऐतराज था कि इतने छोटे बच्चे को किसी संन्यासी को कैसे सौंपा जा सकता है ? बहू-बेटे बहुत समझाने पर नहीं माने तो उन्होंने कोर्ट का सहारा लिया और बच्चे को गुरु से लेकर वापस उसके माता पिता को सौंप दिया ।

जब टीवी रिपोर्टर ने उस महिला से बात की जिसने गुरु को अपना बच्चा सौंप दिया था, तो उसने बड़े रौबीले अंदाज में बताया कि वो और उसका पति पढ़े लिखे हैं। उसने डाक्टरेट की हुई है और उसके पति एमबीए है और गुरु से भक्ति और समर्पण के कारण ही उन्होंने पूरे होशोहवास में बच्चे को गुरु को सौंपा था। उन्होंने बच्चे को वापस लेने में दिलचस्पी नहीं दिखाई। बस कोर्ट के आदेश का पालन भर किया है।

अब सवाल उठता है कि ऐसा ये तथाकथित धर्म गुरु ऐसा कौन सा सम्मोहन करते हैं कि अच्छे खासे पढ़े लिखे लोग भी इनके झांसे में इस तरह आ जाते हैं कि अपने ५ महीने के बच्चे को भी उनको सौंप देते हैं?

जब मैं ऐसी गांव देहात के या शहरी अनपढ़ लोगों के द्वारा तांत्रिको के जाल में फंस के बच्चे की बलि देने, या पूजा पाठ, भूत प्रेत बाधा मुक्ति के लिए तरह तरह के प्रपंच करने की घटनाओ को पढता हूँ तो मुझे यह समझ आता है की लोग अनपढ़ है इसलिए तांत्रिकों-गुरुओं आदि के चक्कर में आ जाते हैं ।

परन्तु जब इतने पढ़े लिखे लोगों को आसानी से मूर्ख बनते और अंधभक्ति की हद तक इन गुरुओं और

(शेष पृष्ठ २३ पर)

अंगहीन नहीं, अपाहिज वह है जिसका मन अपाहिज हो

आशा गुप्ता

एक व्यक्ति समुद्र के किनारे स्थित एक ऊँची चट्टान से समुद्र में कूद कर आत्महत्या करने जा रहा था। तभी किसी ने पीछे से आकर उसको कसकर पकड़ लिया और मरने से बचा लिया। ये बचाने वाला व्यक्ति कोई महात्मा लग रहा था। उसने पूछा, 'भले आदमी ये क्या करने जा रहे थे?' व्यक्ति ने रोते हुए कहा, 'आपने मुझे मरने से क्यों रोका? मैं मरना चाहता हूँ।' 'पर क्यों?' 'क्योंकि मैं बहुत ही गरीब हूँ। मेरे पास कोई काम नहीं है। खाने को रोटी तक नहीं। ऐसी जिंदगी जीकर करूँ भी तो क्या करूँ?' उस व्यक्ति ने बड़े दुख के साथ कहा। महात्माजी ने कहा कि मैं तुम्हारी गरीबी दूर करवा सकता हूँ। कैसे? 'बस तुम्हें सिर्फ अपने दोनों हाथ देने होंगे। उनके बदले मैं तुम्हें दो लाख रुपए दिलवा दूँगा और तुम आराम से रहना और खाना-पीना', महात्माजी ने कहा। व्यक्ति ने कहा- 'ये कैसे संभव है, अपने दोनों हाथ तो मैं किसी भी कीमत पर नहीं दे सकता।'

'तो फिर अपने दोनों पैर दे दो उनके बदले मैं तुम्हें चार लाख रुपए दिलवा दूँगा और तुम उनसे हर चीज खरीद कर आराम से रहना।', महात्माजी ने पुनः कहा। व्यक्ति ने कहा कि ये भी असंभव है। मेरे पैर बेशकीमती हैं और मैं किसी भी कीमत पर उन्हें नहीं बेच सकता। 'चलो हाथ-पैर न सही अपनी दोनों आँखें दे दो उनके बदले में मैं तुम्हें पूरे दस लाख रुपए दिलवा दूँगा और तुम ऐश से जिंदगी बसर करना।', महात्मा ने एक बार फिर जोर देकर कहा।

अब तो उस व्यक्ति को गुस्सा आ गया और बोला, 'पैसों के बदले में मेरे शरीर के बहुमूल्य अंगों को बिकवाकर आप मुझे अपाहिज बनाना चाहते हो? मेरी गरीबी का मजाक उड़ाना चाहते हो?' महात्माजी ने कहा, 'इतना अमूल्य शरीर होते हुए तुम गरीब कैसे हुए? और जहाँ तक अपाहिज होने का प्रश्न है अपाहिज वो नहीं होता जिसके कोई अंग नहीं होता, अपितु अपाहिज वो है जिसका मन अपाहिज हो चुका हो और जो परिश्रम करने के लिए अपने अंगों का सदुपयोग करने से बचता हो। तुम एक स्वस्थ व्यक्ति हो और तुम्हारे सारे अंग-प्रत्यंग सही-सलामत हैं तो तुम गरीब कैसे हुए?'

यदि हम अपने चारों ओर नजरें दौड़ाएँ तो पाएँगे कि तन और मन दोनों तरह के अपाहिज या विकलांग लोगों की कमी नहीं। जो स्वस्थ शरीर होते हुए भी मन से विकलांग या अपाहिज हैं वे स्वयं पर ही नहीं पूरे समाज पर बोझ हैं। लेकिन ऐसे लोगों की कमी नहीं जिन्होंने शारीरिक रूप से अक्षम होते हुए भी वे कार्य कर दिखलाए जो सक्षम भी प्रायः नहीं कर पाते। हेलेन केलर, लुई ब्रेल, स्टीफन हॉकिंग, बाबा आमटे, सुधा चंद्रन आदि ऐसे नाम हैं जिन्होंने सिद्ध कर दिया कि शारीरिक विकलांगता भी मनुष्य के विकास में बाधक व अभिशाप नहीं। हम चाहें तो अपने शारीरिक विकलांगता रूपी अभिशाप को वरदान में परिवर्तित कर सकते हैं। इसके लिए जरूरत है तो मात्र जज्बे और आत्मविश्वास की।

जिस व्यक्ति में स्वयं कुछ करने का जज्बा और आत्मविश्वास नहीं, जिसमें मनुष्य की अपरिमित क्षमताओं पर विश्वास नहीं और जो सदैव निराशा व नकारात्मक विचारों से घिरा रहता है वही वास्तविक विकलांग है। शारीरिक नहीं, बल्कि मनुष्य की मानसिक विकलांगता ही उसके विकास में सबसे बड़ी बाधा है।

पिछले दिनों एवरेस्ट पर्वत पर सफलतापूर्वक चढ़ाई करके वाली एक पांव से वंचित हो चुकी अरुणिमा सिन्हा हों या २००६ में एवरेस्ट फतह कर चुके दोनों पैरों से विकलांग मार्क इंग्लिस हों या फिर जून २०१५ में आइएफएस अधिकारी बनने वाली पहली नेत्रहीन महिला बेना जेफाइना हों या आईएएस बनने की इच्छा रखने वाली साठ प्रतिशत से भी अधिक डिसएबल्ड यूपीएससी टॉपर इरा सिंघल हों, ये सभी हमारे लिए अनुकरणीय व आदर्श होने चाहिएँ तभी हम सही रूप में मानसिक जड़ता अथवा विकलांगता से मुक्त हो सकेंगे। ■

कुलिन्द गणराज्य : मुद्राशास्त्रीय अनुशीलन

वेद प्रताप सिंह

परवर्ती मौर्य सम्राटों के शासनकाल में सत्ता की कमजोरी का लाभ उठाकर प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व में भारत में गणराज्यों का अस्तित्व पुनः विद्यमान हो गया था जिसका प्रमाण उन शासकों द्वारा प्रचलित मुद्राएँ हैं. पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा व उत्तराखंड राज्य के विभिन्न स्थानों से तत्कालीन कुलिन्द गणराज्य की ऐतिहासिक मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं, जिनके इतिहास का स्रोत केवल मुद्राएँ ही हैं. उत्तराखंड प्रान्त में गढ़वाल मंडल के अंतर्गत पौडी गढ़वाल जनपद के सुमारी, भट्टीशेरा, देवलगढ़ एवं इसी क्रम में टिहरी जनपद के अठूर तथा उत्तरकाशी जनपद के पुरोला स्थानों से कुलिन्द शासकों की मुद्राओं की निधि प्राप्त हुई है जो तत्कालीन इतिहास पर व्यापक रूप से प्रकाश डालती है. इसी प्रकार कुमायूँ मंडल के अंतर्गत नैनीताल व अल्मोड़ा के कुछ स्थलों तथा ऊधमसिंह नगर जनपद के काशीपुर स्थान से उक्त गणराज्य की मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं जिनसे ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण उत्तराखंड क्षेत्र पर कुलिन्द गणराज्य का निर्विवाद रूप से अधिकार था.

इस गणराज्य का विस्तार पश्चिम में पंजाब की सतलज नदी से पूर्व में कुमायूँ की काली नदी तक तथा उत्तर में पीर पंजाल श्रेणी से लेकर दक्षिण में शिवालिक श्रेणी के मध्य एक विस्तृत भूभाग पर था. हिमाचल प्रदेश का ज्वालामुखी क्षेत्र, हरियाणा का अम्बाला जनपद, उत्तर प्रदेश का सहारनपुर जनपद व उत्तराखंड के गढ़वाल व कुमायूँ मंडल कुलिन्द शासकों की सत्ता के अधीन थे. भारत में यवनों के आक्रमण के समय इन शासकों की रजत व ताम्र मुद्राएँ कलात्मक रूप से यवनों की मुद्राओं से प्रतिस्पर्द्धा करने लगी थीं. वर्तमान में ये मुद्राएँ भारत के विभिन्न संग्रहालयों व ब्रिटिश संग्रहालय, लन्दन में संग्रहीत हैं.

लगभग १०० ईसा पूर्व में कुलिन्द गणराज्य में अमोघभूति नामक शासक सिंहासनारूढ़ हुआ जिसने 'महाराज' की उपाधि धारण की. उसने यवनों के आक्रमण से मध्य हिमालय के व्यास, सतलज व यमुना नदी के कांठे तथा उत्तर प्रदेश के सहारनपुर क्षेत्र व उत्तराखंड के गढ़वाल व कुमायूँ के भूभागों को मुक्त कराने में अपना अप्रतिम योगदान दिया था. लगभग ४० वर्ष के दीर्घ शासन के पश्चात् ६० ईसा पूर्व में उसकी मृत्यु हो गयी.

कुलिन्द गणराज्य की मुद्राएँ सांचे में ढ़ालकर तथा ठप्पे से निशान लगाकर बनायी गयी हैं. रजत मुद्राएँ गोलाकार हैं तथा सामान्यतः ३४ ग्रेन भार की हैं, जबकि ताम्र मुद्राएँ ५७ ग्रेन की व गोलाकार हैं. उक्त मुद्राओं पर ब्राह्मी व खरोष्ठी दोनों लिपियों में लेख अंकित हैं.

मुद्रा के अग्रभाग पर ब्राह्मी लिपि में 'राज्ञः कुणिदस अमुघभुतिस्य महाराजस्य' लिखा है. दक्षिणमुखी मृग 'हिरन, तथा उसके ऊपर लांछन चिह्न अंकित है तथा सम्मुख स्थानक देवी (संभवतः लक्ष्मी) का अंकन हुआ है. पृष्ठ भाग पर खरोष्ठी लिपि में लेख 'महरजस रयं कुणिदस अमुघभुतिस'अंकित है जो ब्राह्मी लिपि का रूपान्तरण है. छत्र युक्त षटकूट, ऊपर नन्दिपद, बायीं ओर स्वस्तिक चिह्न, नीचे इन्द्रयष्टि, दायीं ओर चौत्य वृक्ष तथा निचले भाग में सर्पिलाकार रेखा का स्पष्ट अंकन हुआ है.

उक्त मुद्राओं के अनुशीलन से विदित होता है कि अमोघभूति एक कुशल शासक होने के साथ-साथ महान राजनयिक भी था जिसने 'महाराज' उपाधियुक्त सिक्के चलाये थे. वह समकालीन पड़ोसी राजाओं की नीतियों को जानने में बहुत दक्ष था. हरियाणा के वर्तमान सुघ नामक स्थान को उसने अपने राज्य की राजधानी बनाया. ऐसा प्रतीत होता है कि अमोघभूति के मरणोपरांत कुलिन्दों ने गोविषण, काशीपुर क्षेत्र को अपनी नई राजधानी बनाया, जो तत्कालीन उत्तरी भारत का प्रमुख केंद्र था. कालान्तर में शकों के आक्रमण के फलस्वरूप उक्त गणराज्य का पतन हो गया. ■

हाइकु

विभा रानी श्रीवास्तव

हाइकु एक बहुत छोटी जापानी विधा में लिखी जाने वाली कविता है. इसके तीन गुण हैं. एक, जिसे हाइकु की जान या मुख्य गुण कहा गया है वह 'किरे', कटाई है (अँग्रेजी में cut, जापानिमे kiru या kire) जो दो बिंबो को संधि में रखने का काम करता है. जापानी में एक kireji, यह जापानी हाइकु में एक शब्द या मौखिक चिह्न के रूप में होता है और जो दोनो बिंबों के बीच रहता है वह बिंब बदलने का संकेत देता है.

पारंपरिक हाइकु १७ वर्ण (जापानी में on या morea कहते हैं) का होता है जिसे तीन वाक्यांश में तीन पंक्तियों मे ५ , ७ और ५ वर्ण में लिखा जाता है.

ऋतु शब्द (जापानी में किगो) का होना हाइकु में आवश्यक है यह शब्द एक संग्रह से ही लिया जाता है (जापानी में जिसे साइज की कहते हैं) हाइकु में प्रकृति मुख्य विषय होता है.

एक हाइकू के दो हिस्से होते हैं पहले हिस्से में एक बिम्ब और दूसरे हिस्से में दूसरा बिम्ब यह तीन पंक्तियों में व्यक्त किया जाता है. दोनों हिस्सोंके बीच होता है चीरा जो चिह्न के रूप में होता है (किरेजी, kireji). पाठक भाव बदलने पर तुरंत समझ जाता है कि दूसरा बिम्ब शुरू हो रहा है. तीन पंक्तियों में से दो पंक्तियाँ जुड़ी हों और एक स्वतंत्र हो. कुल मिलाकर ऐसे दो हिस्से ५-१२ या १२-५ शब्दांश में, कुल १७ वर्णों में हो. हाइकु के लिए 'कइगो (Kigo)' अर्थात 'ऋतु' शब्द बहुत अहम होता है

आधुनिक जापानी हाइकु (गेंदेइ हाइकू)

गेंदेइ में १७ वर्ण का उपयोग नहीं होता है पर छोटी-बड़ी-छोटी ऐसे तीन पंक्तियाँ होती हैं, पर दो बिंबों का संमिधि मे रखना (अँग्रेजी में jutaposition) बहुत ही अनिवार्य है. दोनो पारंपरिक और आधुनिक हाइकु मे यह समानता है.

जापानी मे हाइकु केवल एक ही पंक्ति में छापा जाता है. हिंदी में तीन पंक्तियों में लिखे जाते हैं।

हिंदी हाइकु प्रणाली

पहले के हाइकु के ज्ञाताओं के अनुसार तीन पंक्ति, तीन भाव लेकिन पारम्परिक ज्ञाताओं और नए लिखने वालों के अनुसार तीनों पंक्तियों में से कोई भी दो पंक्ति जुड़ी हुई होनी चाहिए जैसे पं १ और २ या फिर पं २ और ३ जुड़ी हुई रहनी चाहिए. जो पंक्ति जुड़ी नहीं है वहाँ kireji या चीरा का चिह्न (- या ; जिसे) से अलग किया जाता है ताकि हाइकु के दो हिस्से अलग से दिखें. हाइकु जो पहले हककू के नाम से जाना जाता था, उसे यह नाम मासाओके शिकिने १९वी सदी के अंत में दिया.

कीगो (Kigo)

की-एक ऋतु अर्थात गर्मी सर्दी बरसात में से किसी ऋतु में से बोध हो और गो- शब्द अर्थात् कीगो यानी ऋतु शब्द जैसे- आम गर्मी, छाता बरसात, रजाई सर्दी। अतः कीगो एक ऋतु निर्देश होता है.

हाइकु के लिए अन्य दिशा निर्देश

१. पारम्परिक हाइकु सिर्फ प्रकृति के विषय पर ही होता है.

२. हाइकु में बयान या कथन नहीं होते हैं

३. L1, L2, L3 अर्थात पंक्ति क्रमांक १, २, ३

४. हाइकु में उपमा है अगर आप संधि में चीरे के साथ दो बिम्ब अलग अलग एक ही हाइकु में इन्हे शिल्प करे तो। यही अच्छे शिल्पकार हाइकू कवि की खूबी है.

५. ५-१२ या १२-५ में ढालने से पहले दो दृश्यों की रूप रेखा बना ले। ५ में एक दृश्य और १२ में दूसरा. ऐसे कुल मिलके दो दृश्य अलग-अलग लिखें। फिर उन्हें संधि चिह्न (-) द्वारा अलग कर साथ में लिखें. ५ वाला दृश्य वाक्यांश में हो पर १२ वाला वाक्य में भी हो सकता है।

१२ वर्ण का अर्थ यह होता है कि यह दो पंक्तियाँ स्वतंत्र नहीं हैं, जुडी हुई हैं। १२ वर्णों का हिस्सा जब लिखें तब यह ध्यान दें कि वह दो वाक्यांश न हो। एक ही वाक्यांश या तो वा भी हो सकता है। ५-१२ का अर्थ है एक स्वतंत्र पंक्ति और दूसरी तीनमे से दो पंक्तियाँ जुडी हुई है। कुल मिला के दो हिस्से।

हाइकु में मानवीकरण और कल्पना नहीं होती है, वास्तविकता होती है। पर वास्तविकता को ५ इन्द्रियों द्वारा एक क्षण की अनुभूति ही ३ पंक्तियों की यह रचना कराती है।

धरती चाँद नभ सूर्य धरा आदि अगर मानव की तरह कुछ करते दिखेंगे या कोई भी निर्जीव वस्तु या मूक जानवर कोई मानव की तरह कार्य करे और उस जैसी कल्पना को रचना में दिखलाना मानवीकरण होता है।

७. हाइकु-सेनर्यु में विशेषण और क्रियाविशेषण से क्यों दूर रहना है या उपयोग टालना है? पहले ३ पंक्तियाँ और १७ वर्ण सबसे बड़ी चुनौती है तो बिम्ब और भाव को अक्षत रखकर विशेषण और क्रिया विशेषण हटाये जा सकते हैं जो गैर जरूरी या अनावश्यक हो।

दूसरा और महत्त्वपूर्ण बिंदु, इनके उपयोग से देखा गया है कि रचना कहने लगती है दिखती नहीं है. अगर विशेषण और क्रियाविशेषण रचना के लिए बहुत ही जरूरी है, तब ही इसका उपयोग करना है। अगर रचना के बिम्ब या भाव इनके बगैर बहुत बदल जाते है या इनका उपयोग अनिवार्य है तब ही इनका उपयोग

समीक्षा

रोमांटिक एवं विद्रोही कविताओं का अनुपम संग्रह

'तुम्हारी अर्चना' युवा कवियित्री अर्चना पांडा के गीतों, गजलों, मुक्तकों एवं अन्य कविताओं का संग्रह है। इनकी रचनाकार उच्च शैक्षिक उपाधि प्राप्त हैं और अमेरिका में एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी में वरिष्ठ पद पर सेवारत हैं। ऐसा बैकग्राउंड होते हुए ऐसी उच्च कोटि की रचनायें करना कोई साधारण बात नहीं है। उनके सौभाग्य से उनको डा. कमलेश द्विवेदी जैसे प्रतिष्ठित कवि का मार्गदर्शन काव्यगुरु के रूप में मिला है, जिसका स्पष्ट प्रभाव उनकी सभी रचनाओं पर नजर आता है।

उनकी अधिकांश कवितायें रोमांटिक हैं अर्थात् श्रंगार रस से ओत-प्रोत हैं। इनमें भी संयोग श्रंगार की प्रधानता है। सभी रचनाएं बहुत आकर्षक और रोचक भाषा में लिखी हैं। शब्दों का चयन प्रशंसनीय है और छंदों की रचना पर आश्चर्य होता है। किसी भी छंद बद्ध रचना में छंद के नियमों का उल्लंघन प्रतीत नहीं होता।

अर्चना की कई कविताओं में विद्रोही स्वर भी है। विशेष रूप से चौथे भाग 'कविता' की कई कविताएं स्पष्ट रूप से पुरुषवर्गीय मानसिकता पर कड़ा प्रहार करती हैं। उनकी बातों में वजन है और इनको पढ़ते हुए पाठक बहुत कुछ सोचने को बाध्य होता है।

पुस्तक के अंत में कई प्रतिष्ठित रचनाकारों जैसे पद्मभूषण गोपालदास नीरज, डॉ कुंअर बेचैन, डॉ हरिओम पंवार, डॉ विष्णु सक्सेना आदि ने अर्चना की रचनाओं पर अपनी प्रशंसात्मक राय दी है। डॉ. कमलेश द्विवेदी के शब्दों में- 'अर्चना पांडा की कविताओं को मैंने अब तक जितना जाना और समझा है, उसके आधार पर कह सकता हूं कि भारत के बाहर रहकर अपनी कलम के माध्यम से हिन्दी का परचम फहराने वालों की आज अगर कोई सूची बनायी जाये, तो अर्चना पांडा को शुमार किये बिना वो अधूरी ही रहेगी।'

कुल मिलाकर अर्चना पांडा की यह कृति प्रशंसनीय और पठनीय ही नहीं, संग्रहणीय भी है।

-- विजय कुमार सिंघल

काव्य संग्रह - तुम्हारी अर्चना
रचनाकार- अर्चना पांडा
प्रकाशक- अयन प्रकाशन, नई दिल्ली
पृष्ठ संख्या-१३६, मूल्य-रु. २८०

मुझको भी आजादी चाहिए

सुरेखा शर्मा

'देखो-देखो दादी! इसके कोमल-कोमल पंख, छोटी-सी चोंच। देखो ना दादी, क्या आप नाराज हैं मुझसे?' समीर ने अपनी दादी से कहा।

'हां नाराज हूं. कितनी बार तुझे मना किया है कि पक्षियों को इस तरह मत पकड़ा कर। इन्हें उड़ना अच्छा लगता है। भगवान ने इनको पंख इसीलिए दिए हैं।'

'दादी, पर मैं तो इनका बहुत ध्यान रखता हूं! देखिए ना! कितनी सुन्दर छोटी-सी कटोरी में दाना भी है और पानी भी।'समीर ने कटोरी दिखाते हुए कहा।

'समीर बेटा मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ?' चिन्ता करते हुए दादी ने कहा। समीर को पक्षियों से बहुत प्यार था, पर उसके प्यार करने के तरीके से उसकी दादी बहुत दुखी रहती थी। वह कभी चिड़िया, कभी कबूतर, तो कभी तोते पकड़ कर पिंजरे में बंद कर देता था, लेकिन आज समीर ने जो गोरैया पकड़ी थी वह बहुत छोटी थी इसलिए पकड़ते समय जाल के तारों में अटककर जख्मी हो गयी थी। समीर ने उसके जख्मों पर मरहम लगाया और पिंजरे में दाना-पानी रख दिया ताकि जब उसे भूख प्यास लगे, तो वह कुछ दाना चुग ले और पिंजरे को बन्द कर दिया। पर सुबह तक दाना-पानी वैसे का वैसा ही रखा रहा। चिड़िया की दशा देखकर ऐसा लगा जैसे उसने अनशन किया हुआ हो। समीर को यह देखकर बहुत गुस्सा आया।

पिंजरे के पास खड़ा होकर समीर बोला, लगता है तुमने खाने-पीने की हड़ताल की हुई है, देखता हूं कब तक नहीं खाओगी? पिंजरे को खोलकर वह अपने हाथ से दाना खिलाने लगा ,लेकिन ये क्या गोरैया ने तो अपना मुंह दूसरी ओर फेर लिया। जबरदस्ती खिलाने पर भी सब उलट दिया। भूख के कारण व जख्मी होने के कारण उसकी दशा दयनीय हो गयी थी।

दादी ने समीर को एक बार फिर समझाते हुए कहा, 'समीर तुम्हें किसी की आजादी छिनने का कोई हक नहीं। जब हम सभी अपनी मरजी से जीना चाहते हैं तो पशु-पक्षी क्यों गुलाम रहना चाहेंगे। चाहे उन्हें कितने भी सुख, आराम, स्वादिष्ट खाना-पीना क्यों न मिले। पर वो सब छोड़ कर आजाद रहना चाहेगा चाहे पशु पक्षी ही क्यों न हो।'

कुछ सोचते हुए दादी पुनः बोली, 'समीर तुम्हें पता है हमने कितने वर्षों तक गुलामी झेली है? स्वतंत्रता की हवा में सांस लेने के लिए न जाने कितने भारतीय वीर जवानों ने अपनी जान की बाजी लगा दी थी, फांसी के फन्दों पर झूल गये थे। आज हम इस खुली हवा में जो सांस ले रहे हैं ना वह सब हमारे जवानों एवं पुरखों की वजह से? उन्होंने कितने अत्याचार सहे। उनकी देशभक्ति व जोश देखकर ही फिरंगियों को हमारा देश छोडकर जाना पड़ा। इसलिये तुम भी सारे पिंजरे खोलो और पंछियों को आजाद कर दो।'

समीर ने दादी की बातों को अनसुना किया और पिंजरे में नया दाना-पानी रख कर स्कूल चला गया। पर सारा दिन स्कूल में उसका मन नहीं लगा। बार- बार जख्मी चिड़िया का धयान आता रहा वह सोचता रहा कि पिंजरे में रहना चिड़िया को क्यों नहीं अच्छा लगता, जबकि उसे बिना मेहनत के दाना-पानी सब मिल रहा है? वह जल्दी-से-जल्दी घर जाना चाहता था, पर छुट्टी से पहले तो नहीं जा सकता था। वह बेंच पर बैठे-बैठे ऊंघने लगा और मेज पर सिर टिका लिया। पता ही नहीं चला वह कब गहरी नींद में सो गया कि छुट्टी की घंटी सुनाई ही नहीं दी। क्लास के कुछ शरारती बच्चों ने परेशान करने के लिए कुछ देर के लिए बाहर से दरवाजा बन्द कर दिया।

लेकिन खेल खेल में खोलना भूल गये और सभी अपने-अपने घर चले गये। थोड़ी देर के पश्चात् समीर की जब आंख खुली, तो देखा कहीं कोई हलचल नहीं, वह घबराकर दरवाजे की ओर भागा, पर यह क्या? दरवाजा तो बाहर से बन्द था। अब क्या करे? सहायता के लिए जोर-जोर से चिल्लाने लगा, पर वहाँ उसकी सहायता करने वाला कोई नहीं था। वह खिड़की खोल कर रोता और चिल्लाता रहा।

घबराहट के कारण उसका गला भी सूखने लगा था। तभी उसे स्कूल का चपरासी मेन गेट बन्द करते हुए दिखाई दिया। समीर ने पूरी ताकत लगा कर आवाज लगाई। आवाज सुनकर चपरासी दौड़कर आया और दरवाजा खोलकर बाहर निकाला। वह कुछ पूछता इससे पहले ही उसने अपना बैग उठाया और घर की ओर दौड़ पड़ा। वह जल्दी-से-जल्दी घर पहुंचना चाहता था। उसे अहसास हो गया था कि सभी को आजादी क्यों प्यारी है। कैद भरी जिन्दगी कितनी डरावनी है।

घर पहुंचते ही बिना क्षण गंवाए उसने छोटी चिड़िया के पिंजरे को खोला। चिड़िया को बाहर निकालकर प्यार से सहलाया, घाव पर मरहम लगाया तत्पश्चात खुले में छोड़ दिया।खुली हवा में सांस लेते ही चिड़िया की आंखों में चमक आ गयी। उसने एक के बाद एक सारे पिंजरे खोल दिए। माफी मांगते हुए बोला, 'मुझे माफ कर दो, आजादी क्या होती है? उसकी क्या कीमत है?मुझे आज पता चल गया।अब मै कभी भी किसी पक्षी को पिंजरे में कैद नहीं करुंगा।' तोता व कबूतर भी उड़कर मुंडेर पर जाकर बैठ गये और कुछ देर बाद दोनों पंछियों ने ऊंची उडान भर ली।

तोते और कबूतर को उड़ते देखकर समीर की आंखें खुशी से नम हो गयीं। यह देखकर दादी ने समीर

(शेष पृष्ठ २२ पर)

स्टेशन पर खडी थी ट्रेन, मुसाफिर से कितना प्रेम
लचक-लचक बल खाती ट्रेन, चल दी प्यारी-प्यारी ट्रेन
चिंटू-पिंटू बैठ गये हैं, देख के रंग-रंगीली ट्रेन
पटरी पर चलती है ट्रेन, कौतूहल भर देती रेल
धीरे-धीरे रेंग रही है, कैसी रंग- रंगीली ट्रेन
काले-काले कपड़ों मे, आया टिकट कलेक्टर
चिंटू-पिंटू टिकट दिखाये, बोला टिकट कलेक्टर,
टिकट जेब मे रख लो बच्चो, इसको आप सहेज
चिंटू-पिंटू मन मुस्काये, मोबाईल टी. सी दिखलाये
इसके अंदर टिकट कैद है, देख लो टी सी बाबू
स्टेशन से चल दी ट्रेन
धीरे -धीरे प्यारी ट्रेन
हौले- हौले बल खाती
आया अगला स्टेशन
कौतूहल मन में है छाया,
कब आयेगा अपना स्टेशन

-- राजकिशोर मिश्र

बच्चे होते भोले भाले, अपनों में रहते मतवाले
कभी खुशी मे झुम उठ उठते, कभी गुस्से में फूट पड़ते
न ही किसी का डर उन्हें, न ही किसी का रहता भय
जो भी मन में आए उन्हें, करते है शीघ्र पूरा उसे
खेल-कूद में रहते आगे
पढाई में भी पीछे न हटते
सबसे वो बाजी लगाते
पूरा करने में आगे रहते
बड़ों को भी सीख सिखाते
तोतली बोली से सबको भाते

-- निवेदिता चतुर्वेदी

शिशु गीत

१. नाना

नाना आते लिए मिठाई, देते हमको चाकलेट
लेकर जाते संग घुमाने, और दिलाते टॉय जेट

२. नानी

नानी करती बातें खूब, तनिक न होने देती ऊब
हमको प्यारे उसके लड्डू, जैसे खरगोशों को दूब

३. मौसी

मौसी तो हम सबको प्यारी, आती बन खुशियों की क्यारी
लूडो-कैरम, चेस खेलकर, हमें कराती मस्ती सारी

४. बड़े मामा

बात बड़े मामा की क्या जी, कहते रहते खाओ भाजी
पढ़ने को बोलें सारा दिन, उनको तो अपनी है ना जी

५. छोटे मामा

छोटे मामा साथी मेरे,
हम रहते हैं उनको घेरे
बिठा बाइक पे हमें घुमाते,
माल दिखाते शाम-सवेरे

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

बाल कहानी

विद्या का दान

नीरजा मेहता

बहुत समय पहले की बात है। दो सहेलियां थीं। एक का नाम रमा था और दूसरी का निशा। वे घनिष्ठ मित्र थीं। अपना सुख-दुःख, परेशानियाँ, अच्छाइयाँ सब एक दूसरे को बताती। एक दूसरे के सुख दुःख की साथी थीं। दाँत कटी रोटी जैसी उनकी मित्रता थी।बचपन से एक दूसरे के साथ खेलीं, एक ही कक्षा में पढ़ीं, एक ही विद्यालय में पढ़ीं। एक ही क लेज में दोनों ने दाखिला लिया। सभी उनकी मित्रता को देख हैरान थे। कालेज के कुछ मित्र उनकी मित्रता को देख जलते थे, उनकी मित्रता तोड़ने की कोशिश भी की लेकिन सब व्यर्थ।

रमा और निशा दोनों ही साधारण घर की थीं किन्तु रमा के मुकाबले निशा तीव्र बुद्धि की मेधावी छात्रा थी। हमेशा से निशा रमा को पढ़ाई में सहायता करती, खुद पढ़ती फिर उसको पढ़ाती। रमा के घर के लोग पढ़ाई को अधिक महत्व नहीं देते थे। उसकी माँ कहती, 'घर का काम सीख, ये पढ़ाई क्या काम आएगी। बस कालेज कर ले उसके बाद शादी करनी है।' रमा चिढ़ जाती और कहती, 'आपको हर समय घर का काम और शादी ही नजर आती है। मुझे निशा की तरह पढ़कर कुछ बनना है'। उसकी माँ रमा को घर के काम में उलझाये रहती लेकिन रमा पढ़ना चाहती थी, इसलिए जब भी समय मिलता झट से निशा के घर भाग जाती और वहाँ पढ़ाई करती। निशा के माता-पिता उसको पढ़ाई करने का पूरा समय देते क्योंकि वे पढ़ाई का महत्व समझते थे।

इस तरह दो साल बीत गए, दोनों कालेज के अंतिम वर्ष में पहुँच गयीं। जब परीक्षा पास आने लगी तो अचानक एक दिन रमा के पिता को दिल का दौरा पड़ गया। घर के लोग परेशान हो गए। अस्पताल में उनको भरती कराया गया। रमा घर और अस्पताल के चक्कर में ऐसी फँसी कि पढ़ने का वक्त ही नहीं मिला। रमा के पिता की तबियत में सुधार नहीं हुआ और परीक्षा सर पर आ गयी। रमा घबरा गयी कि अब क्या होगा। कालेज का अंतिम वर्ष कैसे पास करेगी। निशा ने समझाया धीरज रखो और हिम्मत मत हारो। मैं तुमको पढ़ा दूँगी।

परीक्षा प्रारम्भ हो गयी। निशा परीक्षा के दिनों में भी निरन्तर रमा को पढ़ाती रही। दोनों ने परीक्षा दी। इधर रमा के पिता भी ठीक होकर घर आ गये। कुछ महीनों के बाद परीक्षा का परिणाम निकला। रमा पास हो गयी और निशा पूरे कालेज में अव्वल आई। निशा के घर बधाइयों का ताँता लग गया। अखबार वाले, टी.वी. वाले सब जगह निशा की प्रशंसा के पुल बंधने लगे। कालेज में जब अखबारवाले निशा का साक्षात्कार लेने आये तो उन्होंने निशा से पूछा, 'आपकी सफलता का राज क्या है?' तो निशा ने उत्तर दिया, 'इसका श्रेय मेरी सखी रमा को जाता है क्योंकि उसको पढ़ाते पढ़ाते मेरी पुनरावृत्ति इतनी अच्छी तरह हुई कि मेरी सभी समस्याओं का निदान तो हुआ ही साथ ही मेरे मस्तिष्क में पढ़ा हुआ घर कर गया।'

अंत में निशा ने कहा, 'ये सच ही कहा गया है कि विद्या वो अनोखा धन है जो खर्च करने से और बाँटने से बढ़ता है तथा न बाँटने से नष्ट हो जाता है।' ■

बाल कविताएँ

पेड़ हमारे सच्चे साथी, माता-पिता गुरु जैसे हैं
इनसे ही दुनिया में जीवन, इनसे भी सच्चे रिश्ते हैं
इस रक्षा बंधन पर आओ, इनसे रिश्ता नया बना दें
पेड़ हमें भोजन देते हैं, पेड़ हमें देते औषधियाँ
ताजी हवा इन्हीं से मिलती, हरी-भरी जब रहती बगिया
जो हमको जीवन देते हैं, क्या हम उनका जीवन लेंगे?
उनके पर-उपकार के बदले, क्या हम उनको कटने देंगे?
धागा बांध सभी प्रण कर लें, हरा पेड़ हम कभी न काटें

जैसे महका नन्दन कानन, अपनी दुनिया, अपना बचपन
गिरते-उठते, फिर गिर पड़ते, डगमग-डगमग चलते रहते
संभल-संभलकर बढ़ता जीवन, अपनी दुनिया, अपना बचपन
सारे घर में पा पा मा मा, जीवन की धुन सा.रे.गा.मा
पग-पग नाचा, थिरका आँगन
अपनी दुनिया, अपना बचपन
कली-कली खिलता शरमाता
फूल-फूल हँसता-मुस्काता
महका-महका घर का उपवन
अपनी दुनिया, अपना बचपन

-- अरविंद कुमार साहू

(पृष्ठ २१ का शेष) **बालकहानी : आजादी**

को गले लगाया और प्यार करते हुए आशीर्वाद की बौछार कर दी। समीर को आज दादी की कही बातों का सही अर्थ समझ आ गया था कि 'स्वतंत्रता हमारा जनमसिद्ध अधिकार है।' किसी को भी गुलाम बनाने का कोई हक नहीं है। दादी बोली, 'तुलसीदास जी ने भी कहा है 'पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं।' समीर खुशी से दादी के गले लग गया।

हास्य व्यंग्य

पति पत्नी में एक रोचक संवाद

डा. मनोहर लाल भंडारी

'अजी सुनती हो.'

'बोलो ना, बोलते क्यों नहीं, चुप क्यों हो?'

'तुम दो मिनट वाली नूडल्स बनाती हो, डिब्बाबंद, जंकफूड और फास्टफूड मुन्ने को खिलाती हो, आखिर समय बचाकर क्या करोगी ?'

'तुम कैसे बैंक मैनेजर हो, इतना भी नहीं जानते?'

'भला, इसमें मेरी मैनेजरी कहां से आ गई ?'

'अरे बचत किसलिए की जाती है, इतना तो तुम्हें पता होना चाहिए, मेरी मां ने सही कहा था कि तेरा शौहर है तो बुद्धिमान पर थोडा स्लो है.'

(गुस्सा होते हुए) 'यार, ऐसी टान्टिंग मत करो, सीधी बात बताओ.'

'चलो बाबा, बताती हूं, देखो समय बचेगा तो भविष्य में काम आएगा. ये नूडल्स, फास्टफूड, डिब्बाबंद फूड खिलाएंगे तो मुन्ने को लेड पायजनिंग होगी, मुन्ना बीमार पड़ेगा, अस्पताल ले जाना होगा, डाक्टरों के चक्कर लगाने पड़ेंगे, भर्ती भी कराना पड़ेगा ना, यह समय तब बहुत काम आएगा, समझें कि नहीं ?'

'अरे हां डार्लिंग, वाकई तुम कितनी समझदार हो गयी हो.'

'अब सही पकड़े हो, मेरी मां ने बोर्नविटा, काम्प्लान और न जाने क्या-क्या नहीं दिया है, मुझे बचपन में...'

'यू एंड योर मदर आर ग्रेट डार्लिंग.'

'सच्ची ?'

'हां बिल्कुल सच्ची मुच्ची'

'तो फिर मेरे गिफ्ट ?'

'तुम्हें कल ही माइक्रोवेव ओवन गिफ्ट करता हूं!'

'वाव, फिर समय की बचत ! फिर मुन्ने को कैंसर, अस्पतालों के लिए टाइम ही टाइम, कुछ भी कहो तुम पर मेरा असर अब आने लगा है.' ■

जेनेटिक इफेक्ट

सबने बहुत समझाया लेकिन झक्कू भाई न माने और उस पाकिस्तानी लड़की फसीना से शादी कर ही ली। सबकुछ खुशी-खुशी चल रहा था। सालभर बाद उनके घर एक चाँद से बेटे ने जन्म लिया। जब वो स्कूल जाने लगा तो एकदिन झक्कू भाई अपने दरवाजे पर उदास बैठे मिले। पड़ोसी ने पूछा- 'क्या झक्कू, सब ठीक है न?'

झक्कू बोला- 'हाँ भैया, अच्छा ही है, बस बेटे के कारण जरा सा परेशान हूँ। वो जब भी हमसे नाराज होता है, तो अपने घर के किसी कोने में सुतली बम फोड़ आता है।'

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

जो मजा बुद्धूजीवी होने में है, वो बुद्धिजीवी होने में कहाँ!

अरुण कांत शुक्ला

आज जब मैं तिवारी पान पेलेस पहुंचा तो सब कुछ बदला बदला नजर आया। सबसे पहले तो साईन बोर्ड पर निगाह गयी, वहां पान पेलेस की जगह पान मंदिर था। जहां पहले पेट निकाले एक बूढ़ा आदमी बैठे रहता था, वहां हनुमान जी की फोटो थी। हमने पूछा कि 'कैसन तिवारी जी रातों-रात ये परिवर्तन कैसे?' तिवारी जी बोले, 'ऐसन है कि जैसा देश वैसा भेष।' हमने कहा कि तिवारी जी देश में तो ऐसा कोई बदलाव नहीं आया है कि आप अपना भेष बदल लें? तिवारी जी बोले बस यही तो फरक है बुद्धिजीवियों और बुद्धूजीवियों में। बुद्धिजीवी बदलाव को तुरंत भांप जाते हैं और बदल जाते हैं। बुद्धूजीवी लकीर के फकीर बने रहते हैं।

तिवारी जी की दूकान भी बड़ी नजर आ रही थी। हमने कहा कि जब फुरसत मिले तो अच्छे से समझाना। तिवारी जी बोले- 'ऐसन है सुकुल महाराज चेहरा बदल जाने से न तो फितरत बदलती है और न ही दूकान का सामान बदलता है और सबसे बड़ी बात ग्राहक भी नहीं बदलते। बस कुछ भोले-भाले लोग दुकान के नए कलेवर में फंस कर कुछ समय के लिए आ जाते हैं। अब इसी में जितना कमाना हो कमा लो नहीं तो दुकानदारी तो पुराने ढर्रे पर वापस आयेगी ही। चलिए, हम आपको समझाते हैं।' इतना कहकर तिवारी जी ने बाजू की फल की दूकान के पिछवाड़े बिछी खाट पर चलने का इशारा किया। हम तो तिवारी जी की बुद्धिजीवता के ठीक उसी तरह कायल थे, जिस तरह आज माने-जाने वाले शिक्षाविद मानव संसाधन मंत्री की प्रतिभा के कायल हैं, सो बिना न नुकुर उनकी बगल में जाकर बैठ गए। तिवारी जी बोले- कल से नई राजधानी के पुरखोनी मुक्तांगन में राज्य सरकार का साहित्य सम्मेलन शुरू हो रहा है, आपको बुलाया है?

वैसे तो इतना सुनने के बाद हमको बहुत शर्म आनी चाहिए थी, पर न जाने क्यों हम उस समय बिलकुल बेशर्म हो गए। हमने कहा तिवारी जी, हमें क्यों बुलायेंगे? जब सरकारी नसबंदी में औरतें मर रही हैं, बच्चे अस्पताल में मर रहे हैं, सरकार वायदा करने के बाद भी किसानों का अनाज नहीं खरीद रही है, माओवादी सुरक्षा कर्मियों को मार रहे हैं, बस्तर में मलेरिया से देश के लिए जान देने वाले मर रहे हैं, स्कूलों में छोटे बच्चों के साथ बलात्कार हो रहा है, नकली दवाईयां लोगों की जान ले रही है, तब हम सरकार का विरोध करेंगे या सरकारी सम्मेलन में शामिल होयेंगे। हम तो सरकार का विरोध कर रहे हैं। सरकार हमें क्यों बुलायेगी और हमें बुलाती तो भी हम क्यों जाते?

तिवारी जी ने हमें बहुत ही दयनीय नजरों से देखा। बोले, 'सुकुल महाराज, आप उत्तेजित हो गए। प्रेक्टिकल होईये। आपने किसी बुद्धिजीवी को कंगाल देखा है?' तिवारी जी अकसर हमें चक्कर में डालकर मुस्कराते थे, फिर मुस्कराने लगे, एकदम वही मुस्कराहट, 'बचवा, पान की दूकान नहीं चलावत, दुनिया को बैठकर देखत हैं!' सच है, हम चकरा गए थे। हमने लेखक, कवि, शायर, नाटककार, कलाकार, यहाँ तक कि किसी किसी पत्रकार को भी कंगाल देखा था, पर किसी बुद्धिजीवी को कंगाल नहीं देखा था।

तिवारी जी फिर बोले, 'सुकुल महाराज अब यह बताव, पैसा कहाँ से आवत है?' यह दूसरी बार चक्कर देने वाली बात थी। पर, हम भी कम चतुर नहीं थे। हमने कहा, 'पैसा तो तिवारी जी मेहनत से ही आता है।' तिवारी जी ने बस हो हो नहीं किया पर हंसे उसी अंदाज में। बोले, 'फिर तो हम्माल को सबसे ज्यादा अमीर होना चाहिए। आप भी कल से गल्ला मंडी में लग जाओ, पीठ पर बोरे ढोते-ढोते थोड़े दिन में अमीर हो जाओगे।'

तिवारी जी ने हमें समझाया, मेहनत की कमाई से ठाठ नहीं होते, पत्रिका हो, चैनल हो या कंपनी हो, चलती तभी है जब सरकारी पैसा मिलता है। और इसमें लिखने वाले, काम करने वाले ठीक-ठाक अमीर जैसे दिखने वाले तभी बनते हैं, जब सरकारी पैसा मिलता है। हमारी आँखों के सामने हमारे मित्रों के द्वारा चालू की गईं वे सभी पत्रिकाएं घूमने लगीं, जो सरकारी विज्ञापन के अभाव में न केवल बेमौत मर गईं थीं, पर, अपने साथ चालू करने वालों को भी मरा जैसा छोड़ गईं थीं। तिवारी जी ने जेब से साहित्य सम्मेलन का आमन्त्रण पत्र निकाला और बोले 'इनमें से एक का भी नाम बताईये, जो कंगाल हो, सरकार का विरोध करता हो, और उसे बुलाया गया हो।'

तिवारी जी मुस्कराए और बोले, सुकुल महाराज जो मजा बुद्धूजीवी होने में है, वो बुद्धिजीवी होने में कहाँ! अब हम ठहरीन व्यापारी। अब व्यापारी बुद्धूजीवी तो होते नहीं, इसलिए साईन बोर्ड बदल डारेन हैं। बाकी अन्दर माल सब वही है। अब ऐसन है महाराज, सरकार बदली है तो तरकीब तो बदलनी पड़ेगी न!' ■

(पृष्ठ १३ का शेष)

कहानी : समाजसेवा

अखबारों के प्रतिनिधि आ रहे है. फ्रंट पेज पर अपनी तस्वीर की बात है. आनाकानी मत करना. इस तरह के कार्यक्रमों के अवसर के लिए लोग मुंह बाए रहते हैं, तुझे इसलिए बताया कि तू मेरी इतनी अच्छी दोस्त है. अच्छा बहुत अरेंजमेंट्स बाकी हैं. तू रेडी रहना, पिक कर लूंगी.' एहसान जताती हुए मेरी सहेली ने मेरा जवाब सुनने से पहले ही फोन काट दिया।

क्या कहुं, कैसे कहुं उससे कि मुझे उस भीड़ का हिस्सा नहीं बनना, जिसकी प्राथमिकता भलाई नहीं अपने आप का प्रदर्शन है, भलाई एक सुनियोजित प्रक्रिया नहीं है. वो तो तत्क्षण की बात है जिसके मौके बनाने नही पड़ते. ईश्वर ये मौके देता है बस हमें उस अवसर को पहचानना चाहिए और स्वयं को ऊपरवाले का दूत समझ धन्यवाद देना चाहिए. पर यहां तो मकसद दीन दुखियों की पीड़ा, उनकी मलिनता पर अपने आपको चमकाना है, दुसरों के दुख महसूस करने उनके बारे में सोचने, उन्हे न्याय दिलाने जैसी बातों का ढोंग करने वाली ये औरतें अपनों के साथ क्या न्याय कर पाती है. इसका भी लेखा जोखा नहीं होता उनके पास. बस दिशाहीनों की एक भीड़ जमा करके अपने अमूल्य जीवन की सार्थकता ढूंढने का प्रयत्न करना ही इनका मकसद बन जाता है. दान-पुण्य की बातें करने वाली ये नारियां उसका मतलब समझ पाती तब तो..कहते है दाएं हाथ से दो तो बाईं को भी ना पता चले.. ढोल-नगाड़े पीट कर दान करना किस श्रेणी में आता है सर्वथा अनभिज्ञ हुं.

खैर मन मार कर दोस्ती की गरिमा तो निभानी ही थी, तय समय पर रविवार को वंदना आ गई. दलित बस्ती की रोड कच्ची थी सो बाहर ही गाड़ियां रोक दी गईं, कुछ पुरूष कार्यकर्ता सामान उतारने लगे. तभी वहां से बच्चों की एक टोली गुजरी. कुपोषित से दिखते, नग्न-अर्धनग्न उन बच्चों की निगाह बिस्किट के कार्टन पर जा टिकी. वो वंदना की सक्रियता देख उससे जाकर लटकने लगे. वो उन्हे लगातार झिड़कती जा रही थी. तो मैं बोल पड़ी 'अरे इन्हीं की खातिर है ना, दे भी दे.'

इस पर वो आंख तरेर कर बोलीं 'और आयोजन का क्या. ना न्यूज बनेगी, ना कवरेज होगी. तो आने का क्या फायदा?'

मैं तो हतप्रभ रह गई. बच्चे मुझे अपना मसीहा मान मुझसे से लटकने लगे. मन में दृढ निश्चय कर मैं उनको लिये एक ग्रोसरी स्टोर की ओर बढ गई. वंदना पीछे से चिल्लाती रही. हर बच्चे की हाथ में बिस्किट की पैकेट थमा कर बदले में खजाना पाने की खुशी सी मुस्कान मन को जितने सुकून और संतोष से मन भर गई, उतना अपने लिए मन भर शापिंग करने के बाद भी कभी हासिल नहीं कर पाई थी. अंतस तक अह्लादित हो गई मैं तो. बगल की दुकान पर रेडियो पे आते गाने ने तो तृप्ति के भावों को लब पर भी बिखेर दिया-

घर से मस्जिद है बहुत दूर चलो यूं कर लें
किसी रोते हुए बच्चे को हंसाया जाए। ■

(पृष्ठ १८ का शेष)

पढ़े-लिखे अंधभक्त

बाबाओं के दरवाजे पर माथा टेकते हुए पाता हूँ तो समझ नहीं पाता कि क्या वाकई इंसान के इतने उच्च पढ़े लिखे होने से कोई लाभ है? क्या वाकई शिक्षा मानव के मस्तिष्क को उन्नत बनाती है ?

निश्चय ही ऐसे पढ़े लिखे लोग जो बाबाओं और गुरुओं आदि के चक्कर में आ जाते हैं उनके परवरिश का वातावरण उनकी शिक्षा पर हावी रहता है। इसलिए शिक्षित होते हुए भी वे मानसिक रूप से कमजोर ही रहते हैं। ■

वैभवशाली भारत बनाने का सपना देखें युवा : सुनील बंसल

लखनऊ। वैभवशाली, शक्तिशाली व स्वाभिमानी भारत बनाने के लिए देश के युवाओं का आगे आना होगा। पूरी दुनिया का नेतृत्व करने वाला भारत बने, इसका स्वप्न भारत के युवाओं को देखना होगा, तभी भारत वैभवशाली भारत बन सकता है। युवाओं को आह्वान करते हुए कहा कि युवाओं को अपनी आवश्यकता के बजाय देश हित में अपना भविष्य बनाने पर विचार करना चाहिए।

उक्त बातें जियामऊ स्थित विश्व संवाद केन्द्र में अधीश स्मृति व्याख्यानमाला के अंतर्गत आयोजित 'राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान' विषयक संगोष्ठी में मुख्य अतिथि व भाजपा के प्रदेश संगठन महामंत्री सुनील बंसल ने युवाओं को सम्बोधित करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि हम सांस्कृतिक आधार पर भारत का निर्माण करना चाहते हैं। जैसा पहले भारत था, वैसा ही हम भारत बनाना चाहते हैं। इसके लिए युवाओं को मेरा देश-मेरा भविष्य, ऐसा विचारकर देशहित में कार्य करना होगा। जिस देश का युवा सिर्फ अपने भविष्य के बारे में सोचता है, वह देश कभी विकसित नहीं हो सकता। भारत के भविष्य का सपना युवाओं को देखना होगा।

श्री बंसल ने कहा इस देश के निर्माण में युवाओं के भूमिका अहम रही। जब भी देश पर कोई आपदाएं आयीं उसके समाधान के लिए युवा समुदाय उमड़ पड़ा, देश के प्रति जज्बा भी है, कुछ करने की तमन्ना भी है, लेकिन आज आवश्यकता है कि इस देश का युवा समेत सभी नागरिक सिर्फ आपदा व विपत्ति में नहीं, बल्कि अपने दैनिक जीवन में भी राष्ट्र प्रेम की भावना से कार्य करें।

भारत के अतीत पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि विविधता के बावजूद हमारे अन्दर राष्ट्रीयता थी। अपनी एक सांस्कृतिक विरासत थी। आज दुनिया वैश्विकरण की तरफ बढ़ रही है। इस परिस्थिति में भारत के सामने विकास के दो मापदण्ड हैं। एक हमारी पुरातन विरासत तो दूसरा है वैश्विकरण। इन दोनों परिस्थितियों पर विचार कर युगानुकूल विकास के मापदण्ड पर विचार करना होगा।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि आशुतोष भटनागर ने कहा कि राष्ट्र निर्माण में छोटे-छोटे कार्यो की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारत तभी विकसित होगा जब शासन सत्ता में बैठे लोग युवाओं को सामने रखकर योजनाएं बनायेंगे।

अधीश जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र प्रचार प्रमुख राजेन्द्र सक्सेना ने कहा कि विश्व संवाद केन्द्रों की योजना, रचना तथा विकास की दिशा अधीश जी की कल्पना का ही परिणाम है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डा. हरमेश चौहान ने कहा कि भारत के ज्ञान को दुनिया पाना चाहती है, लेकिन दुर्भाग्य है कि आज हम इसके लिए तैयार नहीं है। कार्यक्रम का संचालन गंगा सिंह तथा आभार ज्ञापन बृजनन्दन ने किया। कार्यक्रम में प्रमुख रुप से राजेन्द्र सक्सेना, अशोक सिन्हा, पंकज अग्रवाल, प्रान्त सम्पर्क प्रमुख विनोद, हृदय नारायण श्रीवास्तव, वीरेन्द्र पाण्डेय, राजकिशोर, राकेश त्रिपाठी समेत कई लोग उपस्थित रहे। ■

कार्टून -- काजल कुमार

फिर से लिखा जाएगा भारतीय सेना के युद्धों का इतिहास

नई दिल्ली। आने वाली पीढ़ी को भारतीय सेना तथा सशस्त्र बलों के अदम्य साहस और विजय अभियानों की गाथा सरल भाषा में समझाई जाएगी। इसके लिए केंद्र सरकार ने भारतीय सेना के युद्ध तथा शांति मिशनों के इतिहास को नए सिरे से लिखवाने की योजना बनाई है। सरकार चाहती है कि स्कूली शिक्षा में भारतीय सेना के बारे में अच्छी तरह से पढ़ाया जाए।

वर्ष २०२२ तक सेना के आपरेशन, मिशन और युद्धों से संबंधित कई कॉमिक बुकों और टेलीफिल्मों को रिलीज कर दिया जाएगा। इन्हें बनाने का कार्य एक सितंबर से शुरू होने जा रहा है। इसी दिन १९६५ में पाकिस्तान के साथ हुए युद्ध को ५० वर्ष पूरे हो रहे हैं।

भारतवर्ष की सेना के लिए प्रथम विश्व युद्ध पहली जंग था। इसके बाद द्वितीय विश्व युद्ध में भी भारतीय सेना अंग्रेजों की ओर से शामिल हो चुकी है। आजादी के बाद, एक बार चीन से युद्ध हो चुका है और पाकिस्तान ने कई बार भारतीय सेना से मुंह की खाई है।

भारतीय सेना और सशस्त्र बलों के इतिहास में आजादी के पहले तथा बाद के सभी युद्धक आपरेशनों तथा यूएन शांति मिशनों का उल्लेख किया जाएगा।

भारतीय सेनाओं ने सबसे ज्यादा युद्ध पाकिस्तानी फौज से किया है। १९७१ की ऐसी ही एक लड़ाई के बाद पाकिस्तान से टूटकर बांग्लादेश का उदय हुआ था तथा पाकिस्तानी फौज के ९३००० सैनिकों सहित जनरल आमिर एके 'टाइगर' नियाजी ने सरेंडर किया था।

इतिहास पुनर्लेखन में चीन के साथ हुए युद्ध को भी शामिल किया जाएगा तथा हैंडरसन ब्रुक्स की रिपोर्ट को इसमें शामिल किया जा सकता है। कारगिल युद्ध की २०वीं वर्षगांठ यानी २०१९ में नए सिरे से लिखे गए इतिहास की पहली कड़ी को जारी किया जाएगा।

इस प्रोजेक्ट से जुड़े ब्रिगेडियर स्तर के एक अधिकारी के अनुसार सारी जानकारी को आसान तथा पढ़े जा सकने वाले फारमेट में उपलब्ध कराया जाएगा। उल्लेखनीय है कि चार साल चले प्रथम विश्वयुद्ध में ९० लाख से ज्यादा लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी थी। वहीं ६२००० भारतीय सैनिक घायल हुए थे। ■

जय विजय मासिक

कार्यालय- ४/३, अक्षय निवास, २, सरोजिनी नायडू मार्ग, लखनऊ - २२६००१ (उ प्र)
मो 09919997596, 08004664748, ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com
वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in
सम्पादक- विजय कुमार सिंघल
सहसम्पादक- विभा रानी श्रीवास्तव, अरविंद कुमार साहू, रमा शर्मा (जापान)
'जय विजय' का नेट संस्करण ई-मेल से निःशुल्क भेजा जाता है। रचनाओं में व्यक्त किये गये विचार सम्बंधित रचनाकारों के हैं। उनसे सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।